CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

9.2

चतुर्मुख

प्रधान सम्पादक :

कुलदीपनारायण राय

'झड़प'

सह सम्पादक :

अनिलकुमार 'आंजनेय'

प्रवंध सम्पादक :

रामनगीना राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजीवन सदस्य (१०५ रुपये देने वाले)

श्री दंडी स्वामी विमलानन्द सरस्वती, राजगुरु मठ, शिवालाघाट, वाराणसी
„ पांडेय सूर्यनारायण शर्मा, भू० पू० विधायक, सिमरी, जि०-भोजपुर (बिहार)
„ रामनगीना राय, सोहाँव, बलिया (उ० प्र०)
„ कुलदीप नारायण राय 'झड़प' लिलकर, जि०-बलिया (उ० प्र०)
„ विश्वनाथ राय, स० अभियन्ता, मलसा, जि०—गाजीपुर „
„ भुवनेश्वरी राय, प्राचार्य, गाँधी इं० कालेज, सिकंदरपुर, बलिया
„ महाराज राय, अध्यापक „ „ „ „
„ महांत जनार्दनाचारी, कुढ़नी मठ, जि०—रोहतास (बिहार)
„ मुक्तेश्वर राय, अमावँ, डाकघर—भरौली, जि०—बलिया
„ धनंजय सिंह, कठौड़ा, जिला-बलिया
„ अनिल कुमार 'आंजनेय', उजियार, डा० कोरंटाडीह, बलिया
„ विजय बहादुर राय, प्राचार्य, साहुजैन उ० मा० विद्यालय, मीरगंज, जि०--सिवान (बिहार)
„ मधुमंगल राय, मगराँव, डा०--मगराँव-सगराँव, जिला०—भोजपुर (बिहार)
„ दामोदर राय, प्रवक्ता, इन्टर कालेज, मलसा, गाजीपुर (उ० प्र०)
„ भृगुनाथ राय, प्राचार्य, सेवासंघ इं० कालेज, सोहाँव, बलिया
„ रामेश्वर राय, सहायक अभियंता, चकिया, वाराणसी
„ विभूति नारायण राय, अधिवक्ता, रामरेखाघाट, बक्सर, भोजपुर
„ महांत रघुनाथ गिरि, बोकसा, भोजपुर
„ कवीन्द्रराय, लिलकर, बलिया
„ फौजदार राय, एडवोकेट; १० जवाहर लाल नेहरू रोड, इलाहाबाद
„ रामचीज सिंह, बासदेवपुर; कोइलरी, पो० कुसुण्डा, जिला—धनबाद
„ रामजी राय, १४ बी काशीपुर रोड, कलकत्ता—२
„ शिवकुमार राय, ७६/१ काशीनाथ दत्तो रोड, कलकत्ता—३६
„ पवन कुमार मोदी, सुपर स्टील्स सेल्स कंपनी, ३२, नेताजी सुभाषरोड कलकत्ता--१
„ भगवान सिंह, वेलफेयर अफसर, ऐंगलो इंडिया जूट मिल्स कं० लि० पो०—जगदल, जि०—चौबीस परगना (पं० बं०)
„ भोला तिवारी, १००/४ काशीपुर रोड, कलकत्ता--२
„ शंकरनाथ राय, ३४४/५ नेताजी सुभाष चंद्र बोस रोड, कलकत्ता—४७
„ रमेश चंद्र राय; काशीपुर, के० सी० रोड, कलकत्ता--२
„ रामजन्म राय, विधायक उ० प्र०, जगतगंज, वाराणसी
„ सदानन्द राय, सरेजा, जि०-भोजपुर
„ ठाकुरराम विश्वनाथ प्रसाद, वस्त्रव्यवसायी, बक्सर (बिहार)
„ प्रमोदा राय, सभापति; ग्राम-समाज, लिलकर, बलिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चतुर्मुख

(आश्विन सं० २०३१ वि०, वर्ष १२, अंक ३)

प्रधान सम्पादक :
कुलदीपनरायण राय
'झड़प'

सह सम्पादक :
अनिलकुमार 'आंजनेय'

वैदिक राष्ट्र-गान

ऊँ आ ब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रह्म वर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽति व्याधी महारथोजायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरंध्नि र्योषाः। जिष्णु रथेष्टाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्। योग क्षेमो नः कल्पताम्॥ यजुः २२/२२

●

यह हमारा देश संपूर्ण संसार के देशों में अनोखा, सब साधनों से युक्त और समुन्नत है। इस देश में ब्रह्मतेज से युक्त और संयमी विद्वान ब्राह्मण हों। लक्ष्य का भेदन करने वाले धनुर्धर महारथी शूर-वीर क्षत्रिय हों। यहाँ की गायें सदा दूध की नदियाँ बहाती रहें। अधिक बोझ उठानेवाले बलवान् बैल और हवा से होड़ लेने वाले शीघ्र-गामी घोड़े हों। सद्‌गुणवती, बुद्धिमती—सती; साध्वी नारियां हों जिनका सर्वत्र गुणगान हो। सब युवक शूरवीर, यज्ञ (समाज-हित) में निरत, पुण्यात्मा, सौम्य, सभ्य, सरल सुशिक्षित और विचारवान हों जिनसे भावी राष्ट्र को अवलंबन मिले। आवश्यकतानुसार समय-समय पर मेघ वर्षा करें। फलफूल-अन्न का समयानुसार उत्पादन हो। हमारा योग—क्षेम स्वतः सिद्ध हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संरक्षक :
श्री रामगोपाल गड़ोदिया
६ डी, शार्टस्ट्रीट, कलकत्ता—१६

स्वामित्व :
कुलदीपनारायण राय 'झड़प'
लिलकर, सिकन्दरपुर
बलिया (उ० प्र०)

प्रबंध संपादक :
रामनगीना राय

संपादक मण्डल :
स्वामी विमलानंद सरस्वती
पांडेय सूर्यनारायण शर्मा
डा० विवेकी राय
अविनाशचन्द्र विद्यार्थी

परामर्शदाता :
आचार्य पं० बनारसी दास चतुर्वेदी
सहित्य वारिधि बाबू वृंदावन दास
पांडेय नर्मदेश्वर सहाय
श्री रामवली पाण्डेय
श्री गणेश चौबे (भोजपुरी)
डा० राजेन्द्र रंजन (ब्रजी)
श्री रामरीझन रसूलपुरी (वज्जिका)
श्री नरेश पांडेय 'चकोर' (अंगिका)
श्री संत रामनगीना सिंह 'मगहिया'
श्री उमाशंकर शुक्ल 'उमेश' (अवधी)
श्री गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' (बुन्देलखंडी)
डा० रामस्वरूप आर्य (खड़ी बोली)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

कवि—आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा ५
संपादक जी के दो मित्र—डा० हरिदत्त शास्त्री ६
गजल—मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश' १०
आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा की मंडली और भोजपुरी—
पं० रासविहारी राय शर्मा ११
सुदिन मनावे द (कविता)—अविनाश चंद्र विद्यार्थी १६
आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा और विहारी-सतसई का तुलनात्मक अध्ययन—
डा० मलखान सिंह १७
श्री स्वामी सहजानंद सरस्वती का एक पत्र पं० पद्मसिंह शर्मा के नाम २१
माथा के नगरिया (कविता)—किशोरी शरण २२
भारत की भावी पत्रकारिता—पं० वनारसीदास चतुर्वेदी २३
हमारा राष्ट्र (कविता)—डा० जगदीश वाजपेयी २६
प्रो० श्री काजी अशरफ महमूद की तीन कवितायें २७
उत्तर प्रदेश : पूरब और पच्छिम—जंगवहादुर सिंह २९
मुसलमान शासकों की हिन्दी नीति—डा० शिवमंगल राय ३४
अँखियां से लोर झरल (कविता)—रमाशंकर राय ४८
तोड़ना है (कविता)-सत्यनारायण लाल ४९
यह वह देश महान् है (कविता)—उमाशंकर शुक्ल 'उमेश' ५०
व्यंजन विचार (व्याकरण)—डा० जितराम पाठक ५१
उजियार में काव्यानन्द की अजस्र वर्षा—भैरवनाथ पांडेय ५५
भोजपुरिया (कविता)—रामवचन सिंह यादव 'अँजोर' ५८
प्रथम भोजपुरी-साहित्य-सम्मेलन, सीवान-कुलदीप नारायण राय 'झड़प' ६०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचार्य पं० बनारसीदास चतुर्वेदी की ८३वीं जन्म-जयंती के अवसर पर
अभूतपूर्व कविगोष्ठी--शब्दानंद राय 'शब्द' ७५
शिवप्रसाद विद्यामंदिर बक्सर और उजियार में चतुर्वेदी जी की ८३वीं
वर्ष गाँठ---दर्शनानंद ७८
सम्पादकीय--
१—कलकत्ता-दर्शन ८२
२---संपादकाचार्य पं० बनारसीदास चतुर्वेदी की ८३वीं वर्षगांठ ८५

भूल-सुधार

१---गतांक 'आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा स्मृति अंक' के पृष्ठ १ पंक्ति १४ में पं० पद्मसिंह शर्मा की बाल्यावस्था का नाम डूँगर सिंह' छप गया है, होना चाहिए--'डाल चंद ।'

२---उसी अंक में पं० काशीनाथ शास्त्री का जीवन-वृत्त पृ० ३४-३५ पर छपा है, जिसमें उनकी वंश-परंपरा का निकास (डीह) हस्तग्राम (शरवार) बताया गया है, किन्तु श्री बेंचू पांडेय 'उग्र'की सूचनाके अनुसार वह होना चाहिये—अँटेर। यह स्थान आगरा से लगभग ४० मील पर विंध्य शृंखला में है।

उनका कहना है कि उनसे पं० काशीनाथ जीका वंशगत मौलिक संबंध है। दोनोंके पूर्वज एक ही थे, जो अंटेर पर मुसल्मानी आक्रमण होनेके कारण,उसे छोड़कर मीरजापुर जिलेमें आ बसे थे। फिर वहाँ से तीन भाई ताँते पांडेय, मृग पांडेय और गर्ग पांडेय बक्सर (बिहार) में आए। ताँते पांडेय के बंशज वहीं 'पांडेपट्टी' में हैं। मृग पांडेय और गर्ग पांडेय बक्सर से हटकर क्रमशः बलिया जनपद के बाँसडीह और रेवती में बस गए। मृग पांडेय के वंशज बाँसडीह, छाता और अन्दौर में तथा गर्ग पांडे के वंशज रेवती, दलछपरा और भाखर में हैं। पं० काशीनाथ जी मृग पांडेय की परंपरा में थे।

३—प्रस्तुत अंक के पृष्ठ २२ पंक्ति १२ में 'परिवार-नियोजन' के स्थान पर 'स्वास्थ्य-शिक्षा एवं सूचना, और पृष्ठ २६ की अंतिम पंक्ति में 'मुजफ्फरपुर' के स्थानपर 'मुजफ्फर नगर' होना चाहिए।

--सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि

"कवि भी प्रकृति-वाटिका का विकासक वसन्त है। वह प्रकृति के उन्हीं सूखे ठूंठ रूखों में अपनी प्रतिभा से अलौकिक रस-संचार करके कुछ से कुछ कर दिखाता है। कवि वसंत के किसी पुराने कविता-द्रुम में रस-ध्वनि के मधुर फल, किसी में अलंकार-ध्वनि के मनोहर पुष्प और किसी में वस्तुध्वनि के सुन्दर रूप-रंग का सन्निवेश करके सूखे से हरा और निर्जीव से सजीव बना देता है। किसी को शब्द-शक्ति के और किसी को अर्थ शक्ति के सहारे ऊपर उठा देता है। किसी को अर्थालंकार के चमत्कार से और किसी को शब्दालंकार के वैचित्र्य से आँखों में खुबने और चित्र में चुभने वाला कर दिखाता है।" (बिहारी सतसई पृष्ठ-२७)

"कवि के विषय में किसी विद्वान् का कथन है कि 'वह (कवि) प्रकृति का पुरोहित होता है।" जिस प्रकार पुरोहित के लिए यजमान के समस्त कुलाचारों और रीतिरवाजों का अंतरंग ज्ञान आवश्यक होता है, उसी प्रकार कवि को भी प्रकृति के रहस्यों का मर्मज्ञ होना उचित है। इसके बिना कवि, कवि नहीं हो सकता। कवि हो प्रकृतिके सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा ऐसी बातें चुन सकता है, जिन पर दूसरे मनुष्य की दृष्टि नहीं जाती, जाती भी है तो तह तक नहीं पहुँचती, तह तक पहुँच कर कोई ऐसी बात निकाल नहीं सकती कि जो साधारण प्रतीत होने पर भी असाधारण शिक्षा-प्रद हो, लौकिक होने पर भी अलौकिक आनंदोत्पादक हो और सैकड़ों बार देखी-भाली होने पर भी नवीन चमत्कार दिखाने वाली हो। प्रकृति के खुले और छिपे भेदों को सर्वसाधारण के सामने मनोहर रूप में प्रकट करना ही कवि का काम है। अज्ञेय मीमांसा करने बैठना, आकाश के तारे तोड़ना कवि का काम नहीं है। कभी-कभी कवि को ऐसा करना पड़ता है सही, पर वह मुख्यत: दार्शनिकों का काम है। कवि का काम इससे बहुत भिन्न है। केवल व्याकरण और छन्द शास्त्र के नियमों से अभिज्ञ होकर वर्ण; मात्रा, काँटे में नपी-तुली पद्य-रचना का काम कवित्व नहीं है, जैसा कि आजकल प्रायः समझा जाने लगा है।" आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा (बिहारी सतसई, पृष्ठ २१३-१४)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक जी के दो मित्र

डा० हरिदत्त शास्त्री, एम० ए०, पी० एच०डी०
कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय, सहारनपुर

(नोट—इस लेख में सम्पादक जी शब्द से पं० पद्म सिंह शर्मा का तथा 'पिता जी' शब्द से पं० भीमसेन जी शर्मा का ग्राह्य हैं।)

कविता-कामिनी-कान्त श्री पं० नाथूराम शकर शर्मा "शंकर"

शंकर जी का जन्म चैत्र शुक्ल ५ सं० १९१६ विक्रमी के दिन हरदुआगंज, जिला अलीगढ़ में एक गौड़ ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनका नाम कृष्णचन्द्र था। परन्तु इनके जन्म से पूर्व इनके कई भाई वहिन मर चुके थे। अतः अन्ध परम्परा अनुसार माता पिता ने इनकी नाक छिदा कर नथुआ (नाथूराम शंकर) नाम प्रदान किया। वड़े होने पर इन्होंने शंकर उपनाम धारण किया। शंकर जी के पिता का नाम श्री रूपराम शर्मा तथा माता का नाम जोविनी देवी था। पिता शाक्त मतानुयायी थे। १३ वर्ष की आयु में ही इन्होंने काव्य-रचना आरम्भ कर दी। पहले उर्दू में लिखना आरम्भ किया फिर हिन्दी में लिखने लगे। आपने सब ओवरसियर के पद पर कुछ वर्ष राजकीय सेवा भी की किन्तु स्वाभिमान का प्रश्न उपस्थित होने पर इससे त्यागपत्र दे दिया। पुनः अनूपशहर जाकर आयुर्वेद अध्ययन कर हरदुआगंज में ही चिकित्सा कार्य करके जीवन निर्वाह करने लगे। वैद्यक कार्य में आपको इतनी सफलता मिली कि लोग इन्हें पीयूष-पाणि कहने लगे। अब चिकित्सा करना और कविता लिखना शंकर जी के दो ही कार्य रह गये। कानपुर में उन्होंने ऋषि दयानंद के कई व्याख्यान भी सुने। अपने जीवन के दो सौभाग्यों का उल्लेख करते हुए वे प्रायः कहा करते थे कि उनके जीवन के दो ही प्रमुख फल हैं, एक तो ऋषि दयानन्द के दर्शन तथा उनके उपदेश श्रवण का लाभ। तथा द्वितीय कुछ तुकबन्दी कर लेना। ऋषि के व्याख्यानों का कवि पर इतना प्रभाव पड़ा कि वे अविलम्ब आर्यसमाज, कानपुर के सभासद वन गये यहीं पर आपने सुप्रसिद्ध आर्यसमाज विद्वान् पं० देवदत्त शास्त्री से संस्कृत का अध्ययन किया। हिन्दी के प्रसिद्ध निवन्धकार, पत्रकार तथा भारतेन्दु कालीन लेखक पं० प्रतापनारायण मिश्र से आपकी प्रगाढ़ मैत्री कानपुर प्रवास काल में हुई। सरस्वती-सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी इनका वड़ा सम्मान करते थे। आपकी रचनायें सरस्वती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अतिरिक्त फतहगढ़ से प्रकाशित होने वाले "कवि व चित्रकार" नामक लीथो में प्रकाशित होने वाले एक मासिक पत्र में भी छपती थीं। शंकर जी प्रवास भीरु थे। इसीलिए कई नरेशों के आमंत्रण एवं उत्सवों के निमंत्रणों पर भी आप अपने ग्राम को छोड़कर कहीं नहीं जाते थे। केवल एक बार ५ दिन के लिए छतरपुर रियासत में रुके और अमेठी के आर्यराज रणंजय सिंह जी तथा उनके भाई रणवीर सिंह जी के आग्रह पर वे दो दिन के लिए अमेठी भी गये। दिल्ली प्रवास के समय एक बार वे अपने नेत्रों की परीक्षा कराने सिविल अस्पताल के नेत्र विशेषज्ञ के पास गये। डाक्टर ने परीक्षा करने के उपरान्त बताया कि एक नेत्र तो ठीक हो सकता है, किन्तु दूसरे के ठीक होने की आशा नहीं है इस कथन पर आशुकवि शंकर जी के मुख से अनायास ही यह कविता निकल पड़ी।

बूढ़े शंकर से कहती है, हाथ जोड़ कविता बाला।
होकर सूर भजो केशव को, ले कर में तुलसी माला।

महाकवि का एक और मनोरंजक संस्मरण यहाँ लिखा जाता है। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' जी 'त्रिशूल' नाम से भी कवितायें लिखते थे, शंकर जी के ही शिष्य थे। एक बार ५१ रु० का खन्ना-पुरस्कार उक्त त्रिशूल कवि को मिला तो शंकर जी ने विनोद पूर्वक यह दोहा लिखा।

क्या शंकर कविता करे, क्या पावे उपहार।
इक्यावन तो ले गया, शंकर का हथियार।

आपने अपनी उत्कृष्ट कृति अनुरागरत्न हिन्दी के सुप्रसिद्ध समालोचक पं० पद्म सिंह शर्मा को समर्पित की। फरवरी १९२३ में काशी-निवासी देशभक्त बाबू शिवप्रसाद गुप्त जब विश्वभ्रमण को प्रस्थान करने लगे तो पं० पद्म सिंह शर्मा की प्रेरणा से उन्होंने शंकर जी के पुत्र पं० हरिशंकर शर्मा को अपने निजी सचिव के रूप में २५०-३०० रु० मासिक वेतन देकर अपने साथ यात्रा पर ले जाने का प्रस्ताव रक्खा। हरिशंकर जी के लिए इस प्रस्ताव का बहुत बड़ा मूल्य था क्योंकि मुफ्त में संसार भ्रमण के साथ-साथ अच्छा वेतन मिलने की बात थी। किन्तु महाकवि शंकर ने अपने पुत्र को आदेश दिया कि तुम 'आर्यमित्र' का सम्पादन करो जिसके लिए कुछ आर्य सज्जन बहुत दिनों से आग्रह कर रहे थे। यहां पर मासिक वेतन मात्र ८० रु० मासिक था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेद है कि महाकवि शंकर के काव्य का उचित मूल्याङ्कन हिन्दी के पक्षपात ग्रस्त समीक्षकों ने नहीं किया। उन्होंने शंकर की कविता को नीरस, शुष्क, सुधारबहुला तथा आर्य समाजी ढर्रे की कहकर उसकी उपेक्षा की।

समालोचक वर्ग ने चाहे कवि के प्रति उपेक्षा दिखाइ हो परन्तु उनकी कविता के यथार्थ गुणों के पारखी भी कम नहीं थे। राजा लक्ष्मण सिंह जैसे भारतेन्दु कालीन वयोवृद्ध साहित्यकार ने उन्हें 'भारतेप्रज्ञेन्दु' की उपाधि प्रदान की तो जगद्गुरु शंकराचार्य भारतीकृष्ण तीर्थ जी ने उन्हें 'कवि शिरोमणि' की उपाधि से अलंकृत किया। ज्वालापुर स्थित गुरुकुल महाविद्यालय को आर्य विद्वत्सभा ने उन्हें 'कविता-कामिनी-कान्त' की उपाधि प्रदान करते समय एक स्वर्ण पदक प्रदान किया जिस पर निम्नलिखित श्लोक अंकित था।

कविता कामिनी कान्तः श्री नाथूराम शङ्करः।
ज्वाला पुराये विदुषां सभया मान्यतेतराम्।

महाविद्यालय के ही गुरुवर पं० काशीनाथ शास्त्री ने शंकर को सरस्वती का अवतार वताते हुए निम्नलिखित श्लोक कहे।

शंकरं प्रणमन् काशीनाथोऽहं द्विजसत्तमः
काव्य दर्शन संजात चमत्कारो निवेदये।
नूनं 'सरस्वती' नाथूराम शंकर पण्डितः।
अन्यथा ईदृश पद्यानि को निर्मिमीत मानवः।

श्री सम्पादक जी और पिता जी *

सन् १६०५ में सम्पादक श्री पद्म सिंह जी और मेरे पिता जी का पत्र व्यवहार संस्कृत में चला। पिता जी ने एक लेख तथा एक कविता हिन्दी में पूर्त्ति कर उनके पास भेजी थी। इसके विषय में उनका गुरुकुल काँगड़ी से २०-११-१६०५ को भेजा गया एक पत्र इस प्रकार है।

ओ३म् गुरुकुल हरिद्वार / २०-११-०५

रसेन शून्येऽपि मदीय लेखे रसेन पूर्णोऽयमिति प्रतीतिम्।
करोति यः प्रेमरसः स कालत्रये भवच्चेतसि संचकास्तु ॥ १ ॥
ये निर्गुणेष्वेव गुणान् वदन्ति पश्यन्ति ते वाऽत्र जयन्ति सन्तः।
अवाप्त बाल्येऽपि वचस्तदीयं समञ्जसं भाति महाजनानाम् ॥ २ ॥

---

*श्री पं० भीमसेन जी शर्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वालभारतं प्रेष्यते, "षण्मासावधि त्वयान किंचिदावश्यकं विहाय शास्त्रादिकं चिन्तनीय मध्ये तव्यंवाऽन्यथा ते सूक्ष्म लिङ्ग शरीर दौर्बल्य समापत्त्या स्थूल शरीरेऽपि आघात. स्यात्तेन च सर्वा एव शक्तयो विशीर्णाः स्युरिति वैद्यवरेणादिष्टोऽस्मि। देहाध्यासवता च मया तथैवानुष्ठातुमारब्धम्।

श्रीमतां—भीमसेन शर्मा

श्री सम्पादक जी ने बालभारत नामक महाकाव्य पढ़ा। बालभारत महाभारत पर आधारित है। उसका पहला पद्य इस प्रकार है।

नलिने पुलिने च वामलूरे कृतजन्मा कविताऽवतारबीजम्।
अनपार्थ मनोवचोऽभिरामो मम कामोपचयं मुनिस्तनोतु।

उपर्युक्त पद्य में ब्रह्मा, व्यास और वाल्मीकि को वन्दना की गई है। इस बालभारत के पढ़ने के बाद एक पत्र में सम्पादक जी ने इस प्रकार दो पद्य लिखे थे।

मत्तात पादै रचिते प्रवन्धे निवेदिता नूतन रुक्ति रेषा।
अङ्गवां पूर्वमहो पवित्रं कथं न वा रासभ धर्म पत्न्या।

अर्थात् यदि गौ का शरीर मुख को छोड़ कर पवित्र माना जाता है तो चतुष्पाद होने से रासभ की धर्म-पत्नी का अर्थात् गधी का शरीर क्यों पवित्र नहीं माना जाता।

छयोऽभि माना दवमानना चेत् विधीयते फेरुजस्तरेण।
हेलाहतानेक करीन्द्रयूनो हरीन्द्रशूनोऽपि कास्तिहानिः।

इस पद्य में अभिमान की निन्दा की है कि दीर्घायु होने के कारण यदि गीदड़ शेर का अपमान करे तो यदि बलाभिमान से शेर का बध कर डाले तो हानि क्या है।

श्री सम्पादक जी ने जो समस्यायें पूर्ति करने को भेजी थी वे दो थीं। "धार है" और "कारी घटा"। इनकी पूर्ति अनेक प्रकार से का गई है किन्तु उनमें से पाठकों के मनोरंजन के लिए दो पद्य दिये जाते हैं।

आसन डोलि गयौ हरिको जिहि वान के आगे विरञ्चि असार है।
लै सङ्ग सैन अनङ्ग सोई यहि, अङ्ग में कीनी तरङ्ग बहार है।
छैल कहा गर्वीले फिरौ यहाँ, मारकी मार में सार अपार है।
ऐ हौ लला टुक चोट सम्हारि हौ, घूँघट ओट कटार की धार है।

❀ ❀ ❀

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्लीडर ते प्रभु है गये लीडर नाम और काम भयौ अपकार है।
मर्दिकै सज्जन लोक कतेक हतौ परलोक सुदम्भ अपार है।
पूत पलोसै सबै जग वञ्चिकै रञ्चिकै चाटु सिखायो सिकार है।
लूटि समाज उतारो उधार कहौ जू भलो यह कौन सुधार है।

सम्पादकजी का संस्कृत, उर्दू, हिन्दी तीनों ही भाषाओं पर पूर्ण अधिकार था जिसकी चर्चा फिर किसी अन्य लेख में का जायेगी।

(मगही)

गजल

मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश'

गइर के भी हम अप्पन हीत समझलीऽ
मुदई के मनमां के मीत समझलीऽ
काजेनी हमर काहे भेल ई सोभाव
ठकरइलो के तोहर पिरीत समझलीऽ
छहुरा आ घाम एही जीमन के नाम
अलग–अलग कहाँ मीठ–तीत समझलीऽ
गिर–गिर के होस होल, उठे के हिआव
हार के भी हम बड़गो जीत समझलीऽ
तोर हांथ के पीके जी उठलीऽ हम
हल भले जहर, हम अमरीत समझलीऽ
का कहूँ बोखारो में नीमन हे मन
जिनिगी में गम के हम गीत समझलीऽ

[द्वारा, श्री शारदा कुमार तिउरियार
खगौल रोड, यारपुर पटना–१]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा की मण्डली और

भोजपुरी

प० रास बिहारी राय शर्मा, एम० ए०, साहित्यरत्न

आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा उर्दू, फारसी और संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। खड़ी बोली हिन्दी तो उनके घर की नित्य व्यवहार की भाषा थी, किन्तु ब्रज भाषा काव्य के भी वे मर्मज्ञ विद्वान् थे। बाण की 'कादम्बरी' उन्हें सर्वाधिक प्रिय थी और ऐसा लगता था कि उन्हें यह महान गद्य काव्य अक्षरशः कण्ठस्थ हो। अपने हिन्दी साहित्य के समालोचनात्मक इतिहास में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भू० पू० संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० सूर्य कान्त शास्त्री ने शर्मा जी के बारे में लिखा था कि ख्यातनाम गुरुवर पं० पद्मसिंह शर्मा हिन्दी गगनाङ्गन के प्रचण्ड जाज्वल्यमान नक्षत्र होते हुये संस्कृत के महान् पण्डित थे। प्रचण्ड पाण्डित्य के साथ-साथ उनके हृदय की रसार्द्रता दूध-मिश्री का अपूर्व संयोग दिखलाती थी। उनकी मित्र मण्डली साहित्यिक दरबार के रूप में सदा विराजमान रहती थी। उनके मित्रों में पं० नाथूराम शंकर शर्मा एक जन्मजात महान् कवि थे। शर्मा जी अपने सुहृद कविवर पं० नाथूराम 'शंकर' 'कवि जो' के यहां हरदुआगंज जाकर स्वयं महानों रहा करते थे। कविजी भी अपने मित्र सम्पादक जी (पं० पद्मसिंह शर्मा) के पास डेरा डाले रहते थे। आचार्य पं० किशोरी दास वाजपेयी के अनुसार शंकर जैसा प्रतिभा शाली दूसरा कवि उस समय न था और न शायद अब तक हुआ भी।

हरदुआगंज के महाकवि शंकर ने स्वामी दयानन्द की प्रशंसा में लिखा था—

"जहां घोषणा गाम के नाम की है,
जहां कामना कृष्ण के काम की है,
अहिंसा जहां शुद्ध बौद्धार्य की है,
प्रशंसा जहां शंकराचार्य्य की है,
तहां दैव ने दिव्य योगी उतारे।
प्रतापी दयानन्द स्वामी हमारे॥

कवि जी एक बार सम्पादक जी के साथ दिल्ली गये तब शर्मा जी के विशेष आग्रह पर वहां के सिविल सर्जन तथा अनेक चक्षुविशेषज्ञों को शंकर जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने अपनी आंखें दिखलाई थीं। डाक्टरों ने बहुत जाँच पड़ताल के बाद कहा कि एक आंख तो कुछ ठीक हो सकती है, किन्तु दूसरी की आशा कम है। डाक्टरों की ये बातें सुनकर कविवर शंकर जी ने तपाक से वहीं कहा—

"बूढ़े शंकर से कहता है—
हाथ जोड़ कविता बाला,
होकर सूर भजो केशव को—
ले कर में तुलसी माला।"

यह कविता सुनते ही डाक्टरों ने कहा, 'नहीं, महाराज ! आपकी आंखें बच जाएँगी। हम लोग चाहते हैं कि हिन्दी कविता की आंखें अभी रहें।'

शंकर जी की कविता की सहस्त्रों पंक्तियां आज भी सहारनपुर, बिजनौर, मेरठ आदि जिलों में लोगों के मुख से सुनाई पड़ती हैं—

"परब्रह्म को भूल जाना नहीं और किसी से लौ लगाना नहीं।
बनो ब्रह्मचारी सुविद्या पढ़ो द्विजाभास कोरे कहाना नहीं।

× × ×

"ईश गिरिजा को छोड़, यीशु गिरिजा में जाय,
शंकर सलोने मैंन मिस्टर कहायेंगे।

× × ×

"फारसी की छारसी पर, मानो देवनागरी को नाम ही मिटायँगे।"

कविवर शंकर जी ब्रजभाषा और खड़ी बोली हिन्दी दोनों पर समान अधिकार रखते थे। शर्मा जी ऐसे मित्र से आजीवन आनन्द पाते रहे, यह कम सौभाग्य की बात नहीं थी।

शर्मा जी के दूसरे प्रसिद्ध मित्र साहित्य-महारथी आचार्य पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। ज्वालापुर गुरुकुल महाविद्यालय में पं० पद्मसिंह शर्मा अध्यापक थे। उन्हीं के आमंत्रण पर आचार्य द्विवेदी वहां आकर महीनों आतिथ्य ग्रहण करते। उन्हीं दिनों पं० शालग्राम शास्त्री और पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी ऋषिकुल हरिद्वार में अध्यापक और प्रधानाध्यापक थे। इन चारों पण्डितों में प्रगाढ़ साहित्यिक मैत्री थी। ये चारों विद्वान् संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। चारों विद्वानों को राष्ट्रभाषा हिन्दी से प्रगाढ़ प्रेम था।

हिन्दी का आधुनिक साहित्य एक मात्र आचार्य द्विवेदी के प्रकाश और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उष्मा की उपज है। हरिश्चन्द्री हिन्दी का संस्कार उन्होंने डट कर किया था। 'सरस्वती' के सम्पादक के रूप में उन्होंने हिन्दी की बहुमुखी सेवा की। पं० श्रीधर पाठक, राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त एवं पं० रामचरित उपाध्याय आदि कवियों की भाषा का संस्कार कर उनके काव्य को दीप्ति दी। द्विवेदी जी स्वयं कवि, टीकाकार, प्रौढ़ लेखक और वरेण्य आलोचक थे। उनकी निर्भीकता प्रशंसनीय थी। यह एक विचित्र बात थी कि वे उपमन्यु गोत्र के थे। यास्क ने अपने निरुक्त में बार-बार उपमन्यु सम्प्रदाय का उल्लेख किया है— "इत्योपमन्यवः।" उपमन्यु गोत्रीय शब्द शास्त्री अधिसंख्य हैं। आचार्य पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी उपमन्यु गोत्रीय थे। पं० कामता प्रसाद गुरु, पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी और हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० हेमचन्द्र जोशी उपमन्यु गोत्रीय थे। हिन्दी के अभिनव पाणिनि पं० किशोरी दास वाजपेयी भी उपमन्यु गोत्रीय ही हैं।

आचार्य द्विवेदी का हृदय कुसुम से भी अधिक कोमल था। कर्त्तव्यवश कठोर हो जाते थे। "उष्णत्वमग्न्यातप सं प्रयोगाच्छैत्यं हि यत्सा प्रकृतिर्जलस्य" जल स्वभावतः शीतल होता है, किन्तु अग्नि या धूप के संयोग से वह गरम हो जाता है। आचाय द्विवेदी जी में उचित समय और उचित मात्रा में वह क्रोध दिखाई देता था। ऋषिओं ने भगवान् से प्रार्थना की है कि मन्युरसि मन्युं मयि धहि'— आप मन्यु हैं, मुझ में भी 'मन्यु' पैदा कीजिए। अन्याय को देखकर जो क्रोध पैदा होता है, उसे ही मन्यु कहते हैं। साधारण जन ऐसे अन्याय-अत्याचार सह लेते हैं। परन्तु महावीर जी की स्थिति दूसरी है। दुबे वह है, जो न तो किसी से दबे और न अकारण किसी को दबाये। द्विवेदी जी समन्यु थे। आंजनेय के सदृश द्विवेदी सदा महावीर बने रहे।

द्विवेदी जी की भाषा हमें कई रूपों में प्राप्त है। बैसवारे के लोगों से वे अपनी बैसवारी बोली में ही बातें करते थे। चिट्ठी-पत्री की भाषा का रूप दूसरा है, तो उनके लेखों-निबन्धों और सम्पादकीय टिप्पणियों की भाषा का रूप कुछ और ही है। पर सर्वत्र पाण्डित्य के साथ प्रसाद गुण के मणि-काञ्चन योग की मोहक छटा छाई रहती है। द्विवेदी जी संस्कृत के महान् पण्डित थे। उनके सिरहाने गोस्वामी तुलसी दास की 'विनय पत्रिका' सदा विराजती रहती थी। 'स्तुति कुसुमाञ्जलि' तथा 'श्रीमद्भागवत' के हजारों भक्ति भरे पद्य उन्हें याद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थे। समाज-सुधार के प्रेमी थे। सुधारवादी होने के कारण किसी ने उन्हें नास्तिक कह दिया था। यह बात सन् १८९८ ई० की है। उस समय द्विवेदी जी ने संस्कृत के चौबीस पद्यों में "कथमहं नास्तिकः" शीर्षक हृदयस्पर्शी और गाम्भीर्यपूर्ण कविता लिखी थी। जिसकी सर्वतः भूरि-भूरि प्रशंसा हुई थी। द्विवेदी जी का हृदय स्वच्छ और निर्मल था। उन्होंने कई बार समालोचना में लिखा था--

'कर कुठार आगे यह सीसा।' तथा

"येषां चेतसि मोह मत्सर मद भ्रान्तिः समुज्जृम्भते।
तेऽप्येते दयया दयाधन विभो संतारणीयास्त्वया।"

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, प्रखर प्रचारक तथा 'सुख संचारक' कम्पनी, मथुरा के संस्थापक पं० क्षेत्रपाल शर्मा, पं० पद्मसिंह शर्मा के अभिन्न मित्र थे। दोनों रसमूर्त्ति। श्रीमद्भागवत तथा शेखसादी के शतशः पद्य उनके हृदय में बसे थे, जो कंठ से झांक-झांक कर सहृदय श्रोताओं को आनन्द देते रहते थे। दोनों शर्मा आर्य-समाजी और आचार्य द्विवेदी के मित्र थे।

शर्मा जी की सुहृद मित्र मण्डली में व्रज-कोकिल सत्यनारायण कविरत्न, पं० भीमसेन शर्मा (सतीर्थ), अकबर इलाहाबादी, उपन्यास सम्राट् प्रेमचन्द और श्री रामदास गौड़ का नाम विशेष रूप से उल्लेख्य है। उनके विशेष स्नेहभाजनों में पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, श्री रामनारायण 'पटे' [चतुर्वेदी जी के स्व० अनुज] पं० नवनीत लाल चतुर्वेदी, पं० किशोरीदास बाजपेयी, पं० नाथूराम शंकर शर्मा 'कवि जी' के सुपुत्र द्वय पं० श्रीराम शर्मा एवं पं० हरिशंकर शर्मा, अपने सतीर्थ मित्र पं० भीमसेन शर्मा के सुपुत्र पं० हरिदत्त शर्मा शास्त्री तथा बिरला के मैनेजर श्री पारसनाथ सिंह आदि प्रमुख थे। उनके गाढ़ मित्रों में थे, उनके सतीर्थ पं० शालग्राम शास्त्री साहित्याचार्य। दोनों मित्रों ने बलिया मण्डलान्तर्गत 'छाता' ग्रामवासी सर्वशास्त्र निष्णात पं० काशीनाथ शास्त्री के श्रीचरणों में बैठकर विद्याध्ययन और शास्त्राध्ययन किया था। गुरुवर पं० काशीनाथ शास्त्री उत्तर भारत के धुरन्धर विद्वान् थे। उनके योग्य शिष्य पं० शालग्राम शास्त्री ने 'साहित्य दर्पण' की 'विमला टीका' लिखी और पं० पद्मसिंह शर्मा ने 'बिहारी सतसई' पर 'सञ्जीवन-भाष्य' लिखा। 'भारत-भारती' और 'प्रेमाश्रम' की तुलना में 'सञ्जीवनभाष्य' पर साहित्य सम्मेलन का सर्वश्रेष्ठ 'मंगला प्रसाद' पारितोषिक मिला। पं० शालग्राम शास्त्री की 'विमला टीका' और शर्मा जी के 'सञ्जीवनभाष्य'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की पं० किशोरीदास वाजपेयी ने विद्वत्तापूर्ण समालोचना लिखी थी। इस गम्भीर समालोचना से इन दोनों कृतियों और कृतिकारों की प्रसिद्धि दूर-दूर तक तो फैली ही, प० किशोरीदास वाजपेयी के पाण्डित्य की धाक भी चतुर्दिक छा गई। उत्कल प्रान्त में, जहां के साहित्य दर्पणकार पं० विश्वनाथ थे, वहां के लोग 'साहित्य दर्पण' की हिन्दी की इस 'विमला टीका' से बहुत प्रभावित हुये थे। मुझे इस टीका को पढ़कर वहां के साहित्यरसिक विद्यानुरागियों को इसका आशय उड़िया में सुनाना पड़ा था। उत्कल में संस्कृत की महत्ता आज भी है। वहां की उड़िया क्रियाएँ 'जाऊ छन्ति, पढ़ू छन्ति, खेलू छन्ति' प्राकृत की सीमा के अन्दर रहती हुई भी देववाणी की याद दिलाती हैं।

शर्मा जी और शास्त्री जी का नाम वाङ्मय जगत् में अजर-अमर हो गया है। आचार्य किशोरी दास वाजपेयी ने लिखा है कि "पं० पद्मसिंह शर्मा के जोड़ की हिन्दी पं० शालग्राम शास्त्री ही लिखते थे। संस्कृत के पंडितों में ऐसी हिन्दी किसी तीसरे विद्वान् की मैंने नहीं देखी।"

पं०पद्मसिंह शर्मा के गुरु पं० काशीनाथ शास्त्री सब के साथ सदा भोजपुरी में ही बातें करते थे। महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी ने उनसे खड़ी बोली हिन्दी में बोलने का आग्रह किया तो उन्होंने कहा कि मुझे देव वाणी संस्कृत और मातृवाणी भोजपुरी ही प्रिय हैं। मैं तो अंगरेजी और खड़ी बोली के चक्कर में पड़ना नहीं चाहता। ज्वालापुर महाविद्यालय में भी वे भोजपुरी ही बोलते थे। इसीसे पं०पद्मसिंह शर्मा और पं०शालग्राम शास्त्री को भोजपुरी प्रिय हो गई थी।

संवत् १६८५ (सन् १६२८ ई०) में पं० पद्मसिंह शर्मा अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अष्टादश अधिवेशन के सभापति चुने गये थे। इस अवसर पर पण्डित जी को भोजपुरी की एक कविता सुनाई गई थी। कवि थे विद्यावाचस्पति पं० रामदहिन मिश्र और कविता पढ़ने वाले व्यक्ति थे स्वातंत्र्य सेनानी सरदार हरिहर सिंह (भूतपूर्व मुख्यमंत्री, विहार यह पहला अवसर था) कि अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के रंगमंच से भोजपुरी में यह कविता पढ़ी गई थी। कविता इस प्रकार थी।

"देखलीं लोगन तिरहुत देश,
मउगा अदमी उजबुक वेश,
नचलन गवलन तुरलन तान,
ना देलन भोजन जलपान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिनिधि शुल्क बटोरलन खूब,
अपना से बनल ना एको हूब,
शोर सुनत बड़ दूर से अइलीं,
लँगड़ा आम दहो ना पवलीं ।।

शर्मा जी ने कहा कि यह मेरे पूज्य आचार्य (पं० काशीनाथ शास्त्री) जी की भाषा है। इस भाषा के प्रति उनके हृदय में अतिशय अनुराग था। हम लोगों से भी वे भोजपुरी में ही बतियाते थे। रसमग्न कर देने वाली अपने पूज्य गुरुजी की इस भाषा से मुझे स्वाभाविक स्नेह है।

भोजपुरी

सुदिन मनावे दऽ

अविनाश चन्द्र विद्यार्थी
शिवाजी पथ, यारपुर, पटना-१

बहुत भइल अबेर अब विहान आवेदऽ
सुनल गइल बिहाग, भैरवी कढ़ावे दऽ
अनेक राग-रागिनिति के तनी सूते दऽ
पवन के आजु परातो के सुर जगावे दऽ
निकलि रहल नया सनेस आजु कन-कन से
मरम के बात पात-पात के सुरनवे दऽ
मिली ऊ जोवि कहां झुलफुलात जोन्हिनि में ?
गगन के कोर गुलाबी तनो रङ्गावे दऽ
थथम अनेर बा अन्हार के भगावे में
उठल गोहारि भोर के, कदम बढ़ावे दऽ
कहल गइल कहां ? इहां त बहुत बाकी बा
सगुन उठावे दऽ तनी सुदिन मनावे दऽ

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा और बिहारी
सतसई का तुलनात्मक अध्ययन

डा० मलखान सिंह सिसौदिया

कवि-कर्म अत्यन्त कठिन है और इससे भी कठिन है समालोचक-कर्म। समालोचक को सौन्दर्य-दर्शी और तत्व-दर्शी मात्र ही होना आवश्यक नहीं है, वरन उसे सौन्दर्य और तत्व को अन्यों को दर्शाने की क्षमता से युक्त होना भी आवश्यक है। उसको रचना प्रक्रिया से तो पूर्ण परिचित होना ही चाहिये। इसके अतिरिक्त समालोचनाधीन कृति में संदर्भित विषयों का ज्ञान भी इसको होना चाहिये, साथ ही इसमें सभी प्रकार के आग्रहों से मुक्त होकर हृदय और मस्तिष्क के सन्तुलन के साथ व्यापक परिप्रेक्ष्य में कृति के मूल्यांकन की क्षमता होनी आवश्यक है। इस प्रकार समालोचक में आचार्य और रचनाकार दोनों के गुणों का समन्वय होता है और जिस सीमा तक उसमें इन दोनों के गुण पाये जाते हैं इस सीमा तक वह साहित्य जगत् में प्रतिष्ठित होता हैं। इस के अनुसार यदि एक स्थिति में रचनाकार बड़ा है तो दूसरी स्थिति में समालोचक, आखिर रत्न की पहचान कराने वाला जौहरी ही तो होता है, अन्यथा यह संम्भव है कि रत्न मात्र पत्थर ही समझा जाये अथवा असली और नकली का भेद ही न हो पाये। इस कारण रत्न की पहचान के लिये जौहरी और जौहरी के लिये रत्न आवश्यक है। इसी प्रकार रचनाकार और समालोचक अान्योआश्रित होते हैं।

काव्य, नाटक, उपन्यास, कथा, आदि सृजनात्मक विधायें हैं। उनमें सौन्दर्य की सृष्टि होती है और वे इसकी अनुभूति कराती हैं। इसके साथ ही वे किन्हीं सत्यों से हमको नवीन रूप में परिचित भी कराती हैं। यदि किसी समालोचनात्मक कृति में ये गुण विद्यमान हैं तो निश्चय ही वह सृजनात्मक साहित्य के अन्तर्गत आती है और इसकी स्थायी निधि वन जाती है। ऐसी समालोचनात्मक कृति किसी रचना के वास्तविक सौन्दर्य का निदर्शन कराकर हमारे मन-मस्तिष्क का पुनसंस्कार करती हुयी ज्ञान की परिधि विस्तृत करती है।

उपर्युक्त मानदण्डों के आधार पर यदि आचार्य पद्मसिंह शर्मा का समालोचक के रूप में और उनकी कृति 'बिहारी सतसई-तुलनात्मक अध्ययन' का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समालोचनात्मक कृति के रूपमें मूल्यांकन किया जाय तो साहित्य में उनका मूर्धन्य स्थान निर्विवाद है। इस कृति के द्वारा बिहारी सतसई का वास्तविक सौन्दर्य अपनी समस्त विशिष्टताओं सहित व्यापक संदर्भों में हमारे मानस नेत्रों के समक्ष उजागर हो जाता है। इसके बिना बिहारी-सतसई का कवित्व-कौशल, अर्थगांभीर्य और उसमें निहित रचनाकार का पांडित्य भली-भांति नहीं समझा जा सकता है। वस्तुतः इस आलोचनात्मक कृति के अध्ययन के बाद ही बिहारी सतसई के बहुकोणीय सौष्ठव का सम्यक बोध हो पाता है। इससे जहाँ एक ओर काव्य के रूप में बिहारी सतसई की श्रेष्ठता और महत्ता प्रमाणित होती है वहीं वह दूसरी ओर समालोचक के रूप में आचार्य पद्मसिंह शर्मा के गहन चिन्तन, मनन, और उनकी काव्य-सौन्दर्य के उद्घाटन की क्षमता एवं विद्वत्ता प्रमाणित होती है। इस प्रकार रचनाकार और समालोचक का यह युग्म साहित्य में उच्च स्थान पर आसीन हो जाता है।

आचार्य पद्मसिंह शर्मा हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना के प्रवर्त्तक माने जाते हैं। सर्व प्रथम उन्होंने ही सतसई या सप्तशती की पूर्व परम्परा के सन्दर्भ में तुलनात्मक धरातल पर बिहारी सतसई का अध्ययन प्रस्तुत किया। किसी कवि का अन्य भाषाओं अथवा उसी भाषा के तद्विषयक अन्य कवियों के साथ तुलनात्मक दृष्टि से इससे पूर्व ऐसा व्यापक अध्ययन नहीं प्रस्तुत किया गया था। इस कारण इस अध्ययन की महत्ता और भी बढ़ जाती है। उन्होंने बिहारी सतसई की तुलना प्राकृत गाथा-सप्तशती, आर्या सप्तशती और अमरुक शतक से करते हुये समान भाव वाले बिहारी के दोहों की गाथा-छन्द, आर्या-छन्द और शार्दूल-विक्रीड़ित जैसे बड़े-बड़े छन्दों पर सोदाहरण श्रेष्ठता प्रमाणित की है। इसके अतिरिक्त भव-भूति जैसे संस्कृत के अन्य कवियों के श्लोकों से भी तुलनात्मक दृष्टि से उन्हें अधिक चमत्कार पूर्ण प्रदर्शित किया है। यही नहीं, उन्होंने उर्दू के कवि गालिब, सौदा, मीर तकी, जौक, अकबर आदि की जो बिहारी के पश्चाद्वर्ती थे, रचनाओं के उदाहरण देकर रचना-कौशल और भाव में बिहारी के दोहों को बढ़-चढ़ कर दिखलाया है। इसी प्रकार उन्होंने हिन्दी के पूर्व वर्ती और पश्चाद् वर्ती कवियों की रचनाओं से उद्धरण देकर बिहारी सतसई के दोहों का सौष्ठव सिद्ध किया हैं। इस तुलनात्मक पद्धति द्वारा बिहारी सतसई की काव्यगत श्रेष्ठता अपनी समस्त विशिष्टताओं सहित उजागर हो जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विहारी के विरह वर्णन की विशेषताएँ दिखलाने के लिये भी संस्कृत तथा उर्दू कवियों की रचनाओं से उद्धरण देकर उनकी सतसई के दोहों से तुलना की गयी है। कहना न होगा कि संस्कृत और उर्दू दोनों भाषाओं में विरह के वर्णन अद्वितीय हैं। किन्तु आचार्य पद्मसिंह शर्मा उद्धरणों द्वारा यह भली-भांति प्रमाणित करने में समर्थ रहे हैं कि विहारी के अनेक दोहों में विरह-वर्णन उनसे कहीं अधिक सूक्ष्म और चमत्कार पूर्ण है। इसके अतिरिक्त विहारी की कवित्व शक्ति और पांडित्य को भी इसी पद्धति द्वारा प्रमाणित किया गया है। विहारी के गणित, ज्योतिष, वैद्यक, इतिहास-पुराण, नीति आदि के ज्ञान के प्रमाण में सतसई के दोहे उद्धृत कर उनकी बहुज्ञता सिद्ध की गयी है।

विहारी सतसई की श्रेष्ठता प्रमाणित करने के साथ आलोचकों द्वारा उसमें निकाले गये दोषों पर भी आचार्य पद्मसिंह ने भली-भांति विचार करते हुये उनका परिहार किया है। अन्त में जिन टीकाकारों ने विहारी के दोहों की व्याख्या करते हुये अर्थ का अनर्थ किया है उनकी खाल-खिचाई भी अच्छी तरह की गयी है। जहां उन्होंने ऐसा किया है वहां उनकी शैली में चुटीले हास्य और व्यंग्य का अद्भुत सम्मिश्रण है जैसा निम्नांकित उदाहरणों से प्रकट है—

'विद्यावारिधि जी ने समझा होगा 'का गद-हिये' ये दो पृथक् पद हैं। इनका आपस में कुछ सम्बन्ध तो है नहीं, बस 'कागद' का कान पकड़ के 'नेह' के साथ नत्थी कर दिया। हिया बेचारा हाय-हाय करता और पुकारता ही रह गया—(मैं कहता रह गया जालिम। मेरा दिल है मेरा दिल है)—कि दयानि हो! यह आप क्या करते हैं? मेरे इस चिर-संगी सखा 'कागद' को कहां लिये जाते हैं। विहारी लाल जी ने तो इसे मेरे साथ अभेद रूप से रखा है।

उधर नेह ने भी, इस विभाग पर नाराजगी जाहिर करके कहा कि रहने दीजिये, मुझे 'कागद' नहीं चाहिये, मैं 'सेहुंड़' के आंक की समता से ही खुश हूं। कवि-विधाता ने मुझे उसी के सदृश बनाया है।...

परन्तु वंग-विच्छेद करने वाले 'माई लार्ड कर्जन' के समान हमारे 'विद्वद्वृन्द शिरोमणि' विद्यावारिधि ने उनकी इस करुणोक्ति पर ध्यान न देकर कहा है कि—'चुप रहो, हम नहीं जानते, विहारी लाल ने तुम्हें कहीं और किसी के साथ रखा हो, न हमें किसीसे कुछ पूछनेकी जरूरत है, हम स्वयं विद्या-वारिधि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं। पृथक होने में भले ही तुम्हारा अर्थनाश क्या सर्वनाश हो जाये कुछ परवा नहीं हमारी आज्ञा तुम्हें माननी पड़ेगी।... बहुत कहने-सुनने पर हृदय का दिल रखने के तौर पर उससे कहा कि 'कागद' के बदले हमने तुम्हें 'निर्मलता' प्रदान की। नेह की अपील डिसमिस, क्योंकि उससे कुछ छीना नहीं, वल्कि और कागज का करेन्सी नोट दिया गया है।

इस प्रकार इस 'कागज केस का खात्मा' हुआ।'

× × ×

'पाठक वृन्द ! आपमें से बहुत से सज्जनों ने जयपुर और लाहौर आदि के चिड़ियाघर तो देखे होंगे, पर हमारे अनुरोध से जरा वारिधि जी का चिड़ियाघर भी देख लिजिये, उसमें भांति-भांति के जानवरों की बोली सुन कर आप बहुत प्रसन्न होंगे। आप देखेंगे कि वहां पशु-पक्षियों के साथ तरुवर (वृक्ष) भी बोल रहे हैं।'

समग्रत: 'बिहारी सतसई : एक अध्ययन' किसी कवि की अपने में एक सम्पूर्ण समालोचना है। इसमें आचार्य पद्मसिंह शर्मा का व्यापक अध्ययन और पांडित्य प्रत्येक पृष्ठ पर प्रमाणित होता है और उनकी आलोचनात्मक प्रतिभा का लोहा मानना पड़ता है। वस्तुतः 'बिहारी सतसई' का यह तुलनात्मक अध्ययन एक प्रकार से पूरक है।

रीति कालीन कवि

कवियों पर अश्लीलता और असभ्यता के प्रचार का दोषारोपण करना उनके साथ अन्याय करना है। × × शृंगार रस के काव्य में परकीयादि का प्रसंग कुरुचि का उत्पादक होने से नितान्त निन्दनीय कहा जाता है, यह किसी अंश में ठीक हो सकता है, पर ऐसे वर्णनों से कवि का अभिप्राय समाज को नीति भ्रष्ट और कुरुचि-सम्पन्न बनाना नहीं होता, ऐसे प्रसंग पढ़कर धूर्त्त विटों की गूढ़ लीलाओं के दाँव-घात से परिचय प्राप्त करके अन्य सभ्य-समाज अपनी रक्षा कर सके, इस विषय में सतर्क रहें यही ऐसे प्रसंग का प्रयोजन है।

आचार्य पं० पद्म सिंह शर्मा (बिहारी सतसई से)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री स्वामी सहजानंद सरस्वती का एक पत्र

आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा के नाम

श्रीः

सुल्तानपुर, पो०-धनसोई
(शाहाबाद) / २३-४-२६

नारायण,

मुझे दुःख है कि मैं आपकी इच्छा पूर्त्ति इतनी देर के बाद कर रहा हूँ। इस बार चौ० साहब के यहाँ से आते समय गाड़ी में बाण और मयूर की चर्चा हुई थी तो आपने कहा था कि यहां की जो कुछ बातें मैं जानता हूँ, उन्हें लिपिबद्ध करके भेज दूँ, यों तो जबानी चर्चा हुई ही थी। लेकिन मैं उधर से घूमता फिरता १५ मार्च को यहां लौटा था और कई इधर-उधर की वाहियात झंझटों में व्यस्त रहने के बाद मुंगेर भूमिहार-ब्राह्मण महासभा में चला गया और वहां से कलकत्ता होता १५-४-२६ की रात में यहां आया। तबसे बराबर लिखता ही हूं और कई बहुत जरूरी तकाजों और कार्यों की पूर्ति के बाद आज आपका नम्बर आया है। इसीलिए छुटकारा पा रहा हूँ। मेरा ख्याल तो यही है, जैसी कि आपसे बातें हुई थीं, यहीं पर बाण रहते थे और यहीं से कान्यकुब्ज वाले स्कन्धावार में गए होंगे। पहले के लोग ५० से ७० कोस तक रोज चलते ही थे, यह तो बात गाड़ी में ही हुई थी और मैंने प्रायः एक ही दिन में रामचन्द्र का अयोध्या से सरयू-गंगा संगम पर बाल्मीकि रामायण की बात भी कही ही थी। सोनतट से वह स्कन्धावार प्रायः ४०० मील ही रहा होगा। अतः यह बात असंभव नहीं प्रतीत होती।

हां मैंने कहा था कि मैथिलों और सरयूपारियों के साथ जो उत्तर प्रत्युत्तर हुए हैं वे 'मैथिल मान मर्दन' 'सरयूपारीण संहिता' और 'ढोल की पोल' नाम से प्रकाशित हुए हैं। आपने इन्हें देखने की इच्छा प्रकट की थी। मैं ने भिजवा देने को कहा भी था। सो अब तक पुस्तकें चली गई होतीं। मगर प्रकाशक महोदय की गड़बड़ी और बीमारी से यह काम रुक गया। अब फिर उन्हें लिखता हूँ कि वे शीघ्र ही भेज दें। आशा है शीघ्र ही आपके पास पुस्तकें पहुँच जायेंगी।

हां, एक बात और ११, १२ मई को मैं विहटा ब्रह्मचर्याश्रम का उत्सव करना चाहता हूँ। मैं तो नहीं चाहता कि आपको और चौ० साहब को नाहक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस गर्मी में···ल करूँ और इसी निश्चय पर अभी डटा भी हूँ। मगर वहां के साम्प्रतिक संचाल (क) की इच्छा है और वे बराबर लिखते हैं कि आप दोनों अवश्य गिरफ्तार हों। मैं २७-४-२६ को वहां पहुँच जाऊँगा और अन्त तक वहीं रहूँगा। वहां जाकर उन्हें पुनरपि समझाऊँगा। मगर यदि अन्ततोगत्वा यही तय पाया कि आप जरूर यह यातना भोगें ही तो क्या आपको अवकाश रहेगा और उस समय आ सकेंगे? उत्तर विहटा के पते से ही भेजें।

पता—P. Bihta, E. I. R. (Patna)

स्वामी सहजानन्द सरस्वती

संभवतः मैं ज्येष्ठ के अन्त में बदरीनारायण की यात्रा को आऊँगा।

मायां के नगरिया

किशोरीशरण

परिवार नियोजन अधिकारी, वलिया

कदम-कदम छुटे पिछे नइहरवा, अगवा बलमुवाँ के देश,
मँगवा सँवारि के सेनुरा लगावल, अइसन बनल बाटे भेष ॥
पुजि-पुजि देवता के सइयां के मँगली, हो गइली जब से सयान,
देई के निमन उपदेश मोरी मइया पोषिके तू कइलू जवान ॥
लोरवा के धार हम सखियनके देखलीं, जइसे नदियाके सोत,
एह संसार के आज हम जनलीं, केहूए आपन ना होत।
कइसन बनल बा समाज के विधनवां, अब से भइलीं मेहमान,
नइहर जाइब कबों, रहब ससुररिया एहीले बा हमरो ठेकान ॥
बबुनी कहि-कहि के मइया खेलवलू, भइया के मधुर दुलार,
बाबू जी के बिटिया पुकारल सबदवा बेधे शरीर हमार।
भउजी के बतिया त कबहूँ ना सहलीं, कइसे सहबससुरार,
ननदी कहि-कहि के भउजी पुकारें, धीरे से चूमें लीलार ॥
सरसों के फूलवा आ आमवां के मोजरा देखे के न मिली, मिली जेल,
झगरा कई के हम बचपन में रोवलीं, आजु जवानी के खेल।
काहे के बनवलऽ राम! हमें जनमवलऽ सब केहू रोवेला अपार,
माया के नगरिया में माया जनमवलऽ कईल न तनिको विचार ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निबंध—

भारत की भावी पत्रकारिता

प० बनारसी दास चतुर्वेदी, डी० लिट्०
फीरोजाबाद, आगरा

भविष्य में भारत की पत्रकारिता का क्या रूप होगा ? हमें कैसे पत्रकारों की जरूरत पड़ेगी ? और अभी हमें तदर्थ क्या-क्या प्रयत्न करने चाहिये ?

ये प्रश्न ऐसे हैं जिन पर अधिकार पूर्वक कुछ भी लिखने की योग्यता मुझ में नहीं है। हां, कुछ सुझाव अवश्य दे सकता हूं।

मुख्य प्रश्न हमारे सामने यह है कि हम किस प्रकार की समाज व्यवस्था (Social order) चाहते हैं ? पूंजीवादी समाज व्यवस्था तथा साम्यवादी समाज व्यवस्था की पत्रकारिता में अन्तर होना स्वाभाविक तथा अनिवार्य भी है।

मैं यहां प्रारम्भ में ही स्पष्ट निवेदन करदूं कि मैं साम्यवादी समाज व्यवस्था का पक्षपाती हूं, यद्यपि यह नहीं कह सकता कि वह साम्यवाद रूसी ढंग का होगा या चीनी प्रकार का अथवा भारत उसे किसी नवीन रुप में परिवर्तित करदेगा।

आज हमारे देश में पूंजीवादी पत्रकारिता का बोलबाला है। आज से लगभग ४५ वर्ष पूर्व अमर शहीद गणेश शंकर जी विद्यार्थी ने स्व० विष्णुदत्त शुक्ल जी की पुस्तक की भूमिका में लिखा था—

"एक समय था, इस देश में साधारण आदमी सर्व साधारण के हितार्थ एक उंचा भाव लेकर पत्र निकालता था और उस पत्र को जीवन-क्षेत्र में स्थान मिल जाया करता था। आज वैसा नहीं हो सकता। आप के पास जबरदस्त विचार हों और पैसों वालों का बल न हो, तो आपके विचार आगे न फैल सकेंगे; आपका पत्र न चल सकेगा। इस देश में भी समाचार पत्रों का आधार धन हो रहा है। धन ही से वे निकलते हैं धन ही के आधार पर वे चलते हैं और बड़ी वेदना के साथ कहना पड़ता है कि उनमें काम करनेवाले बहुत से पत्रकार भी धन ही की अभ्यर्थना करते हैं। अभी यहां पूरा अन्धकार नहीं हुआ है, किन्तु लक्षण वैसे ही हैं। कुछ ही दिन पश्चात यहां के समाचार पत्र भी मशीन के सदृश हो जायेंगे और उनमें काम करने वाले पत्रकार केवल मशीन के पुर्जे। व्यक्तित्व न रहेगा, सत्य और असत्य का अन्तर न रहेगा, अन्याय के विरुद्ध डटजाने और न्याय के लिये आफतों को बुलाने की चाह न रहेगी, रह जायेगा केवल खींची हुई लकीर पर चलना।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिस 'पूरे अन्धकार, की भविष्यवाणी अमर-शहीद गणेश जी ने की थी, वह कितने अंशों में आचुका है, इस प्रश्न पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। श्री चेलापति राव जैसे स्वाधीन चेता पत्रकार ही अधिकार पूर्वक इसका उत्तर दे सकते हैं। हां, एक बात हम भी कह सकते हैं कि हिन्दी जगत में रामानन्द चटर्जी तथा शिवप्रसाद गुप्त जैसे मालिकों का प्रायः अभाव ही हो गया है, जो अपने अधीनस्थों को पूरी पूरी स्वाधीनता दें।

कण्ठ की स्वाधीनता हम पत्रकारों के लिये एक निहायत जरूरी चीज है पर अब हमें ऐसा प्रतीत होने लगा है कि उसकी भी कुछ सीमा होनी चाहिये। अगर कोई मनचला आदमी संखिया पीसकर कुओं में डालता फिरे तो क्या हम उसे वैसा करने के लिये खुला छोड़ देगें। पर आज कितने ही पत्रों के स्वामी तथा पत्रकार बन्धु गन्दी से गन्दी कहानियां तथा उपन्यास छपाकर हमारी नवीन पीढ़ी का चारित्रिक पतन कर रहे हैं—और फिल्म वालों ने तो इस दिशा में गजब ही ढादिया है तो क्या उनकी स्वाधीनता पर कोई नियंत्रण न होना चाहिए ? इस प्रसंग में हमें एक घटना याद आती है।

अपनी द्वितीय रूस यात्रा में हमें मास्को के एक पत्रकार बन्धु से मुलाकात करने का मौका मिला था। उनका शुभनाम है एलैगजैन्डर चैकोवस्की और वे अंग्रेजो में एक मासिकपत्रिका निकालतें थे।

बातचीत के प्रसंग में हमने उनसे कहा—

"हमारे देश में कुछ ऐसी भावना है कि रूस में कंठ की स्वाधीनता नहीं, यह बात कहाँ तक सच है ?"

उन्होंने तपाक से जवाब दिया—जिस समाज व्यवस्था को हमने असंख्य बलिदान करके कायम किया है, यदि उसे उखाड़ फेंकने की कोई कोशिश करे तो उसे हम इसबात को इजाजत हर्गिज नहीं दे सकते और कोई अश्लील या गन्दा साहित्य छपाना चाहे तो उसके खिलाफ भी हम कठोर कार्रवाई करेगें, पर शासन की रचनात्मक आलोचना करने का अधिकार हमारे यहां सबको है। स्वयं मैं भी रूसी सरकार की आलोचना करता रहता हूँ।

श्री चैकोवस्की का कथन हमारे लिये विचारोत्तेजक था। हमारे देश में आप गन्दे से गन्दा साहित्य बच्चों के हाथ में दे दीजिये, कोई रोकनेवाला नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्टेशनों के बुक स्टालों पर ऐसी किताबों की भरमार रहती है जिनकी छपाई सफाई तो आकर्षक होती है पर जो 'विष रस भरा कनकघट जैसे' कहावत को चरितार्थ करती हैं।

कहानियों की पत्रिकाओं में ऐसी कहानियां अक्सर छपती रहती हैं, जिनमें स्त्री पुरुष प्रसंगों का नग्न चित्र उपस्थित किया जाता है। हमारे एक साथी ने जिन्हें एक ऐसी ही पत्रिका में काम करने का सौभाग्य (या दुर्भाग्य ?) प्राप्त हुआ था और पत्रिका के मालिक ने उन्हें आदेश दिया था कि ऐसी कहानियां छापिये, जिनमें 'सैक्स का पुट' हो। सैक्स के इस पुट को देना कोई मुश्किल काम नहीं; अल्पव्यय से अपने को दुराचारी बनाकर कोई भी युवक इस पुट का सजीव वर्णन कर सकता है। और ऐसे पाठक पाठिकाओं की संख्या निरन्तर बढ़ती जाती है जो इस प्रकार Realism या यथार्थवाद के आदी बन चुके हैं। हमने सुना था कि किसी प्रसिद्ध पत्रिका में एक कहानी छपी थी जिसका सारांश यह था। एक उद्विग्न पिता अपनी अविवाहित पुत्रीसे सवाल करता है कि तुम किस युवक से गर्भवती हुई हो और वह निःसकोच जवाब दे देती है— "मेरा सम्पर्क कई युवकों से हुआ था और मैं निश्चय पूर्वक कुछ भी नहीं कह सकती।"

प्राचीन काल में उद्दालक की माता ने भी ऐसा ही उत्तर, दिया पर तब विवाह व्यवस्था का पूर्ण विकास नहीं हो पाया था। पता नहीं कि उन कहानी लेखक का उद्देश्य उस कहानी लेखन में क्या था ?

स्वयं हमने आज से ४५ वर्ष पहले हिन्दी साहित्य में बढ़ती हुई अश्लीलता के विरुद्ध आन्दोलन किया था और उसे घासलेटी साहित्य बतलाया था, पर वह आन्दोलन प्रायः असफल ही रहा और आज तो वैसे आन्दोलन चलाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

आखिर हम कब तक कंठ की स्वाधीनता का ढोल पीटते रहेंगे ?

हम यह नहीं कहते कि हमें किसी देश विशेषकी पत्रकारिता की हूबहू नकल कर लेनी चाहिये। जिस देश में जो कुछ अच्छा हो उसे ग्रहण करने में हमें कभी संकोच न करना चाहिए। इग्लैन्ड में सी०पी० स्काट और नैविनसन जैसे पत्रकार हुए हैं और अमेरिका में होरेशग्रोली तथा विलियम लायड गैरीसन जैसे।

स्वयं हमारे देश में भी रामानन्द चटर्जी, सी० वाई० चिन्तामणि,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे पत्रकार विद्यमान थे। इस सूची में कितने ही महत्त्वपूर्ण नाम और भी जोड़े जा सकते हैं। स्वयं लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी जी पत्रकार थे और हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में बालमकुन्द गुप्त तथा बालकृष्ण भट्ट, के शुभ नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। इलाहाबाद के उर्दू पत्र स्वराज्य को भला कौन भूल सकता है, जिसके आठ सम्पादक एकके बाद दूसरा जेल गये थे।

हमारा राष्ट्र

सुमनो के रंग-रूप भिन्न हैं, पर माला है एक
भाषा, धर्म, प्रदेश भिन्न हैं, किन्तु राष्ट्र है एक ॥
हिमगिरि से सागर तक फैला विस्तृत अपना देश।
जिसमें छोटे-बड़े बीस के लगभग भिन्न प्रदेश ॥
हिन्दू मुसलिम सिक्ख ईसाई सभी यहां पर रहते।
भारतवासी कहलाने में सब ही गौरव लहते ॥
उन्नति शील राष्ट्र हो अपना यही सभी की टेक।
सुमनों के रंग-रूप भिन्न है पर माला है एक ॥
हिन्दी, वंगला, तामिल, कन्नड़ और विविध भाषाएँ।
बोली जातीं इस भारत में, एक रहस्य बताएँ—
कई भिन्नतायें होने पर भी हम भारतवासी।
कुछ गिरजा, गुरू द्वारा जाते, 'औ' कुछ कावा, काशी ॥
सागर चरण पखार रहा, हिमगिरि करता अभिषेक।
सुमनों के रंग रूप भिन्न हैं, पर माला है एक ॥
मजहब कभी नहीं सिखलाते हैं विघटन की वात।
है यदि ऐक्य चमकता सूरज, फूट अंधेरी रात ॥
युग-युग से हम एक रहे, आगे भी एक रहेंगे।
आवे अगर राष्ट्र पर संकट चुप ही नहीं सहेंगे ॥
उर-उर में वह रहा एक मुख. राष्ट्रप्रेम उद्रेक।
सुमनों के रंग रूप भिन्न हैं, पर माला है एक ॥
भाषा धर्म प्रदेश भिन्न हैं, किन्तु राष्ट्र है एक ॥

डा० जगदीश वाजपेयी, १२३ द्वारिकापुरी, मुजफ्फर पुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रोफेसर श्री काजी अशरफ महमूद की तीन

कवितायें

सद्गुरु का फरमान

सुन सद्गुरु का फरमान रे !
दया बिना सब धर्म्म वृथा है,
कर्म्म बिना सब ज्ञान रे !
भाव बिना सब भजन वृथा है,
भक्ति बिना सब गान रे !
सत्य बिना सब सिद्धि वृथा है,
शुद्धि बिना सब ध्यान रे !
शील बिना सब शौर्य वृथा है,
स्नेह बिना सब मान रे !
न्याय बिना सब नीति वृथा है,
विनय बिना सब दान रे !
ताज बिना सब साज वृथा है,
शक्ति बिना सब शान रे !

['निमन्त्रण' से साभार]

प्रेम का मूल्य

प्रेम देव से पूछा जाकर
"कब होंगे पूरे अरमान ?"
प्रेम देव मृदु हँसकर बोले
"जब दोगे अपना बलिदान।"
प्रेम-रत्न है इतना सस्ता,
प्रेम-मार्ग इतना आसान,
नाच उठे सुन सुख से तत्क्षण
मेरे मन के चिर-अरमान !!

['कुटज' से साभार]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरि आये

ठुमुक ठुमुक पग कुसुम-कुञ्ज मग
चपल-चरन हरि आये हो-हो! चपल-चरण हरि आये,
मेरे प्राण भुलावन आये, मेरे नयन लुभावन आये।
रिमिक झिमिक झिम रिमिक झिमिक झिम
नर्तन-पद हरि आये—हो-हो! नर्तन-पद हरि आये,
मेरे प्राण भुलावन आये, मेरे नयन लुभावन आये।
कुञ्ज कुञ्ज हर गीत-गुञ्ज भर
भृङ्ग-रङ्ग हरि आये—हो-हो! भृङ्ग-रङ्ग हरि आये,
मेरे प्राण भुलावन आये मेरे नयन... ... ...।
तरुण अरुण सम चीर तुहिन-तम
तेज-पुञ्ज हरि आये—हो-हो! तेज-पुञ्ज हरि आये,
मेरे प्राण भुलावन आये, मेरे नयन... ... ...।
सुन्दर सज कर सौम्य रूप धर
स्वप्न-सदृश हरि आये—हो-हो! स्वप्न-सदृश हरि आये,
मेरे प्राण भुलावन आये, मेरे नयन... ... ...।
सिर पर सुन्दर मोर मुकुट धर
हृदय हरण हरि आये—हो-हो! हृदय हरण हरि आये,
मेरे प्राण भुलावन आये, मेरे नयन... ... ...।
मन्द मधुर स्वर मुरलि मुखर कर
मर्म मथन हरि आये—हो-हो! मर्म मथन हरि आये,
मेरे प्राण भुलावन आये; मेरे नयन... ... ...।
सकरुण क्रन्दन सुन ब्रजनन्दन
बन्धन मोचन आये—हो-हो! बन्धन मोचन आये,
मेरे प्राण भुलावन आये, मेरे नयन.. ... ...।
भव-भय भञ्जन भव मन रञ्जन
भक्त-भवन हरि आयें—हो-हो! भक्त-भवन हरि आये,
मेरे प्राण भुलावन आये, मेरे नयन लुभावन आये।

('प्रसाद' से साभार)

१४३, सेगुन बागीचा
ढाका—२, (बंगला देश)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तर प्रदेश : पूरब और पश्चिम

सामाजिक अध्ययन

श्री जंगबहादुर सिंह
बेसिक शिक्षा अधिकारी, फैजाबाद

उत्तर-प्रदेश भारत वर्ष का सबसे बड़ा राज्य है। इसके पूर्वी भाग में वाराणसी, गोरखपुर और फैजाबाद प्रमण्डल तथा पश्चिमी भाग में आगरा, मेरठ तथा बरेली प्रमण्डल हैं। शेष भाग मध्य, पर्वतीय तथा बुन्देल खण्ड के नाम से हैं। पश्चिमी और पूर्वीय उत्तर-प्रदेश के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में भी भिन्नता पाई जाती है और अधिकांश पूर्वीय भाग वालों को पश्चिमी भाग के सम्बन्ध में तथा पश्चिमी भाग वालों को पूर्वीय भाग वालों के जीवन और स्थिति के सम्बन्ध में बहुत भ्रम है जिसका विवेचन नीचे किया गया है।

लोगों का ऐसा विचार है कि पश्चिमी उत्तर-प्रदेश में दूध-दही की नदियाँ बहती हैं। वहाँ अनाज का भाण्डार है और लोगों के पास बहुत पैसा है एवं ठीक इसके विपरीत पूर्वीय उत्तर-प्रदेश के लोग बहुत गरीब हैं तथा भूखों मरते हैं। परन्तु यदि गहराई में घुस कर विचार करें तो इस विचार धारा में बहुत संशोधन करना पड़ेगा। पूर्वीय उत्तर-प्रदेश में भारत वर्ष की सबसे बड़ी धार्मिक-नगरी काशी है। वहीं पर तीर्थराज प्रयाग तथा भगवान् राम की जन्म भूमि अयोध्या तथा मुसलमानों की सभ्यता का केन्द्र अवध है। प्राचीन तीन प्रमुख तीर्थ स्थानों के कारण यहां की संस्कृति में प्राचीन वर्ण-व्यवस्था के कट्टरपन के साथ ही मुसलमानों की नवाबी का भी बहुत बड़ा संस्कार है जिसके कारण ब्राह्मण, क्षत्रिय अपने हाथों से हल नहीं चलाते तथा नवाबों के अनुकरण से नौकरों द्वारा काम लेने की प्रणाली अभी तक प्रचलित है। इसके फलस्वरूप भूसम्पत्ति मुख्यतया उच्चवर्णों के लोगों तथा राजा-नवाबों के हाथ में थी। जमींदारी टूटने के बाद भी अधिकांश मजदूरों के पास खेती योग्य कोई भूमि नहीं है। जिनके पास जमीन है वे अपने हाथ से खेती का काम नहीं करते। समाज में ४० प्रतिशत लोगों के पास कृषि-योग्य भूमि है, परन्तु उसपर ४० प्रतिशत काम करने वाले भूमि-हीन खेतिहर मजदूर हैं। भूमि का मालिक चाहता है कि मजदूर कम से कम पैसा लेकर अधिक से अधिक काम करे और मजदूर चाहता है कि वह कम से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काम करके अधिक से अधिक मजदूरी प्राप्त करे। इस प्रकार की स्थिति में भूमि की उपज की बचत उन लोगों की अपेक्षा कम हो जाती है जो खेती का सारा कार्य अपने हाथों से करते हैं और जैसा कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में है।

इसके विपरीत पश्चिमी उत्तर-प्रदेश में सभी लोगों के पास कुछ न कुछ भूमि है। वहां सभी जाति के लोग हल जोतने से लेकर खेती के सभी काम करते हैं। परिणाम स्वरूप वहां अन्न अधिक पैदा होता है। दुधारू जानवरों की पूरी देख-रेख स्त्रियां करती हैं। जिससे उनके यहां दूध, मठ्ठा और घी होता है। प्रत्येक बच्चे को शाम को सोते समय दूध दिया जाता है। यही उनकी सम्पन्नता की निशानी है। उनको खेती की सुविधा के लिये गंगा और यमुना से निकली हुई नहरों का वरदान है तो पूर्वीय उत्तर प्रदेश को इन्हीं नदियों की बाढ़ का अभिशाप है, जिनका संगम प्रायः पूर्वीय भाग में हुआ है।

उत्तर प्रदेश के दोनों भागों की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति का मोटा-मोटी वर्णन किया गया। इसके आगे हम देखें तो पश्चिम के अधिकांश सम्पन्न जिलों में जाटों और गूजरों की मुख्य आबादी है और वही लोग वहां के समाज के पथ-प्रदर्शक हैं। अन्य जाति वालों को प्रायः उन्हीं का अनुकरण करना पड़ता है। इसके विपरीत पूर्वीय उत्तर प्रदेश में समाज का अगुआ ब्राह्मण, क्षत्रिय और पुराना नवाबी खानदान है। समाज के अन्य लोग इनके रहन-सहन के अनुकरण करते हैं। जाट-गूजर पशुपालन दुग्धोत्पादन तथा कृषि का काम करते हैं। इस प्रकार पश्चिम की सभ्यता को जाट-गूजर संस्कृति के नाम से पुकारा जा सकता है। पूर्वीय उत्तर-प्रदेश के कुर्मी तथा यादव भी प्रधानतः कृषि एवं पशुपालन कार्य करते हैं। पूरब के हरिजन का जीवन पश्चिम के हरिजन के मुकाबले निम्न कोटि का है, परन्तु ब्राह्मण और क्षत्रियों का रहन-सहन ऊँचा है। पूरब में बलिया, देवरिया और गोरखपुर के बाजार में गांवों से आकर शहरों में बिकने वाला दही यहां के भोजन के उच्चस्तर का द्योतक है जो पश्चिमी भाग में कहीं उपलब्ध नहीं है। पूर्वी उत्तरप्रदेश में चावल के साथ रोटी, दाल चटनी, अचार और कई प्रकार की तरकारियों का दोनों समय के भोजन में प्रयोग भी भोजन के ऊँचे स्तर का द्योतक है। पश्चिमी भाग में महीने में केवल दो तीन बार चावल खाना तथा रोटी के साथ केवल दाल या केवल तरकारी का खाना सादे और सस्ते भोजन का परिचायक है। बाजरे की रूखी बासी-रोटी और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्याज जिसका पश्चिम में सामान्यतया प्रयोग होता है, पूरब के गरीब लोग भी खाना नहीं पसंद करते।

पश्चिमी भाग के उत्पादन में स्त्रियों का विशेष हाथ है। सूत कातना, कपड़ा धोना, जानवरों का चारा काटना तथा उनको खिलाना और दुहना आदि कार्य स्त्रियां ही करती हैं। पूर्वीय भाग में भी कुर्मियों तथा यादवों की स्त्रियां खेती के कार्य में सहयोग देती हैं परन्तु सामाजिक-जीवन में ब्राह्मण और क्षत्रियों का प्रभाव है। इन लोगों में भी सामूहिक परिवार दो-दो चार-चार पीढ़ी तक एक साथ चलता जाता है, पर पश्चिमी भाग के जीवन को एक बहुत खटकने वाली बात यह है कि लड़के के विवाह के सालभर के भीतर ही बेटा अपनी बहू के कहने पर उसके साथ होकर छोटे भाइयों और माता-पिता से अलग हो जाया करते हैं। इससे प्रगट होता है कि उनके जीवन का उद्देश्य केवल अपने ही लिए आराम से कमाना-खाना है। इसके आगे परिवार तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों की ओर उनका ध्यान बहुत कम जाता है। प्रदेश के पूर्वीय भाग के समाज में यह बात बहुत ही कम है। पश्चिम में खेत में हल चलाते समय स्त्री मोटी-मोटी रोटियों के साथ प्याज और बड़े गिलास में मट्ठा लेकर पहुँचती है और उसका पति खेत की मेड़ पर प्याज से रोटी खाकर मट्ठा पी लेता है और प्रसन्न हो जाता है। मियाँ-बीवी की इस छोटी सी दुनिया के सुखी जीवन का यही रूप है। पूर्वीय प्रदेश में इस प्रकार की व्यक्तिनिष्ठता की निन्दा की जाती है।

पूरब और पश्चिम के जीवन का एक विशेष अन्तर यह है कि पूरब में बौद्धिक-प्रतिभा, त्याग, तपस्या और परोपकार को अधिक प्रोत्साहन मिलता है और पश्चिम में शारीरिक-कार्य और अर्थ-लिप्सा को प्रोत्साहन दिया जाता है। देश को स्वतंत्र करने में पूरब का अधिकांश हाथ है जब कि पश्चिम के लोग अधिकतर अपनी खेती में ही लगे रहे। बलिया की भूमि ने पं० रघुनाथ शास्त्री, डाक्टर गणेशी प्रसाद, अवध उपाध्याय, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, डा० उदयनारायण तिवारी, पं० बलदेव उपाध्याय, डा० भगवत शरण उपाध्याय, कुलदीप नारायण राय 'झड़प' आदि विद्वानों को पैदा किया। मालवीय जी, नेहरू जी, डा० अंसारी, डा० सम्पूर्णानन्द, आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण सरीखे त्यागी तथा विचारक इसी भाग में पैदा हुये क्योंकि इस भाग में बौद्धिक विकास पर अधिक बल दिया जाता है। आज भी जगन्नाथ सिंह, चन्द्रशेखर सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजनारायण सिंह ऐसे युवक नेता इसी भाग के हैं। डा० राम मनोहरलोहिया श्री लालबहादुर शास्त्री, डा० भगवान् दास, श्री प्रकाश जी, पं० कमला पति त्रिपाठी, श्री टी० एन० सिंह आदि को जन्म देनेवाला यही भूभाग है। सर्वप्रथम अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध स्वतंत्रता की लड़ाइयां इसी प्रदेश में लड़ी गई। हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, गयुप्रवर्तक कवि इधर ही उत्पन्न हुए। इन्हीं महापुरुषों के जीवन की छाप यहां के समाज पर है। सच्चा मनुष्य वही है जो समाज के लिये कमाता है केवल अपने लिये नहीं।

पाहन नौका

"उनकी (रंगा मांझी की) कथन-भंगिमा, स्वर-निपात, तथा सादे भोजपुरी मुहावरों की चित्रमयता और सटीकता, उनकी 'जानदार-पानीदार' भाषा को सुन कर मुझे अपनी खड़ी बोली एक अक्षम भाषा—सी लगने लगती है। खड़ी बोली के लेखक तो डाँड़-पतवार-लग्गी तीन शब्दों के सहारे सारा नौकानयन वर्णित कर डालते हैं। भोजपुरी आदि लोक भाषाओं में एवं बंगला आदि पड़ोसी भाषाओं में नौका और नौकानयन सम्बन्धी तथा समुद्र और नदी सम्बन्धी बहुत से शब्द हैं, जिनका निस्संकोच आहरण किये बिना खड़ी बोली की क्षमता का विकास नहीं हो सकता है। व्याकरण की जकड़-बन्दी को अस्वीकार करके ऊपर से संस्कृत के धरातल से तथा नीचे से लोक-धरातल से इस भाषा की अभिव्यक्ति-क्षमता को और समृद्धतर करना होगा। मुझ पढ़े-लिखे आदमी को अपने गांव के लोहारों, कुम्हारों, ठठेरों, राज-मिस्त्रियों, चमारों, डोमों, बहेलियों, नटों, भाटों, कहारों, नटुओं, कबूतरबाजों, जुआड़ियों और छैलछबीलों से भाषा सीखनी होगी अन्यथा मेरे अपने लेखन का जगन्नाथी रथ एक पग भी आगे नहीं बढ़ेगा। इसे मैंने बार-बार अनुभव किया है।"

कुबेरनाथ राय

('निपाद बांसुरी' प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, पृ०—५५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जन अधिकारों की सुरक्षा

लोकतंत्र में ही सम्भव है

किन्तु

लोकतंत्र का प्रासाद

समाजवादी आर्थिक व्यवस्था के आधार पर ही

खड़ा किया जा सकता है

अपने स्वातंत्र्य–युद्ध की अवधि में हमने

इन्हीं सिद्धान्तों से प्रेरणा ग्रहण की थी

और आजादी के बाद

राजनीतिक संगठनों द्वारा इन्हें विधि सम्मत भी बनाया गया

दुर्भाग्य से आज इन मूल्यों और सिद्धान्तों की

अवमानना के लिये लोगों को उभाड़ा जा रहा है

हमें इन दुष्प्रयासों को असफल बनाना ही होगा

इसके लिये आवश्यक है कि हम

अपना आर्थिक--आधार सुदृढ़ बनायें तथा

प्रदेश सरकार द्वारा प्रदत्त समुन्नत बीज, खाद, सिंचाई, कृषि यंत्र

आदि की सुविधाओं का लाभ उठाकर

कृषि उत्पादन बढ़ायें

तभी हम

समाजवादी लोकतंत्र का स्वप्न साकार कर सकेंगे

और

जनता में दृष्टिगत निराशा, विक्षोभ एवं उत्तेजना के

कारणों का निराकरण कर सकेंगे

सूचना विभाग

द्वारा प्रसारित

(उ० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुसलमान शासकों की हिन्दी नीति

डा० शिवमंगल राय, एम० ए०, पी० एच०'डी०
हावड़ा

प्रथम मुसलमान आक्रामक मुहम्मद बिन कासिम ने सन् ७११ में सिन्ध प्रदेश को जीतकर वहां की शासन व्यवस्था को अपने हाथ में ले लिया। अरबी उसकी अपनी भाषा थी; किन्तु वहां के पूर्व के राज-दरबारी इस अरबी भाषा से पूर्ण अनभिज्ञ थे। ऐसी स्थिति में अरबी को दरबार की भाषा बनाने का कार्य अतिशय कठिन ही नहीं, असम्भव भी था क्योंकि पूर्व के सभी राज-कर्मचारियों को निकाल कर उनके स्थान पर अरबी भाषी लोगों को नियुक्त करके शासन के कार्य को व्यवस्थित रूप में चलाते रह सकना सम्भव न था। साथ ही, उतनी बड़ी संख्या में सिन्ध की शासन-व्यवस्था से परिचित अरबी भाषी लोगों को प्राप्त कर पाना भी असम्भव था। अतएव, उसने शासन की सुव्यवस्था एवं राज्य के स्थायित्व को दृष्टि में रखकर दरबार की भाषा में परिवर्तन करना सर्वथा अनुपयोगी समझा। इसी की प्रतिक्रिया में उसने पूर्व मंत्री को राज्य का कार्य सौंप कार्यालय में ब्राह्मण कर्मचारी नियुक्त किये, जिससे कार्यालय का कार्य यथारीति हिन्दी में होता रहा*। स्पष्ट है कि मु० बिन कासिम ने हिन्दी को पूर्ववत् दरबार की भाषा बनाये रखा किन्तु भाषा के अर्थ में वह हिन्दी शब्द खड़ीबोली हिन्दी का पर्याय नहीं था उसका प्रयोग तो हिन्द की भाषा के अर्थ में ही किया जाता था। इतना अवश्य है कि मु० बिन कासिम ने यहां की दरबारी भाषा को वही महत्त्व दिया जिसे उसके पूर्व के सिन्ध के शासकों ने प्रदान किया था।

मु० बिन कासिम की सिन्धविजय के समय वहां के लोगों के दैनिक व्यवहार और सम्पर्क की भाषा भी हिन्दी थी। राज्य के स्वामित्व एवं अपने व्यापारिक उत्कर्ष को दृष्टि में रख कर मुसलमानों ने हिन्दी समझना, बोलना, पढ़ना और लिखना आरम्भ कर दिया क्योंकि ऐसा करके ही वे विजित लोगों की भाषा के माध्यम से उनमें घुल-मिलकर अपना अधिकतम हित-साधन कर सकते थे। स्पष्ट है कि मुहम्मद बिन कासिम के राजत्व-काल में दरबारी भाषा की भांति सम्पर्क की भाषा भी हिन्दी (हिन्द की भाषा) ही बनी रही। कालान्तर में तो

* गंगा प्रसाद सिंह, हिन्दी के मुसलमान कवि, प्राक्कथन, पृष्ठ–२३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुसलमानों ने हिन्दी का अध्ययन साहित्य की दृष्टि से भी करना आरम्भ कर दिया । अतएव, मुसलमान शासकों एवं नवाबों की हिन्दी नीति को स्पष्टरूप में समझने के लिए राजकाज की भाषा, और साहित्य की भाषा शीर्षकों के अन्तर्गत वस्तुस्थिति का अध्ययन करना ही अपेक्षित है ।

राज--काज की भाषा

भारतवर्ष में मुसलमानों के आने के पहले इस देश की भाषा और लिपि नागरी वा नागरी के रूपान्तर अक्षरों वाली थी। उसी के द्वारा राजा और प्रजा सबका काम चलता था* । मु० बिन कासीम ने इसी हिन्दी (हिन्द की भाषा) को पूर्ववत् राज-काज की भाषा के पद पर आसीन रखा। संवत् १०७० (सन् १०१३) में महमूद गजनवी ने हिन्दुओं से पंजाब का राज्य लिया। उसने भी वहां का राजकार्यालय हिन्दी में और हिन्दुओं के हाथों में रहने दिया* । महमूद गजनवी का यह कार्य पंजाब में ठीक वैसा ही रहा जैसा मु० बिन कासिम का कार्य सिन्ध में। महमूद गजनवी के इस दृष्टिकोण से राजकाज की भाषा के पद पर प्रतिष्ठित हिन्दी पर आघात नहीं हुआ। मु० बिन कासिम के काल से चलने वाले हिन्दीअनुराग का क्रम महमूद गजनवी के काल से पंजाब में चलने लगा । समय व्यतीत होता गया। सिन्ध और पंजाब में मुसलमानों की पीढ़ी पर पीढ़ी गुजरती गई। भारतभूमि ऐसे मुसलमानों की मातृ-भूमि हो गई। फिर तो मुसलमानों द्वारा हिन्दी के विरोध का प्रश्न ही न रह गया। सं० १२५० (सन् ११९३) में जब शहाबुद्दीन गोरी ने दिल्ली का राज्य लिया, तो उसने भी ऐसा ही किया* । अर्थात, मुहम्मद गोरी ने भी राज-काज की भाषा हिन्दी को ही रहने दिया।

हिन्दी साहित्य के इतिहास के साक्ष्य से विदित है कि काल-भेद और स्थान-भेद के कारण मु० बिन कासिम, महमूद गजनवी, मुहम्मद गोरी के काल की हिन्दी, हिन्द की भाषा के अर्थ में एक होकर भी तथ्य की दृष्टि में एक

---

* सरस्वती, प्रथम भाग, सन् १९०० (निबन्ध लेखक, पण्डित किशोरी लाल गोस्वामी, पृष्ठ--१२३ ।

* गंगा प्रसाद सिंह, हिन्दी के मुसलमान कवि, प्राक्कथन, पृष्ठ--२३ ।

* वही, पृष्ठ--२३ ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं थी। ६वीं –१० वीं शती में सिन्ध, पंजाब और दिल्ली में प्राकृत भाषा की शाखाएँ प्रचलित थीं और मुसलमानों ने हिन्द की भाषा के अर्थ में प्रत्येक को हिन्दी कहा। ग्यारहवीं शती में सिन्ध, पंजाव और दिल्ली में शौरसेनी अपभ्रंश की जिस शाखा का दिल्ली और उसके आस-पास के क्षेत्र में प्रचलन हुआ, उसे ही कालान्तर में खड़ी बोली हिन्दी कहा गया। मुहम्मद गोरी के काल में दिल्ली को मुसलमान शासन की राजधानी बनने का गौरव मिला और उसके बाद दिल्ली का महत्त्व उत्तरोत्तर बढ़ता रहा। इसकी प्रतिक्रिया में दिल्ली और उसके आस-पास की भाषा-खड़ी बोली हिन्दी का महत्त्व बढ़ने लगा और हिन्दी शब्द का प्रयोग, व्यापक अर्थ में हिन्द की भाषा होकर भी, रूढ़ अर्थ में खड़ी बोली हिन्दी के लिए किया जाने लगा। किन्तु, इससे मुसलनान-शासकों की हिन्दी के प्रति अनुराग की नीति में कोई अन्तर न था क्योंकि मुहम्मद बिन कासिम और महमूद गजनवी के काल में भी राज दरबार की भाषा के रूप में उसी भाषा को ग्रहण किया गया, जिसे उन लोगों ने हिन्द की भाषा के अर्थ में ग्रहण किया। कालान्तर में इस हिन्दी शब्द का प्रयोग खड़ी-बोली हिन्दी के अर्थ में किया जाने लगा।

मुहम्मद गोरी के काल में और उसके बाद भी सुदीर्घकाल तक मुसलमान शासकों की हिन्दीनीति में परिवर्तन नहीं हुआ। अमीर खुसरो (१२५३-१३२५ ई०) अरबी और फारसी के ही नहीं, हिन्दी और हिन्दुस्तान के भी महान् प्रेमी थे। खुसरो के इस रूप को जानकर भी मुसलमान अमीरों और सम्राटों ने उनका अतिशय सम्मान किया। स्पष्ट है कि जिन्होंने ऐसा किया, उनके हृदय में भी हिन्दी के प्रति अनुराग अवश्य रहा, अन्यथा वे खुसरों की हिन्दी रचनाओं पर प्रतिबन्ध लगाते अथवा उन्हें सम्मान-च्युत कर देते।

अमीर खुसरों को बुगरा खां (बलबन का छोटा बेटा), सुल्तान महम्मद (बलबन का बड़ा बेटा), अमीरअली और खानेजहां जैसे हातिम अमीरों ने पुरस्कृत और उच्च पदों पर सम्मानित किया था। कैकुबाद, जलालुद्दीन खिलजी कुतुबुद्दीन मुबारक शाह और गयासुद्दीन ने भी उनका अतिशय सम्मान किया।* इससे विदित है कि गयासुद्दीन तुगलक काल तक के मुसलमान शासकों

* साप्ताहिक हिन्दुस्तान, १४ मई, १९७२ (निबन्ध लेखक, जियाअहमद सिद्दीकी) पृष्ठ–२६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने हिन्दी के प्रति अनुराग की नीति को बनाये रखा।

मुसलमानी शासन-काल में प्रथम बार सिकन्दर लोदी ने धार्मिक पक्षपात के कारण हिन्दुओं को फारसी पढ़ने-लिखने के लिए बाध्य किया; किन्तु इतने पर भी दरबार की भाषा 'हिन्द' ही बनी रही। सम्राट अकबर के शासनकाल के पूर्व तक राज-कार्यालय में हिन्दी का आधिपत्य भली-भांति बना रहा। संवत् १६३८ (सन् १५८१) में सम्राट अकबर के प्रधान-मंत्री राजा टोडरमल ने अन्य अनेक सुधारों के अतिरिक्त हिन्दी राज-कार्यालय को ईरानी परिपाटी के अनुसार फारसी भाषा और लिपि में परिवर्तित कर दिया।* शम्सुल्उल्मा मौलाना मुहम्मद हुसेन 'आजाद' ने भी लिखा है कि "उस समय (सन् १५८१ ई०) तक बादशाही दफ्तर कहीं हिन्दी में था, कहीं फारसी में; कहीं महाजनी बही-खाता था, कहीं इरानी ढंग का। तिस पर भी सभी जगह कागजों के असंख्य टुकड़े पड़े हुए थे। न कोई विभाग था, न कोई व्यवस्था थी। ये बुद्धिमता की मूर्तियां (टोडरमल, फैजी, हकीम अब्दुल फतर, हकीम हमाम, मीर फतहउल्ला शीराजी, निजामुद्दीन बख्शी आदि) मिल कर बैठीं, कमेटियां हुई, वाद-विवाद हुए। प्रत्येक विषय सिद्धान्तों और नियमों से बँध गया और निश्चय हुआ कि अकबर के समस्त राज्य में एक ही नियम प्रचलित हो।* राजकाज की भाषा के सम्बन्ध में निर्णय किया गया कि सभी राज-कार्य हिन्दी में न करके फारसी में किये जांय।*

इस प्रकार राजा टोडरमल के प्रयास से सन् १५८१ में राज-काज की भाषा के पद पर 'हिन्दी' के स्थान पर 'फारसी' प्रतिष्ठित हुई। उसके बाद तो 'फारसी' सभी मुसलमान शासकों एवं नवाबों के काल में राज-काज की भाषा के पद पर सदा सम्मानित रही। औरंगजेब जैसे कट्टर सुन्नी मुसलमान शासक से, जिसने ९ अप्रैल, १६६८ की यह खबर पाकर कि ठट्टे—मुल्तान के सूबों और खास कर बनारस के लोग मदरसे बनाकर अपनी किताब पढ़ाते हैं, नांजिमों को हुक्म दिया कि "उनके मन्दिर और मदरसे गिरवा दिये जायँ और उनकी पढ़ने पढ़ाने की रस्में मिटा दी जायँ।" फारसी "के राज-काज की भाषा के प्रतिष्ठित पद

---

* गंगाप्रसाद सिंह, हिन्दी के मुसलमान कवि, प्राक्कथन, पृ० २३।
* अनु० रामचन्द्र वर्मा, अकबरी दरबार (पहला भाग) पृष्ठ ७७।
* शेषमणि त्रिपाठी, अकबर की राज्य-व्यवस्था, पृष्ठ २१७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से च्युत होने का कोई प्रश्न ही न था। बहादुर शाह, जहांदार शाह, फर्रुखसियर, मुहम्मद शाह, अहमद शाह और बहादुर शाह द्वितीय के काल तक मुगल साम्राज्य छिन्न-भिन्न होते होते सदा के लिये समाप्त हो गया। इन सबके ही राजत्व-काल में स्थितियां इतनी उलझन पूर्ण और विनाशात्मक बनी रहीं, कि किसी का भी ध्यान भाषा-नीति के परिवर्तन की ओर जाना सम्भव न हो सका। इनके शासन-काल में समय-समय पर मुगल साम्राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के अमीरों ने स्वयं को स्वतंत्र एवं अपने क्षेत्र का नवाब घोषित कर दिया। इन नवाबों के शासनकाल में भी 'फारसी' राज-काज की भाषा के प्रतिष्ठित पद पर बनी रही। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सन् १७५७ में प्लासी के युद्ध में जिस अलीवर्दी खां के उत्तराधिकारी एवं तत्कालीन नवाब सिराजुद्दौला को षड्यंत्र के द्वारा परास्त किया, उसके काल में भी 'फारसी' राज-काज की भाषा के सम्मान-जनक पद पर अलंकृत रही।

साहित्य की भाषा

मुसलमान विजेताओं ने आरम्भ (७११ ई०) से ही राज्य के स्थायित्व और व्यापार के उत्कर्ष की दृष्टि से तत्कालीन प्रचलित भाषा 'हिन्दी' (हिन्द की भाषा) सीखने की ओर ध्यान दिया। ११वीं शती के अन्त तक कतिपय मुसलमानों ने 'हिन्दी' में कविता लिखना भी आरम्भ कर दिया। ख्वाजामसूद-इ-साद-ब-सालम (निधन, ११३१ ई०) पंजाब के निवासी थे। उन्होंने 'हिन्दी' में कुछ कविताओं और एक सम्पूर्ण दीवान (काव्य-सग्रह) की रचना की।* इसके आधार पर यह सहज ही कहा जा सकता है कि उस काल के मुसलमानों में हिन्दी-साहित्य के प्रति अनुराग था।

शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी ने सन् ११९३ में दिल्ली पर विजय प्राप्त की। उसके बाद मुसलमानों के नियमित शासन का आरम्भ हुआ। राजधानी बन जाने पर दिल्ली का महत्त्व बढ़ने लगा। सिन्ध और पंजाब में बसे मुसलमान भी दिल्ली जाने पर दिल्ली बसने लगे। उस समय दिल्ली और उसके आस-पास जो भाषा प्रचलित थी और जिसे कालान्तर में खड़ी बोली हिन्दी कहा गया,

---

* डा० शारदा देवी वेदालंकार, डेवलपमेण्ट आफ हिन्दी प्रोज लिटरेज, पृ० १७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुसलमानों ने उस भाषा का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया। मुसलमानों का यह अध्ययन क्रम अल्तमश, रुकुनुद्दीन, रजिया; नासिरुद्दीन, बलबन और जलालुद्दीन खिल्जी के काल में पूर्ववत् चलता रहा। अलाउद्दीन खिल्जी के काल में एक मुसलमान विद्वान् फखरुद्दीन मुबारक गजनवी ने फारसी-हिन्दी का एक शब्द-कोश प्रस्तुत किया।*

ख्वाजा मसूद-ए-साद-ब-सालम तथा फखरुद्दीन गजनवी रचनाओं की उपलब्धि के बाद अमीर खुसरो (सन् १२५३-१३२५) खड़ी बोली हिन्दी के आदि कवि तो नहीं रह जाते; किन्तु उनकी उदात्त प्रतिभा, कवित्व-शक्ति, एवं उनके साहित्यिक अवदान के महत्त्व को दृष्टि में रखकर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के वैराट्य को घटाया नहीं जा सकता। बुगरा खां, सुल्तान मुहम्मद, अमीर-अली और खानेजहां जैसे अमीरों तथा कैकुबाद, जलालुद्दीन खिल्जी, अलाउद्दीन खिल्जी, कुतुबुद्दीन मुबारक शाह और गयासुद्दीन तुगलक जैसे सुल्तानों के दरबार में अत्यधिक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त किया। उनके भाषा-ज्ञान तथा साहित्यसृजन के सम्बन्ध में प्रोफेसर जियाउद्दीन सिद्दीकी बदायूँनी ने अपने निबन्ध 'हमारे चमन का यह राजदार होगा' में लिखा है कि तुर्की उनकी जाति की भाषा थी, फारसी में ईरान वालों के समत्त थे, अरबी पर उनका पूर्ण अधिकार था, उर्दू के तो वह आदि, स्रष्टा ही समझे जाते हैं—और इसमें तो शक ही नहीं कि वह उर्दू साहित्यकारों के आदिम युग से सम्बद्ध थे। हिन्दुस्तान की भाषाओं में हिन्दी की पोर-पोर से वाकिफ और संस्कृत से भी अच्छा परिचय रखते थे।—खुसरों के फारसी कलाम में कई लाख शेर थे। कहते हैं कि हिन्दी पद इससे भी अधिक थे। मौलाना जामी उनकी पुस्तकों की संख्या ९९ और अमीर अहमद राजी १०० से अधिक बतलाते हैं। शेर ४ या ५ लाखके लगभग हैं। कहा जाता है कि उनका हिन्दी-कलाम फारसी (कलाम) के बराबर या उससे अधिक था, जिसका बड़ा हिस्सा नष्ट हो गया। कुछ गीत और पहेलियां वगैरह जो संदिग्ध हैं, सर्व-सधारण की जबान पर हैं।*

जियाउद्दीन बरनी, अमीर खुसरो का समकालीन और मित्र था। उसने भी अपने इतिहास ग्रंथ 'तारीखे-फीरोज शाही, में लिखा है कि गद्य तथा पद्य के विद्वान एक या दो कलाओं में दक्ष होते हैं किन्तु अमीर खुसरों समस्त कलाओं

* साप्ताहिक हिन्दुस्तान वर्ष २३, अंक ३३, दि० १४ मई १९७२ पृष्ठ २९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में दक्ष था। कविता की भिन्न-भिन्न कलाओं में इतना सुदक्ष पिछले समय में कोई भी न नहीं हो सका है और न भविष्य में कयामत तक हो सकेगा। अमीर खुसरो ने गद्य तथा पद्य में एक पूरे पुस्तकालय की रचना कर दी है।* स्वयं बरनी के सम्पूर्ण इतिहास 'तारीखे-फीरोजशाही' की भाषा को अतहर अब्बास रिजवी ने भारतीय फारसी मानते हुए अपने अनूदित ग्रंथ खलजी-कालीन भारत के अनूदित मूल ग्रंथों की समीक्षा में लिखा है कि ईरानी के लिए वह विदेशी भाषा के तुल्य है। हिन्दी शब्दों के प्रयोग के अतिरिक्त उसकी अभिव्यंजना शैली भी भारतीय है और नव-निर्मित मध्य-कालीन भारतीयसंस्कृति एवं समाज की परिचायक है। स्पष्ट है कि उस समय तक मुसलमान 'हिन्दी' से ही परिचित नहीं, भारतीय समाज और संस्कृति से भी इतने प्रभावित हो चुके थे कि विदेशी यात्री बरनी भी अपनी भाषा को उस प्रभाव से मुक्त नहीं रख सका। फर खुसरो का तो जीवन ही हिन्दुस्तान में बीता था और हिन्दुस्तान के मुसलमान दरबारों में ससम्मान रहकर साहित्यका अध्ययन सृजन भी किया था अतः उसके हिन्दुस्तान के प्रति प्रेम और हिन्दी साहित्य सृजन में आशंका केलिए अवकाश ही नहीं रह जाता।

अमीर खुसरो ने नौह-सिपेहर की रचना सुल्तान कुतुबुद्दीन मुबारक शाह के आदेशानुसार सन् १३१८ में की। यह नौ-सिपेहर (अध्याय) में विभाजित है। 'यह इस्लामिक रिसर्च एसोसियन' द्वारा सन् १९५० में प्रकाशित हो चुकी है।* इस पुस्तक के तीसरे खिपेहर में स्वयं अमीर खुसरो ने लिखा है कि हिन्दुस्तान स्वर्ग के समान है। यहां की जलवायु खुरासान से कहीं अच्छी है। यहां साल भर हरियाली तथा फूलों के कारण बहार रहती है। यहां के अमरूद तथा अंगूर की उपमा नहीं दी जा सकती। फिकह के अतिरिक्त हिन्दुस्तान में सभी प्रकार के ज्ञान तथा दर्शन-शास्त्र पाये जाते हैं। यहाँ का ब्राह्मण विद्वत्ता में अरस्तू के समान होता है। तर्क-शास्त्र, ज्योतिष, गणित तथा पदार्थ-विज्ञान में हिन्दुस्तान के विद्वान् बहुत बढ़े हुए हैं। यहां बहुत बड़े-बड़े विद्वान् ब्राह्मण पाये जाते हैं किन्तु अभी तक किसी ने उनसे पूर्णतया लाभ नहीं उठाया है। मैंने उन लोगों से कुछ शिक्षा ग्रहण की है, अतः मैं उन लोगों

* अनु० सैयद अतहर अब्बास रिजवी; खलजी कालीन भारत, पृष्ठ १११

* वही टिप्पणी, पृष्ठ १७७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महत्व समझता हूँ *

अमीर खुसरो ने हिन्दुस्तान की विशेषताओं का प्रमाण प्रस्तुत करते हुये आगे लिखा है कि प्रथम यह कि इस देश के प्रत्येक स्थान पर अत्यधिक ज्ञान पाया जाता है। दूसरे स्थान के लोगों को हिन्दुस्तान के ज्ञान तथा कला का पता भी नहीं। द्वितीय यह कि हिन्दुस्तान वाले सभी भाषाएं बड़ी कुशलता से बोल सकते हैं किन्तु संसार के अन्य भाषा वाले हिन्दुस्तान की भाषा नहीं बोल सकते। खिता के निवासी मुगल, तुर्क तथा अरब हिन्दी भाषा में वार्ता नहीं कर सकते। हम लोग बड़ी कुशलता से इनकी भाषा बोल सकते हैं। इससे हमारी बुद्धि तथा अन्य देश वालों की ज्ञान-शून्यता का पता चलता है। तीसरा प्रमाण ऐसा है जिसे बुद्धि को स्वीकार करना ही पड़ेगा। वह इस प्रकार है कि प्रत्येक ओर से कलाकार विद्या तथा कला की खोज में हिन्दुस्तान आते रहते हैं किन्तु हिन्दुस्तान से कोई ब्राह्मण किसी स्थान पर विद्याध्ययन के लिये कभी नहीं गया। यह बात सभी को ज्ञात है कि अबूमाशर जो कि ज्योतिष-विद्या में बड़ा ही दक्ष था, भारतवर्ष में १० वर्ष तक रहा और प्राचीन नगर बनारस में ज्योतिष का अध्ययन करता रहा (१६६-१६७) उसने जो कुछ भी लिखा है, वह हिन्दुओं से सीख कर लिखा है। चौथा प्रमाण यह है कि हिन्दसे (गणित) का ज्ञान संसार में हिन्दुस्तानियों के अतिरिक्त किसी का न था। शून्य का ज्ञान सर्व प्रथम हिन्दुओं को ही प्राप्त हुआ। गणित का कोई भाग भी शून्य के ज्ञान के बिना पूर्णतया नहीं प्राप्त हो सकता। हिन्दसा शब्द हिन्द तथा आसा से मिलकर बना है। आसा ब्राह्मण ने इस ज्ञान का आविष्कार किया। यूनानियों ने भी यह ज्ञान इन्हीं से प्राप्त किया। समस्त दार्शनिक इस प्रकार उस ब्राह्मण के शिष्य हैं किन्तु वह किसी का चेला नहीं। पांचवां प्रमाण यह है कि बुद्धिमत्ता की पुस्तक 'कलीला व 'दिमना' की रचना प्राचीन भारत में हुई। इसी से संसार की अन्य भाषाओं फ़ारसी, तुर्की, ताजीक तथा दरी में अनुवाद हुए। समस्त दार्शनिक इसी ग्रंथ द्वारा शिक्षा प्राप्त करते हैं।

छठा प्रमाण यह है कि शतरंज के खेल का आविष्कार जिससे मनुष्य अपने कष्टों को भूल जाता है, भारतवर्ष में ही हुआ।··· सातवां प्रमाण यह है कि हिन्दसा, दिमना तथा शतरंज संसार वालों ने हिन्दुस्तान वालों ही से सीखा

---

* अनु० सैयद अतहर अब्बास रिजवी, खिलजी कालीन भारत, पृष्ठ—१७८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आठवां प्रमाण यह है कि भारतवर्ष के संगीत की समानता संसार के किसी भाग में नहीं हो सकती।...संसार के भिन्न-भिन्न भागों से लोगों ने आकर यहां संगीत की शिक्षा ग्रहण करने का प्रयत्न किया किन्तु वर्षों के प्रयास पर भी उन्हें यहां के किसी ताल स्वर का ज्ञान न हो सका। नवां प्रमाण यह है कि यहां का संगीत केवल मनुष्यों को ही नहीं, वरन् पशुओं को भी उत्तेजित कर देता है। मृग संगीत से कृत्रिम निद्रा में ग्रस्त हो जाते हैं (१७०-१७१) और बिना धनुष-बाण के शिकार हो जाते हैं।...दसवां प्रमाण यह है कि कविता द्वारा इस प्रकार जादू करने वाला खुसरो हिन्दुस्तान का निवासी है। उसके समान कोई भी कवि नहीं और वह कुतुबुद्दीन मुबारक शाह की प्रशंसा करता है।*

हिन्दुस्तान की तत्कालीन प्रचलित प्रमुख भाषाओं के सम्बन्ध में खुसरो ने अपनी उसी पुस्तक के तीसरे ही अध्याय में आगे लिखा है कि मुझे भिन्न-भिन्न भाषाओं का ज्ञान है, मैं उन्हें समझ सकता हूँ। अरबी का व्याकरण बड़ा ही उत्कृष्ट है, कुरान भी अरबी भाषा में है। तुर्की भाषा में भी राजकीय कर्मचारियों के लिये एक उत्तम व्याकरण वर्तमान है। फारसी भाषा बड़ा मीठी है किन्तु इसका कोई व्याकरण नहीं। मैं स्वयं एक व्याकरण की रचना करना चाहता था किन्तु सभी लोग फारसी समझते हैं, अतः व्याकरण की रचना से कोई लाभ नहीं। अन्य भाषाओं के समान हिन्दुस्तान में भी प्राचीन काल से हिन्दवी बोली जाती थी किन्तु गोरियों तथा तुर्कों के आगमन के उपरान्त लोगों ने फारसी भाषा का भी ज्ञान प्राप्त करना प्रारम्भ कर दिया। हिन्दुस्तान के भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। सिन्धी, लाहौरी, काश्मीरी, कुबरी, धीरसमुद्री, तिलंगी, गूजरी, भाबरी, गौरी, बंगाली; तथा अवधी; भारत वर्ष के भिन्न-भागों में बोली जाती हैं। देहली के आस-पास हिन्दुवी भाषा बोली जाती है जो कि प्राचीन काल से प्रचलित है। इसके अतिरिक्त एक अन्य भाषा है जिसका प्रयोग केवल ब्राह्मण करते हैं। इसका सर्व साधारण को कोई ज्ञान नहीं। इसका नाम संस्कृत है। समस्त ब्राह्मणों को भी इसका पूर्ण ज्ञान नहीं है। अरबी के समान इस भाषा का भी कठिन व्याकरण है। चार पवित्र ग्रंथ इसी भाषा में लिखे गये हैं। वे वेद कहलाते हैं।

* अनु० सैयद अतहर अब्बास रिजवी, खलजी कालीन भारत; पृष्ठ १७६-१८०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
यह (संस्कृत) अरबी से कम तथा फारसी से बढ़ कर है।*

खुसरो के सम्बन्ध में इतिहास लेखकों के विवरण तथा स्वयं खुसरो के आत्मकथन से हिन्दुस्तान के प्रति असीम प्रेम तथा हिन्दुस्तान की विविध भाषाओं के ज्ञान और हिन्दी के प्रति अनुराग से उनकी रचनाओं की निश्चित संख्या का ज्ञान न होने पर भी यह विश्वास तो करना ही पड़ता है कि उन्होंने प्रचुर साहित्य का सृजन किया। साथ ही यह भी कि गयासुद्दीन तुगलक के काल तक के मुसलमान शासकों की राज-काज की भाषा 'हिन्दी' थी और अमीर खुसरो का काल आते-आते मुसलमानों ने हिन्दी के अध्ययन के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति कर ली थी। 'हिन्दी' सम्पर्क भाषा बन चुकी थी और इस 'हिन्दी' में मुसलमानों पर्याप्त मात्रा में कविताएं भी लिखी जाने लगी थीं। शासन एवं निवास के स्थायित्व तथा व्यापारिक उत्कर्ष और सांस्कृतिक सम्पर्क के लिए मुसलमानों का 'हिन्द' के प्रति अधिकतर अनुराग बढ़ने लगा था। उनके इन प्रयासों की प्रतिक्रिया में 'खड़ी बोली हिन्दी' पूर्वापेक्षा पर्याप्त परिष्कृत हो गई। इस सन्दर्भ में तत्कालीन खड़ी बोली हिन्दी के स्वरूप के अवलोकनार्थ अमीर खुसरो की कतिपय पंक्तियों का उद्धरण प्रस्तुत कर देना आवश्यक है।

पहेली—वाला था जब सबको भाया। बढ़ा हुआ कुछ काम न आया।
खुसरो कह दिया उसका नांव। अर्थ करो नहिं छोड़ो गांव॥ दीया॥*

मुकरी—अति सुन्दर जग चाहे जाको। मैं भी देख भुलानी वाको।
देख रूप भाया जो टोना। ए सखि साजन ना सखि सोना॥*

बिहाग-मत—बहुत रही बाबुल घर दुलहिन चल तोरे पी ने बुलाई।
बहुत खेल खेली सखियन सों अंत करी लरिकाई॥
न्हाय धोय के वस्तर पहिरे सभहीं सिंगार बनाई।
बिदा करन को कुटुम्ब सब आये सगरे लोग लुगाई॥*

'खालिक बारी' अमीर खुसरो की एक बहु चर्चित रचना है। 'शोधकर्ताओं का कहना है कि वह (खालिक बारी) अमीर खुसरो की नहीं, बल्कि शेख सादी

---

* अनु० सैयद अतहर अब्बास रिजवी, खलजी कालीन भारत, पृष्ठ—१८०।
* गंगा प्रसाद सिंह, हिन्दी के मुसलमान कवि, पृ० ४
* वही, पृ० ५ * वही, पृ० ६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की हिन्दी (दकनी) की रचना है। शेर ४—५ लाख के लगभग हैं।* इस सन्दर्भ में प्रो० बदायूंनी से सहमत होने में एक कठिनाई है। उन्होंने न तो शोधकर्त्ताओं का और न ही शोध-ग्रंथों का नामोल्लेख किया है। साथ ही, खुसरो के नाम से 'खालिक बारी' नामक पद्यबद्ध फारसी हिन्दी पर्याय-कोश' की रचना का प्रकाशन भी हो गया है। अतः जब तक यह प्रमाणित नहीं हो जाता कि 'खालिक बारी' शेख सादी की रचना है, तब तक अमीर खुसरो को इसका रचयिता न मानना उनके साथ अन्याय करना है। गंगाप्रसाद सिंह ने 'हिन्दी के मुसलमान कवि' (पृ० ७) में 'खालिक बारी' को अमीर खुसरो की ही रचना माना है और उसके आरम्भ की निम्नलिखित पंक्तियों को उद्धृत किया है—

खालिक बारी सिरजन हार। वाहिद एक बिदा कर्तार॥
रसूल पैगम्बर जान बसीठ। यार दोस्त बोले जो ईठ॥
इस्म अल्लाह खुदा का नांव। गर्मा धूप साया है छांव॥

अमीर खुसरो के बाद भी मुसलमान शासकों तथा साहित्यकारों ने 'हिन्दी' के प्रति अपना अनुराग पूर्ववत् अथवा उससे भी अधिक बनाये रखा। लोदी वंश के 'सुलतान सिकन्दर लोदी ने यद्यपि अपने धार्मिक पक्ष-पात के कारण हिन्दुओं को फारसी पढ़ने-लिखने के लिए वाध्य किया था तथापि वह अपने कार्यालय को हिन्दी छोड़ फारसी में नहीं कर सका था।* स्पष्ट है कि सिकन्दर लोदी के प्रयास से भी 'हिन्दी' के विकास पर ऐसा आघात न हो सका कि सामान्य मुसलमानों के हिन्दी के प्रति अनुराग में कमी आ जाय। प्रतिकूल इसके सोलहवीं शती के अन्त तक सभी भारतीय मुसलमान (विदेशी, देशज अथवा मिश्रित रक्त-वाले) फारसी को एक विदेशी भाषा के रूप में अनुभव करने लगे थे और देशज भाषाओं को पूर्णतया स्वीकार कर चुके थे और जब उन्होंने उत्तरी भारत में देश की भाषा में साहित्य की रचना करना आरम्भ किया, तब उन्होंने देशज भाषाओं में से सर्वाधिक प्रतिष्ठित ब्रजभाषा को ही चुना।*

---

* साप्ताहिक हिन्दुस्तान, वर्ष २३, अंक ३३, १४ मई १९७२, निबन्ध—'हमारे चमन का यह राज़दार होगा', लेखक— प्रो० जिया अहमद सिद्दीकी बदायूंनी पृ० २९।
* गंगाप्रसाद सिंह, हिन्दी के मुसलमान कवि, प्राक्कथन, पृष्ठ—२२।
* डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, भारतीय आर्य-भाषा और हिन्दी, पृष्ठ—२११।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबर ने सन् १५२६ में दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम लोदी को परास्त कर भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की। वह चार वर्ष (निधन, सन् १५३० ई०) तक ही सम्राट् के पद पर रह सका। यह चार वर्ष का काल भी शान्ति और सुशासन का नहीं, युद्ध और साम्राज्य-विस्तार के प्रयास का रहा। 'हिन्दी' के प्रति मुसलमान शासकों के हृदय में कितना अनुराग रहा, इसका अनुमान इस आधार पर सहज ही लगाया जा सकता है कि बाबर अपनी संपूर्ण व्यस्तताओं में संलग्न रहकर भी हिन्दी के ज्ञानार्जन में समर्थ हो गया। उसका हिन्दी के प्रति अनुराग इतना बढ़ा कि उसने निम्नांकित पद्य की रचना कर दी, जिसकी एक पंक्ति हिन्दी में और दूसरी पंक्ति अरबी, तुर्की और हिन्दी मिश्रित में है—

मुजका न हुआ कुज हवस-ए-मानक-ओ-मोती,
फुकरा हालीनबस बुल्गुसिदुर पानो-आ-रोती ॥ *

मुगल सम्राट बाबर के इसी दोहे को एजाज हुसेन ने उर्दू साहित्य का इतिहास (पृष्ठ ७) में उद्धृत करने के पूर्व इसकी भाषा को 'उर्दू' बतलाते हुए लिखा है कि उर्दू न ब्रजभाषा से बनी, न पंजाबी से, बल्कि मिली जुली --जबानों से असर लेते हुए खड़ी बोली पर उसने अपनी बुनियाद रखी। यह नयी जबान सबके मत चढ़ी होने की वजह से बराबर तरक्की करती रही, यहां तक कि जब बाबर हिन्दुस्तान आया तो यह जबान अपना एक रूप ले चुकी थी। मुमकिन है कि उसके साथ आने वाले शुरू--शुरू में इस जबान को न समझे हों। लेकिन बाबर ने अपनी दिलचस्पी का सबूत बहुत जल्द दे दिया।*

बाबर ने उपर्युक्त उद्धृत एक ही पद्य की रचना की जिसकी प्रथम पंक्ति की भाषा को हिन्दी और द्वितीय पंक्ति की भाषा को अरबी-तुर्की-हिन्दी मिश्रित भाषा कहा है। डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या ने और एजाजहुसेन ने इसी पद्य की भाषा को उर्दू कहा है दो विद्वानों की भाषा सम्बन्धी घोषणाओं में भिन्नता के कारण व्यापक भ्रम की सृष्टि हो सकती है जब कि तथ्य भ्रमात्मक नहीं है। दिल्ली के आस पास की जिस खड़ी-बोली हिन्दी का अरबी-फारसी-तुर्की शब्दों के मिश्रण से निकास (सन् ११९३) से दकन में भी होने लगा था, उसे ही उस समय 'हिन्द' की भाषा के अर्थ! 'हिन्दी' कहा जाता

* एजाज हुसेन, उर्दू साहित्य इतिहास, पृष्ठ ६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था। शाहजहानाबाद की स्थापना और पूर्व की अरबी-फारसी मिश्रित खड़ी बोली हिन्दी में अरबी-फारसी शब्दों का मिश्रण बहुत अधिक होने लगा, तो उसे 'उर्दू-ए-मुअल्ला 'अथवा' 'शाहजहानी उर्दू' कहा जाने लगा। खड़ी बोली हिन्दी में अरबी-फारसी शब्दों के इसी मिश्रण के आधार पर एजाज-हुसेन ने बाबर के दोहे की भाषा को 'उर्दू' कहकर सम्बोन्धित किया है। 'उर्दू' से भी उनका अभिप्राय उसी खड़ी-बोली हिन्दी से है जिसमें अरबी-फारसी और तुर्की शब्दों का मिश्रण हो। विभिन्न भाषाओं के शब्दों के प्रयोग से कोई मूल भाषा अपना अस्तित्व नहीं खो देती। वह तो अपने स्थान पर बनी रहती है। उसके एक नवीन रूप का विकास अवश्य हो सकता है। 'उर्दू' की स्थिति भी ऐसी ही है। वह कोई सर्वथा नवीन अथवा मूल भाषा नहीं मुसलमानों, मुख्यतः 'वली' और उनके शिष्य 'हातिम' द्वारा अरबी-फारसी के शब्दों के अधिक प्रयोग से निर्मित कृत्रिम भाषा है जिसका मूलाधार खड़ी-बोली हिन्दी ही है। अतः बाबर के एक मात्र दोहे की भाषा को अरबी-फारसी तुर्की शब्दों से युक्त खड़ी बोली हिन्दी ही कहना समीचीन है।

हुमायूं के काल में हिन्दी की स्थिति पूर्ववत् बनी रही। न तो उसने इसका विकास के लिए कोई प्रयास किया और न ही इस पर आघात ही क्योंकि वह अभी पंजाब में है, तो अभी सिन्ध में; और अभी बीकानेर-जैसलमेर के रेगिस्तान में पानी ढूंढता है, तो कहीं कोसों तक नाम को भी नहीं मिलता।...... अभी जोधपुर जाने का विचार है...।* ऐसी उद्विग्न मन-स्थितिमें रहने वाले हुमायूं बादशाह अच्छे लिखे-पढ़े थे, ज्योतिष विद्या खूब ही जानते थे। बड़े-बड़े ज्योतिषी उनके पास रहते थे। वे फारसी-भाषा के कवि भी थे, उनका दीवान (काव्य-संग्रह ग्रंथ) बादशाही किताबखाने में था।* हुमायूँ के विविध भाषा ज्ञान, ज्योतिष में पहुँच तथा चित्र कला के प्रति प्रेम पर प्रकाश डालते हुए 'हुमायूं नामा' की भूमिका में लिखा है कि फारसी भाषा के पूरे

* अनुवादक, रामचन्द्र वर्मा, अकबरी दरबार, पहला भाग, पृष्ठ २।
अनु०, मुंशी देवी प्रसाद, हुंमायूंनामा, पृष्ठ २३१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
पंडित और कवि थे, तुरकी तो उनके घर की ही बोली थी। अरबी भी पढ़े-लिखे थे और हिन्दी में भी बात–चीत कर सकते थे क्योंकि २० वर्ष की अवस्था में काबुल से यहाँ आये थे। ज्योतिषी में ती बहुत ही बड़े थे। अच्छे–अच्छे चित्रकारों को पास रखते थे, जिनसे अपने पुस्तकालय में अनेक प्रकार चित्र खिचवाते थे। किन्तु राजनीतिक संकटो के कारण हुमायूं अपने शासन–काल में हिन्दी को प्रोत्साहन न दे सका फिर भी हिन्दी में राज–काज होता और मुसलमानों का हिन्दी के प्रति पूर्ववत् अनुराग बना रहा। (क्रमशः)

शिक्षा में परिवर्तन

शिक्षा में ऐसे दर्शन को व्यापक एवं व्यवस्थित रूप से समाविष्ट किया जाए जो समन्वय तथा सहिष्णुता की गणित आदि शास्त्रों के समान सीख देता हो। यह असम्भव अथवा कल्पना मात्र नहीं है। भारत के दार्शनिक तत्त्वज्ञान अथवा व्यवहार शास्त्र की अंगणित विचार सरणियों में सर्वत्र दृष्टि की विभिन्न सत्ताओं अथवा जीवन के जुड़े–जुड़े अंगों में दृश्य–भेद स्वीकार करते हुए भी, बाह्य भौतिक जीवन की विविधितापूर्ण अनेकता में आन्तरिक आत्मिक एकता को ही आधार मानकर हमारे सांस्कृतिक अथवा सामाजिक जीवन में समन्वयकारी भावनाओं का स्वर सजीव रहा है। इस देश की यह युगों पुरानी निष्ठा है कि मानवीय प्रवृत्ति, मानव के संस्कार–सन्निकर्षों का परिणाम है। प्रवृति के अनुसार रुचि तथा रुचि के अनुरूप मत बनता है। संस्कारों में स्वाभाविक असमानता के कारण, मतों में भिन्नता होना भी स्वाभाविक है। एक ही परिवार के सदस्यों में रुचि-भेद के कारण भोजन के अलग–अलग पदार्थों में रस–प्राप्ति अथवा अरुचि पर परिजनों को कभी अटपटा नहीं लगता क्योंकि यह स्वाभाविक है। है। अतः किसी परिष्कृत या संस्कृत समाज में सबका एक मत होना न सम्भव है, न स्वाभाविक।

यज्ञदत्त शर्मा. जाह्नवी, फरवरी १९७४ पृष्ठ–३५, से साभार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंखिया से लोर झरल

बसंत आइल जनाइल ना;
मन क टीस बुताइल ना।
टिसुना दरकि के रहि गइल;
ओकर दरद भराइल ना।
न बगिया में महक आइल;
न भवँरा में भनक आइल;
करिया कोइलर क कंठ किकुरल;
पपिहा क पी भुलाइल।...१
पड़ल पाला पेड़न क फुनगिन पर;
पियर पात पलुहल ना।
पंख फरकल पछुआ क पछिम ओर;
पुरवइया झुरुकल ना;
लगल कोंचा झुरा गइल महुआ क;
रतियाँ रस टपकल ना;
मधुआ मधुमास लगल मजही में;
मोजरा टिकोरा मुसकाइल ना।...२
छांहों छनछनात बा बरगद क,
लाल-लाल गोदा अँगार भइल।
चहकत जे खोंता रहे चिरइन क;
जरिके खँगार भइल।
बिजुली के बिजुली मरलसि;
खरिहान, खेत भइल;
दिनहीं अन्हार भइल;
पानी मुहाल भइल।...३
खेतन से रेत उड़ल;
हरियाली भागि चलल;
फसल क फसली भइल;
गेहूँ क गाल चिचुकल;
सरसों क सांस छूटल;
तीसी क मटका फूटल;
न खेत भरल, न पेट भरल;
अंखिया से लोर झरल।...४

रमाशंकर राय प्राध्यापक, इं० का० मुहम्मदाबाद, गाजीपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोड़ना है

तोड़ना है
विचारों कि चोटों से
परंपरा-पोषित रूढ़ियों को।
उन रूढ़ियों को
जो इन्सान को इन्सान नहीं रहने देतीं।
जो आदमी को मर्द-औरत, मालिक-मजदूर
ब्राह्मण-शूद्र, धनी-गरीब,
और छोटे-बड़े का मुखौटा पहना कर
उसे पगला देती हैं
और वह बाप-बेटा, माँ-बहन
बहू-बेटी, भाई-भतीजा
किसी को पहचान नहीं पाता।
उन्हें ठोकरें मारता, भूखों मारता
बे-इज्जत करता,
और जान से भी मार देता है।
तब उनकी सड़ी-गली लाशों से निकली दुर्गंध से
अपनी विजय की सुगंध का आनंद लेते हुए
आसुरी अट्टहास करता है।
ऐसा पगला गया है मानव
जिन रूढ़ियों की प्रेरणा से,
उन्हें तोड़ देना है।
विचारों की चोटों से,
हाँ, विचारों की चोटों से ही,
क्योंकि तोप-तलवार से तो
हैवान के साथ-साथ
इन्सान ही नहीं मरता,
बची-खुची इन्सानियत भी मर जाती है।
और विचारों की चोटें भी
कुछ कम पुर-असर नहीं होतीं।
शर्त्त केवल यह है
कि वे आचार से पुष्ट हों।

सत्यनारायण लाल
(ट्रेनिंग—कालेज पटना के अवकाश प्राप्त प्राचार्य, आरा)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह वह देश महान है।

जहाँ रक्त रंजित तरुणाई आदर्शों पर मिट जाती
जहाँ भगीरथ के प्रयत्न से गंगा धरती पर आती
जहाँ देश के स्वाभिमान की रक्षा शीसों से होती
जहाँ दीप्त स्वातन्त्र्य-भावना बंधन की तमसा धोती
जहाँ आन पर बच्चा-बच्चा करता जीवन दान है।
यह वह देश महान है॥

हर धड़कन में जहाँ शहीदों के अरमान मचलते हैं
बलिदानों के लिए जहाँ पर कोटि-कोटि पद चलते हैं
जहाँ मुक्ति के लिए जवानी फांसी पर झूला करती
जहां भावना संघर्षों को हँस-हँस कर झेला करती
मां से बढ़कर मातृभूमि का जहा मान-सम्मान है।
यह वह देश महान है॥

जहां भीष्म-से धीर-वीर नर शर-शैय्या पर मुस्काते
सत्य-धर्म के लिए जहां पर हरिश्चन्द्र तक बिक जाते
गूँज रही है कीर्ति जहां पर भामाशा-से दानी की
जहां दिशाएँ गाथा गातीं तलवारों के पानी की
अखिल विश्व में अहनिशि होता जिसका गौरव गान है।
यह वह देश महान है॥

सिर पर कफन बांधकर बढ़ती जहां शहीदों की टोली
जहां बहादुर मिट जाते हैं खाकर सीने पर गोली
जहां बाहुओं में पौरुष का महाजलधि लहराता है
हर बलि-पंथी जहां खुशी से बलि-त्योहार मनाता है
युग-युग का इतिहास सँजोये जिसका चिर बलिदान है।
यह वह देश महान है॥

उमाशंकर शुक्ल 'उमेश
साहित्य परिषद, फूलपुर, प्रयाग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

[गतांक से आगे]

व्यंजन—विचार

डा० जितराम पाठक प्राचार्य
म० विश्वमित्र डिग्रीकालेज बक्सर

व्यजंन परतंत्र वर्ण हैं। उनका उच्चारण स्वर की सहायता से ही संभव है। 'क' का उच्चारण सहज है, किन्तु 'क्' का उच्चारण असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। 'क्' के साथ 'अ' का संयोग हो जाने पर ही क होता है और इसी का उच्चारण हम कर सकते हैं। निछक्का व्यंजन हमारी जीभ पर नहीं चढ़ता। यह 'क' व्यंजन और स्वर का संयुक्त रूप है। व्यंजन के उच्चारण के लिए स्वर की अनिवार्यता है। इस लिए नियम हुआ कि जिन वर्णों का उच्चारण स्वर की सहायता से किया जाता है, उन्हें व्यजंन कहते हैं जैसे- क, प, च ट।

क वर्ग के व्यंजनों का उच्चारण स्थान कंठ, च वर्ग का तालु, ट वर्ग का मूर्धा, त वर्ग का दन्त और प वग का ओठ है। इन्हें वर्गीय व्यजन कहते हैं।

कुछ ऐसे व्यंजन हैं, जिनका उच्चारण स्वर और व्यंजन का मध्यवर्ती है। ऐसे व्यंजन अंतःस्थ कहलाते हैं। इनकी स्थिति स्वर और व्यंजनों के मध्य है। इसलिए अंतःस्थ व्यंजन हैं—य, र, ल, व

जिन व्यंजनों का उच्चारण महाप्राणता प्रकट करता है उन्हें महा-प्राण या ऊष्मा व्यंजन कहते हैं। इन व्यंजनों के उच्चारण में गरमाहट मिलती है। इस कारण ये व्यंजन महाप्राण ऊष्मा है। श, ष, स और ह ऊष्माक्षर हैं। इनका उच्चारण महाप्राणता के साथ ही संभव है।

भोजपुरी भाषा की अपनी प्रकृति में श और ष का स्थान नहीं है। भोजपुरी का शायद ही कोई अपना शब्द श या ष से लिखा या बोला जाता हो। भोजपुरी में और ष और ण का उच्चारण ख और न होता है। 'पाषाण' भोजपुरी 'पखान' उच्चरितहोता है भोजपुरी में वर्षा नहीं होती, बरखा ही प्रचलित है। मतलब कि भोजपुरी भाषी मूर्धन्य एवं तालव्य ऊष्माक्षर के उच्चारण महत्त्व नहीं देता। वह उसे अपनी सुविधा के अनुसार बोलता है। ष का उच्चारण वह निर्विवाद रूप से ख करेगा। एक अपवाद दिखता है- पौष का भोजपुरी रूप पूस होता है। पुष्य नक्षत्र भोजपुरी में पूख हो जाता है। शायद पूख नक्षत्र से अंतर करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिए ही षौष माह का भोजपुरी रूप पूस महीना हो जाता है। कहीं--कहीं 'ष' का उच्चारण स या ख दोनों रूपों में भी मिलता है जैसे- पुरुस और पुरुख दोनों रूपों में लिखा और बोला जाता है।

श का प्रयोग भोजपुरी के अपने शब्दों में नहीं है। जहाँ भी श व्यंजन वाले शब्द भोजपुरी में लिखे गये, 'श' को 'स' के रूप में लिखा और बोला जाने लगा। शास्त्र भोजपुरी में 'सास्तर' और शास्त्री जी 'सासतीरी' जी हो गये। शब्द का सबद हो जाता है। इसी प्रकार विश्वनाथ 'बिसनाथ' बन जाते हैं। सर्वत्र 'श' का 'स' की तरह उच्चारण मिलेगा।

जाहिर है कि भोजपुरी में महाप्राण वर्ण दो ही हैं—स और ह। ष का उच्चारण भोजपुरी ख या स की तरह ग्रहण करती है और श का स की तरह। इस आधार पर कुछ कट्टर भोजपुरी विद्वान यह मानते हैं कि भोजपुरी वर्णमाला में ष और श नहीं हैं। इससे असहमत होने का कोई कारण नहीं है।

किन्तु झगड़ा यहीं खत्म नहीं होता इस पर भोजपुरी भाषियों तथा भोज-पुरी विद्वानों को विचार करना चाहिये। विचार इस मुद्दे पर हो कि क्या दूसरी भाषा के शब्दों को तोड़-मरोड़ कर भोजपुरी को ग्रहण करना चाहिये या उन्हें उस भाषा के उच्चारण एवं वर्तनी के साथ ग्रहण करना चाहिये? यह बड़ा अहम सवाल है। इस सवाल का समाधान हो जाने से भोजपुरी वर्तनी तथा भाषा को एक परिनिष्ठित रूप मिल सकेगा।

एक प्रश्न यह भी उठता है कि 'भोजपुरी' को परिनिष्ठित रूप देने की आवश्यकता क्या है? यदि परिनिष्ठित रूप दिया गया तो भोजपुरी क्रियापदों के अलावा भोजपुरी भाषा में अपना कुछ न रह जायेगा, ऐसा, कुछ लोग कहते हैं।

भोजपुरी का अपना कुछ क्या है? उसमें हिन्दी भाषासे अलग कुछ अपना है? क्रिया-पद के अतिरिक्त सर्वनाम, अव्यय,उपसर्ग, प्रत्यय, संधि आदि में भोजपुरी की अपनी परम्परा है। उसके अनुसार भोजपुरी चलेगी।

मूल प्रश्न संज्ञा का है। महेश ठीक है कि महेस, शशि होगा कि ससि, शंकर चलना चाहिये कि संकर? इसी प्रकार उनके संज्ञा पद हैं जो आपके निर्णय की अपेक्षा रखते हैं। भाषा, शब्द, अनुशासन, शंकर, शशि, शुद्ध, शरबत, शोला, शेर आदि अनेक संज्ञा पद लिखे जाते हैं। भोजपुरी में इनका रूप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निश्चित नहीं हो पाया है। श्री बाबू 'सीरीबाबू' हो गये, जय शंकर प्रसाद को जयसंकर प्रसाद लिखा जाने लगा है।

यह सही है कि भोजपुरी भाषा के कट्टर पुरातन-वादी विचारक विभाषीय शब्दों को विकृत रूप देकर भोजपुरी में प्रस्तुत करना चाहते हैं। श के साथ यही दुर्भाग्य है। अन्य भाषाओं के शब्द भोजपुरी में आकर अपना रूप और अर्थ गवाँ बैठते हैं। ऐसे लोग ही भोजपुरी को गँवारों की भाषा में परिगणित कराते रहेंगे और उसे साहित्य एवं भाषा की मर्यादा से विभूषित होने से वंचित करते रहेंगे। शंकर को 'संकर' लिखनेवाली भाषा परिनिष्ठित नहीं कही जा सकती।

भोजपुरी की प्रकृति में श नहीं है तो वह श वाले शब्द को न ले। जो न पचे उसे खाने से क्या लाभ? लोग अपशब्द कहेंगे। यदि संस्कृत के शंकर को भोजपुरी नही पचा सकेगी तो भोजपुरी की अर्थशक्ति पर प्रश्न चिह्न लगाया जायेगा। विरासत में मिली संपत्ति को उसकी परम्परा एवं ऐतिहासिकता में लिया जाता है, न कि उसके विकृत रूप में? ताजमहल को उसके उसी स्थापत्य एवं उसी युग के परिप्रेक्ष्य में स्वीकारना होगा। तभी वह ताजमहल रहेगा। ऐसा न करने पर वह गाजमहल हो जायेगा और अपनी अद्वितीयता खो बैठेगा

मेरा निवेदन है कि संकृत की परम्परा में आये शब्दों को उनके सही रूप में लिया जाना चाहिये। कम से कम भोजपुरी साहित्य के लेखन में 'श' या 'ष' के रूप को सुरक्षित रखना आवश्यक है। पालि और प्राकृत ने बलात् संस्कृत को विकृत किया तो भाषा दीर्घजीवी नहीं हो सकी। भोजपुरी को दीर्घजीवी रखने तथा अन्य भारतीय भाषाओं के समकक्ष रखने के लिए यह आवश्यक है कि संस्कृत शब्दों के रूप को भोजपुरीकरण के लिए विकृत न किया जाय। जो शब्द भोजपुरी में आकर अपना रूप परिवर्तित कर चुके है, उन्हें भोजपुरीकृत रूप में ही ग्रहण किया जाना चाहिये।

भोजपुरी करण के चक्कर में आनेवाले भोजपुरी की गति नहीं, दुर्गति चाहते हैं। यदि बलात् शंकर को संकर किया गया तो अर्थ सम्बन्धी अव्यवस्था भी उत्पन्न होगी। उदाहरण लीजिये। भोजपुरी से श को निष्कासित कर देने पर शंकर और संकर के अर्थ में अंतर करना कठिन हो जायेगा। तब जटाशंकर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और वर्ण संकर के संकर भोजपुरी में एक ही अर्थ दे सकेंगे। अर्थ-दोष तथा अर्थ भेद की दुरूह स्थितियां तब भोजपुरी भाषा में उत्पन्न होंगी।

इसी प्रकार भाषा को ममोड़ कर भाखा लिखना या कहना या उषा को उखा कहना भी भोड़ापन का परिचायक होगा। अनेक लोग अपनी पुत्रियों के नाम उषा, शशि और शांति रखते हैं। विकृत होने पर ये नाम उखा, सांति और ससि हो जायेंगे। इनका क्या अर्थ होगा? मूल भाषा संकृत से भिन्न अर्थ ये नहीं दे सकेंगे और संस्कृत में सांति, उखा, और ससि का कोई अर्थ नहीं है। ये निरर्थक संज्ञाएँ होंगी। अंतर्राष्ट्रीय भाषा क्षेत्र में भी इन शब्दों की कोई अर्थवत्ता नहीं होगी।

अतः यह मानना पड़ेगा कि भोजपुरी भाषा के शब्दों में 'श' और 'ष' की स्थिति न होने पर भी भोजपुरी ने अन्य भाषा के शब्दों को ग्रहण करने के लिए 'श' और 'ष' का लेखन रूप सुरक्षित रखा है और अन्य भाषा के शब्दों में इनका प्रयोग होता है।

अनुनासिक

भोजपुरी भाषा में ङ, ञ, ण, न तथा म का अनुनासिक प्रयोग होता है। जैसे—अङना, भाङ, कङना, भुइञा, बढ़िञा, काणि, सोना, चानी, पानी, जानो, आम, महुआ, कमरी, चमड़ी।

प्रयोग में अङना को अँगना, कङना को कँगना, भाङ को भाँग को भुइञा भुँइयाँ बढ़िञा को बढ़िञाँ लिखा जाता है।

का काली, का मधुरा का शीतलवाहहिनो गंगा
कं संजघानि कृष्णः कम् बलवन्तम् शीत न बाधते

काली क्या है—काकाली—काक अली, कौओं की पंक्ति। मधुर क्या है—कामधुरा अर्थात् स्त्री। धीरे बहने वाली गंगा कहाँ है, काशीतल वाहिनी (वाराणसी में में गंगा का प्रवाह बहुत मंथर है)। कृष्ण ने किसको मारा—ममम् जघानि—कंस को उसको ऐसा कौन बलवान है? जिसे शीत बाधा नहीं पहुंचाता कम्बलवन्तम्—जिसके पास कम्बल है उसको।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उजियार में काव्यानन्द की अजस्र वर्षा

भैरवनाथ पाण्डेय

राजभाषा–विभाग, विहार–सचिवालय, पटना।

'अ०भा०अन्तर-जनपदीय-परिषद्' (राजगुरूमठ शिवालाघाट, वाराणसी) के तत्त्वावधान में, बलिया जिले के उजियार ग्राम में, श्री अनिलकुमार राय 'आंजनेय' के सुरम्य आवास पर पिछले २४-२७ अक्तूबर, १९७४को, लगातार तीन दिनों तक भोजपुरी भाषा के अनेक काव्यों का सरस एवं सस्वर पाठ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। पटना के सुप्रसिद्ध कवि श्री अविनाश चंद्र विद्यार्थी नगर के कोलाहल पूर्ण वातावरण से उद्वेलित एवं उत्तप्त मन को सुशीतल करने के उद्देश्य से, अपने आत्मीय सुहृदबन्धु श्री 'आंजनेय' का उदार आतिथ्य ग्रहण करने के लिए, अपने साथ मुझे लेकर पधारे। उन्होंने पटना स्टेशन पर मुझे बुलाया जहां उनसे हमारा साथ हुआ उनके साथ कलकत्ते की अपनी यात्रा पूरी कर जनपदीय–आन्दोलन के सूत्रधार पं० कुलदीपनारायण राय 'झड़प' जी का भी शुभागमन हुआ, जिनकी भव्य एवं ऋषिकल्प उपस्थिति से वातावरण और भी समलंकृत हो उठा।

२४ अक्तूबर की संध्या में कवि श्री अविनाशचन्द्र विद्यार्थी ने उजियार के काव्य-रसिक ग्राम वृद्धों की समुपस्थिति में अपने निर्माणाधीन महाकाव्य 'सेवकायन' के सरस एवं सस्वर पाठ का श्रीगणेश किया। साढ़े–तीन घंटे तक चलनेवाले काव्यपाठ के इस पहले दौर में एक अनोखी समा बँध गई। काव्य के मार्मिक एवं मोहक स्थलों का सद्यः–प्रभाव श्रोताओं की सजल आखों में स्पष्टतः परिलक्षित हुआ। विस्मयविमुग्ध होकर समुपस्थित सहृदय व्यक्तियों ने काव्य के इस ब्रह्मानन्द–सहोदर रस का छक कर पान किया।

२५ अक्तूबर को सुबह ८ बजे से, उक्त महाकाव्य के अवशिष्ट अंशों के रसास्वादन के लिए उत्कंठित रसिक-मण्डली आ जुटी और तीन घंटे तक निरन्तर कवि के सारस्वत कंठ की अमियधार में अवगाहन करती रही। मध्यदिन में बक्सर से भोजपुरी-कवि श्री विश्वनाथ प्रसाद जी 'वीर', भोजपुरी के बहुचर्चित उपन्यासकार श्री अरुणमोहन 'भारवि'तथा निकटवर्ती ग्राम भरौली के श्री श्रीनेत राय तथा श्री श्रीकृष्ण सिंह, कवि अविनाशचन्द्र विद्यार्थी से मिलने के लिए 'आंजनेय' जी के चौपाल में पधारे। दिन के तीसरे पहर से ही काव्यपाठ का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीसरा दौर प्रारम्भ हो गया। विद्यार्थी जी ने अपनी अप्रकाशित काव्य-पुस्तक 'भोजपुरी भूँइ' के बहुरंगो छन्दों में, अनेक लोकधुनों के तर्ज पर, लिखे गीतों का सस्वर एवं सरस पाठ किया।

फिर रात के ८ बजते-बजते रसिक श्रोता आ जुटे और कवि ने 'राम-श्याम के लीला' नामक अपनी अप्रकाशित कविता-पुस्तक का पाठ आरंभ किया। गांव के प्रशान्त वातावरण में मधुर स्वर-लहरी गूँज उठी और श्रोता-मण्डली करुण रागिनो की अमिय फुहार से रससिक्त हो उठी। २ घंटे तक पाठ का यह मधुर कार्यक्रम चलता रहा।

२६ अक्तूबर को पूर्वाह्न में एक अन्तरंग गोष्ठी हुई, जिसमें कवि ने अपनी अप्रकाशित गीति-पुस्तक 'सुदिन' के विचारोत्तेजक गीतों का पाठ किया। अन्योक्ति-पद्धति पर, प्रतीकात्मक शैली में, लिये गए इन गीतों को सुनकर झड़प जी चमत्कृत हो उठे। भोजपुरी भाषा की भावाभिव्यंजक शक्ति की उन्होंने मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

इस एकल गोष्ठी में २६ अक्तूबर को संध्या ४ बजे भोजपुरी महाकाव्य 'किरनमयी' के यशस्वी एवं वर्चस्वी कवि श्री रामवचन सिंह यादव 'अँजोर' ने श्री विद्यार्थी के आमंत्रण पर अपने व्यस्त कार्यक्रम को पूरा करते हुए पधार कर अपने 'एकजबनिहा' स्वभाव का परिचय दिया। उनके आते ही श्री 'आंजनेय' के आवास पर उल्लास को अभिनव लहर दौड़ गई। रात को सर्वाधिक श्रोता आ पहुंचे और भोजपुरी महाकाव्य 'किरनमयी' के आद्योपांत सस्वर पाठ से वातावरण मुखरित हो उठा। कला और गला का मणि-कांचन-योग पाकर श्रोताओं का भाव-समुद्र मथित हो उठा और उससे जो अमृत घट-घट में व्याप्त हुआ, उसे शब्दों से व्यक्त करना असंभव है। निःसंकोच कहा जा सकता है कि श्री अँजोर अकेले एक कवि सम्मेलन हैं। विभिन्न रसों, छन्दों और धुनों में 'किरनमयी' का जो सस्वर पाठ हुआ, वह काव्य पाठ के इतिहास में सर्वथा नूतन एवं अपना एक पृथक स्थान रखता है।

२७ अक्तूर को, सुबह, पुनः श्री विद्यार्थी और श्री अँजोर ने क्रमशः आधे-आधे घंटे तक अपनी फुटकर रचनाएँ सुनाई। श्री विद्यार्थी के काव्य में जहां दिल की गहराई साथ-साथ दिमाग की ऊँचाई मिली हुई थी, वहां श्री अँजोर में दिल ही दिल देखने को मिला श्री अँजोर के गले में सरस्वती ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी वीणा की जो सरस झंकार दी है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। उस झंकार की मादक लहरियों के मदिर प्रभाव से श्रोतामण्डली उन्मत्त हो उठी और आंखों से स्वभावतः करुणा बरसने लगी। करुण-रस का ऐसा साधारणीकरण मैंने व्यावहारिक जीवन में नहीं देखा था। आज भी श्रोताओं के मन को चीर कर जहां श्री विद्यार्थी के तर्ज—'होइ चलल अब भोर; मूढ मन चेत कर हो' का स्वर और 'टकसे ना रतिया विलमल भोर; बोल हो मुरगा' का पुटपाकी स्वर अनायास उभर उठता है, वहां श्री अंजोर के विरह-कातर स्वर 'पूछेले अँजोरिया गगनवा से रहि-रहि, काहे तन साँवर तोहार' तथा 'मोरा घर जइह बीरना' आँखों में सावन-भादो की सृष्टि कर जाते हैं। श्री अँजोर के लोर' के स्वर आज भी श्रोताओं की आंखों के लोर बनकर 'ढर-ढर' ढरक रहे हैं।

[इन तीन दिनों के रसमय वातावरण को काव्य रसिक एवं मानस मर्मज्ञ श्री भैरवनाथ पांडेय ने अपनी उपस्थिति से और भी आनन्दमय बनाया। उनकी विदग्ध टिप्पणियों ने भावविभोर श्रोताओं के काव्यबोध को जगाने और ज्ञानवृद्धि करनेमें भी सहायता की। यथावसर श्री पाण्डेय जी ने मानस का सरस प्रवचन कर श्रोताओं को मुग्ध कर दिया, पांडेय जी के पांडित्य, मानसप्रेम, कथन की सरसशैली और मोहन व्यक्तित्व की अमिट छाप उजियार गांव की श्रोता मण्डली पर है। —सम्पादक]

हम में विदेशों में दान के बजाय हमारी धरती जो कुछ पैदा कर सकती हो उस पर ही निर्वाह कर सकने की योग्यता और साहस होना चाहिये। अन्यथा हम एक स्वतन्त्र देश की तरह रहने के हकदार न होंगे। यही बात विदेशी विचारधाराओं के लिए भी लागू होती है। मैं उन्हें उसी हद तक स्वीकार करूँगा जिस हद तक उन्हें मैं हजम कर सकता हूँ और उनमें परिस्थितियों के अनुसार फर्क कर सकता हूँ। लेकिन मैं उनमें बह जाने से इनकार करूँगा।

—महात्मा गांधी

(मेरे सपनों का भारत : पृष्ठ ३२)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरिया

वरिसे ले अगिया लउरिया, वजर बा सरीरिया,
कहेला लोग मोके भोजपुरिया ॥

भोजपुरी भाषा अमरिते चभोराइल।
जिला एकइस के अङना में पसराइल ॥

दस रे करोड़ के पलरिया, बा गउआँ सहरिया
कहेला लोग मोके भोजपुरिया ॥

मटिया से हमरो बा निकहा पिरितिया।
झूमि-झूमि गाईला ए मटिया के गितिया ॥

हुमची चलाईला कुदरिया, अगोरीला बधरिया,
कहेला लोग मोके भोजपुरिया ॥

जान—अनजान आवे दुअरे मनइया।
अनघा धधाइके करीला सेवकइया ॥

हियरा के खोलि के केवरिया, डसाइके पुतरिया,
कहेला लोग मोके भोजपुरिया ॥

सोझिया सोभाव हम सदईं के सूधा।
टेढ़—अनदेखनन के काटि लेईं मूधा ॥

काढ़ि लेईं उनकर नजरिया, आ थूरीला पँजरिया,
कहेला लोग मोके भोजपुरिया ॥

मूसा रोईं होते सेईं जाके पलटनियां।
देसवा क सेवा में खपाईला जवनियां ॥

सिमवां क बनिके गोहरिया, आ जूझीलां समरिया,
कहेला लोग मोके भोजपुरिया ॥

देस के सेवकवा आ एगो कनधरुआ।
अदना सिपाही, हम सजग पहरुआ ॥
भारती क ढोईं असवरिया, मो अजब कँहरिया,
कहेला लोग मोके भोजपुरिया ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रनवाँ के अगिया भुँजाइके अघाईं।
माई क निरछल पुतवा कहाईं॥
ओढ़ि सूतीं निरमल अँचरिया, ओ समर-सेजरिया,
कहेला लोग मोके भोजपुरिया॥

रामबचन सिंह यादव "अँजोर"
प्रधानाध्यापक, मा० विद्यालय, देवखैरा, रोहतास

★

एक पावन गीत

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना वाजूए-कातिल में है॥
रहबरे-राहे-मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज्जते सहरा-नवुर्दी दूरिए मंजिल में है॥
आज मकतल में ये कातिल कह रहा है बार-बार।
क्या तमन्नाए-शहादत भी किसी के दिल में है?
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़।
सिर्फ मिट जाने की हसरत ही दिले 'बिस्मिल' में है॥
वक्त आने पर बता देंगे तुझे ऐ आसमां।
हम सभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्को-मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा गैर की महफिल में है॥

★ रामप्रसाद 'बिस्मिल'

संस्कृति जीवन का एक दृष्टिकोण है। भारतीय संस्कृति आध्यात्मिकता के द्वारा जीवन के अंतरिद्रों को भेद कर उस के अनंत रहस्यों को जानने के लिए प्रत्नशील रही है। परंतु इस का यह अर्थ नहीं कि हम ने जीवन की उपेक्षा की हो, विज्ञान से मुँह मोड़ा हो तथा समाज और कला-कौशल के प्रति उदासीन रहे हों। सच तो यह है कि हमारे पूर्वजों ने यह आवश्यक समझा कि हम आध्यात्मिकता के द्वारा पूर्ण द्रष्टा बनें और तभी हम चतुर्दिक प्रयत्न कर सकते हैं।

डा० सी० पी० रामास्वामी अय्यर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनपदीय अध्ययन—

प्रथम भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (सीवान)

कुलदीप नारायण राय 'झड़प'

'अँजोर' कला १४ किरिन १-२ अक्टूबर सन् १९७३ में जो मेरी भेंटवार्ता छपी, उसके संबंध में यह बता देना आवश्यक है कि 'अँजोर' के यशस्वी संपादक पांडेय नर्मदेश्वर सहाय जी और उनके सहयोगी श्री अविनाशचन्द्र विद्यार्थी ने भी मुझ से साक्षात्कार कर तत्संबन्धी कागज-पत्र देखा था। बहुत-सा कागज-पत्र उनके पास महीनों पड़ा रहा (जिसमें से एक संवाद पत्र में छपालेख और एक पत्र कहीं खो भी गए) इस प्रकार विश्वस्त होकर तथा प्रामाणिक जानकर ही उन्होंने कथित भेंटवार्ता प्रकाशित की थी।

ऐसी स्थिति में उचित तो यह था कि जब भेंटवार्त्ता के विपरीत प्रतिक्रियायें आईं तो वही लोग उसका प्रतिवाद भी करते, पर विवश होकर यह कार्य भी मुझे ही करना पड़ा क्योंकि उन प्रतिक्रियाओं द्वारा मेरा चरित्र लांछित किया गया और साधारण शिष्टाचार को भी भुलाकर अभद्र गालियाँ दी गईं थीं। मित्रों द्वारा लाता-लूती और गाली-गलौज को मैं वसन्तोत्सव मानता हूँ, पर मेरे चरित्र पर जो अलकतरा पोता गया है, उसे तो धर्म की मर्यादा-रक्षा और जीवित रहने के लिए भी साफ करना ही है।

सहजभाव से प्रतिक्रियाओं का समाधान करते हुए मैंने जो उत्तर दिया, वह 'अँजोर' कला १४ किरिन ३-४ जनवरी-दिसम्बर सन् १९७४ में प्रकाशित हुआ। मुझे आशा थी कि इस उत्तर के बाद तत्संबंधी विवाद शांत हो जायगा क्योंकि इसमें आचार्य पं० बनारसीदास चतुर्वेदी आचार्य पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य पं० परशुराम चतुर्वेदी, डा० परमेश्वरी लाल गुप्त, श्री पं० गणेश चौबे और श्री पं० महेन्द्र शास्त्री आदि के २५ पत्र प्रकाशित हैं, जिनसे मेरे कथन का पूर्णतया समर्थन तथा विरोधी प्रतिक्रिया का निराकरण हो जाता है। किन्तु अन्धकार में देखने वाली आँखें सत्य की चमक सह नहीं सकतीं, अस्तु मेरे स्पष्टीकरण से कुछ लोगों को और बौखलाहट हुई। मैंने प्रत्युत्तर में बड़े आकार के २१ पृष्ठों का एक लेख जिसमें पचासों पत्रादि प्रमाण उद्धृत थे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
'अँजोर' के लिए भेजा, जिसकी प्रशंसा करते हुए संपादक जी ने मेरे पहले के प्रकाशित उत्तर से उसे उत्तम बताया। फिर भी अबकी बार वे उससे 'अँजोर' का नाम 'अँजोर' न कर सके महीनों सोच-विचार करने के पश्चात् उन्होंने मेरा प्रत्युत्तर प्रकाशित करने में अपनी असमर्थता प्रकट कर लेख मुझे लौटा दिया। इस आवा-जाही में क्रमांक ५ से १३ तक ६ पृष्ठ खो भी गए। ऐसी स्थिति में मैंने उस लेख को किसी अन्य पत्र में प्रकाशित कराने का विचार ही छोड़ दिया। मैं चाहता था कि कथित विवाद को लेकर अब आगे कुछ न कहूँ और 'चतुर्मुख' को तो सर्वदा इससे अलग ही रखा जाय। मेरे मित्र बंधुवर गणेश चौबे ने भी मुझे ऐसी ही सलाह दी थी किन्तु चौबेजी की ही रुचि से फिर इस प्रश्न को फिर उठाना पड़ रहा है और वह भी चतुर्मुख के माध्यम से ही। इसके संबंध में निम्नांकित पीठिका अवलोकनीय है—

१—"झड़प की हड़प—× × प्रथम भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन के कुल्ही जस श्री कुलदीप नारायण सिंह 'झड़प' लूट लेबे के भुंझारी चलल बाड़े। जबकि ओह सम्मेलन से उनका छूओछूत ना भइल। उहाँ केहू इहो ना जानल कि झड़प नाँव के कवनो चीझ होला।"

"बड़ लोग से ऊ चिठियाँव कइले होइहें। मिल मिल के पूरा कहले भी होइहें कि हमहीं सर्वेसर्वा बानी। अइसन चाल में ऊ फहीमा केहू के मात क सकेले। लेकिन आजतक भोजपुरी खातिर कवनो काम उनका से ना उँजिआइल। एकरा खातिर उनका में सेवाभाव आ चाव कुछो नइखे। एह नक्सलबादी युग में चलल बाड़े दोसरा के कमीनी काटे। चुप लगा गइला से अइसन लो के मन ब'कि-सहकी। नाहीं त पोल ना खोल के उपेछा कइल जाइत।"— महेन्द्र शास्त्री-अँजोर कला १४ कि० ३-४ पृ० १५-१६।

२—"हम अबहीं कुछ सोचते रहलीं तबले श्री गणेश चौबे आ पूज्य आचार्य महेन्द्र शास्त्री के अलग-अलग चिट्ठ' मिलल जवना में 'झड़प'जी का झूठ पर झूठ अभिमान पर विस्मय प्रगट कइल गइल रहे।" अक्षयवर दीक्षित— वही पृ० ६।

३—"श्री झड़प जी का भोजपुरी आन्दोलन का प्राथमिक अवस्था से ही भोजपुरी प्रचारक बनल रहे के झूठ लालसा जागल बा। अइसन झूठ आत्मप्रशंसा में साधारण शिष्टाचार ना भुला जाए के चाहीं। एह हद तक वास्तविकता पर पर्दा भी ना डाले के चाहीं।" संतकुमार वर्मा—माटी के गमक (अक्टूबर-दिसंबर १६७३) पृ० ६।

४—"हम श्री कुलदीप नारायण राय 'झड़प' से एह सठिअइला का हालत में एगो-दूगो बात कहे चाहत बानी।× × बाकिर एह युग में अइसन सफेद झूठ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केहू कइसे सही।"

"झड़प जी अपना बात से आकाश के फूल तूरे में माहिर बानी। तबे नू कवनो ना कवनो संगठन में आपन नांव ऊपरे-ऊपर चुनवा ली ले। अँजोर में झड़प जी के नाजायज वक्तव्य सीमापार क गइल बाटे। लजाइल बिलार खंभा नोचे तक बात नइखे-चोरनी होखे त गलगर होखे।" माटी के गमक (जनवरी—मार्च १९७४) पृ० १४, १५।

'माटी के गमक' में श्री पं० बलदेव उपाध्याय और श्री पं० गोपाल शास्त्री के दो पत्र अपने पक्ष के समर्थन में उद्धृत किए गए हैं, किन्तु उन पत्रों में एक वाक्य भी ऐसा नहीं है, जिससे मेरे कथन का विरोध होता हो अथवा जो सीवान-पक्ष के समर्थन में हो, वरन् पं० बलदेव उपाध्याय के इन कथन से कि—"भोजपुरी सम्मेलन की सफलता को बलिया के लोग ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हैं" मेरे ही कथन की पुष्टि होती है एवं पं० गोपाल शास्त्री के पत्र से स्पष्ट रूप से झलकता है कि वे स्वागत-समिति के व्यवहार से असंतुष्ट होकर उसके कार्यकर्त्ताओं से मिले बिना ही चले गए थे। जिसका स्पष्ट अर्थ है कि उन्हें मार्ग-व्यय भी नहीं दिया गया। जहाँ तक मुझे स्मरण है, श्री जानकीवल्लभ शास्त्री भी स्वागत-समिति के कार्यकर्त्ताओं के व्यवहार से असंतुष्ट होने के कारण सभा-स्थल पर पहुँचकर भी कवि-सम्मेलन में सम्मिलित नहीं हुए थे। वे विद्यमान हैं, उनसे पूछा जा सकता है।

बंधुवर चौबे जी ने भी अनेक लोगों को पत्र लिखकर और सभाओं में वक्तव्य देकर मेरे चरित्र पर शंका उठाई है और उसका गलत ढंग से प्रचार किया है। मेरे विषय में उनका कहना है—"उन्होंने 'एकोऽहं द्वितीयो नास्ति' की भावना अपनायी है तथा अनेक बातें भ्रामक एवं आपत्ति जनक ढंग से कही हैं।"(अँजोर कला १४ किरिन ३-४ पृ० १४ और 'माटी' के गमक अक्टूबर-दिसम्बर पृ० १०

मैंने पत्र लिख कर चौबेजी से निवेदन किया कि वे सप्रमाण यह स्पष्ट करने की कृपा करें कि मेरे कथन में कहाँ पर क्या भ्रामक और आपत्ति जनक है। मेरे बहुत से पत्र भी उनके पास हैं, वे उन्हें भी प्रकाशित कर दें किन्तु दुःख है कि अभी उन्होंने मेरे इस निवेदन पर ध्यान नहीं दिया और श्री महेन्द्रशास्त्री जी ने भी मेरे पत्र प्रकाशित नहीं कराए। शास्त्री जी से ४० वर्षों की पुरानी मित्रता और परिचय है। वे मेरे साथ ही सीवान सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ताँगे द्वारा गोरयाकोठी से गए थे। ताँगा वहाँ से १०-१२ मील पर तरवारा पहुँचते-पहुँचते टूट गया। फिर हमलोग एक बैल गाड़ी में बैठ कर गए, जिसपर सम्मेलन में जाने वाले कुछ लोग पहलेजपुर से जा रहे थे। इस घटना का विवरण मेरी डायरी में दर्ज है। चौबे जी, शास्त्री जी और अन्य बन्धुओंके बहुत से पत्र भी मेरे पास हैं (कुछ मेरी असावधानी के कारण सड़-गल भी गए हैं) जिससे वास्तविकता पर बहुत कुछ प्रकाश पड़ता है। स्थानाभाव से पत्रोंका प्रकाशन संभव नहीं है, फिर भी शास्त्री जी के कतिपय पत्रों के कुछ अंश द्रष्टव्य हैं—

(१) वन्दे। गोरयाकोठी
१६-४-४६

धन्यवाद। मुझ जैसे हीन पर इतनी कृपा अधिक है × × आप एक दुर्लभ-रत्न हैं, यह मैं जानता हूं। × × म० शास्त्री

(२) सप्रेम वंदे। गोरयाकोठी
२-५-४६

आपका सुन्दर पत्र आज मिला। मैं इसे जोगाकर रखूंगा। × × मुझे डर है कि अपनी अयोग्यता वश कहीं कभी आपकी ऐसी कृपा से वंचित न हो जाऊँ।— महेन्द्र शास्त्री

(३) गोरया कोठी
११-१२-४६

जयहिन्द।

आज आपकी चिट्ठी मिली। आश्चर्य है कि और कोई भी चिट्ठी मुझे नहीं मिल सकी है। अन्यथा यह क्या संभव है कि मैं उत्तर में इतनीदेर करता ? आपको भूल जाना खुद को भूलना है। सिकन्दरपुर के सम्मेलन-समाचार से खुशी हुई। × × सारन सा० सम्मेलन सिवान में होने वाला था, तिथि टल गई है।— महेन्द्र शास्त्री

(४) महाराजगंज
८-६-५१

प्रिय मित्र

इस याद या कृपा के लिए मैं कितने धन्यबाद दूँ निःसन्देह मैं भाग्यवान हूँ। गोरयाकोठी से आप जैसे स्वाभिमानी का चला जाना ही ठीक था, किन्तु हम से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आप दूर चले गए। संभव है हृदय के और करीब आ जायँ। भोजपुरी के लिए ठोस कदम भी तभी संभव है, जबकि किसी न किसी बहाने इसका आन्दोलन जारी रहे। सम्मेलन खासकर भोजपुरी सम्मेलन होते रहना बहुत जरूरी है। मैं लज्जित हूँ कि मासिक-पत्र नहीं निकाल पाता। कारण अशक्ति नहीं पारिवारिक आसक्ति है।" × × आप के साथियों को प्रणाम। आपको प्रणाम।

—महेन्द्र शास्त्री

इन पत्रों से विदित है कि प्रथम भोजपुरी-सम्मेलन आयोजित होने के बहुत पहले से ही शास्त्री जी से मेरा निकट संबंध रहा है। उन्होंने अपने पत्र दिनांक १२-७-४६ के द्वारा मेरी योजना को माँग की है (यह पत्र 'अँजोर' कला १४ किरिन ३-४में छपा है)। उनके पत्र दिनांक ११-१२-४६ से स्पष्ट है कि सिकन्दरपुर (बलिया) में आयोजित किए जाने वाले भोजपुरी-सम्मेलन के निश्चय से उनकी अवगति थी और उस समय तक सारन-जिला हिन्दी साहित्य-सम्मेलन (सीवान) के साथ भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन के संयुक्त किए जाने की कोई चर्चा नहीं थी अर्थात् तबतक उक्त सम्मेलन की स्वागत समिति ने इस प्रकार के किसी सम्मेलन की योजना पर विचार ही नहीं किया था क्योंकि शास्त्री जी उक्त जिला सम्मेलन की स्वागत-समिति के मुख्य कार्य-कर्त्ताओं में थे (जैसा कि स्वागत समिति के मंत्री श्री संतकुमार वर्मा के वक्तव्य से प्रकट है) और इसी से उन्हें उसकी तारीख टलने का पता था। यदि तबतक जिला-सम्मेलन के साथ भोजपुरी सम्मेलन करने का निश्चय स्वागत-समिति ने किया होता तो वे अवश्य इसका उल्लेख अपने पत्र में किए होते।

सारन-जिला हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन (सप्तम अधिवेशन, सीवान) का जो निमंत्रण-पत्र छपा, वह इस प्रकार है—

सारन-जिला-हिन्दी-साहित्य सम्मेलन

सप्तम अधिवेशन सीवान

प्रिय महोदय, मि० १५ फाल्गुन सं० २००६ वि०

सारन जिला हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का सप्तम अधिवेशन आगामी फाल्गुन शुक्ल ६ और १० (ता० १ और २ मार्च) को सीवान में होगा। साथ ही साथ कवि-सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है 'समाज' संपादक श्री रजवल्लभ सहाय और जानकीवल्लभ शास्त्री ने क्रमशः साहित्य-सम्मेलन और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि सम्मेलन का सभापति होना स्वीकार किया है।

इसी अवसर पर भोजपुरी सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अध्यापक श्री बलदेव उपाध्याय के सभापतित्व में संपन्न होगा। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि उक्त अवसर पर इन सम्मेलनों में पधारने का अनुग्रह करें।

विनीत

गदाधर प्रसाद श्रीवास्तव	संतकुमार वर्मा
स्वागताध्यक्ष	स्वागत मंत्री

कार्यक्रम

मि० ६ फाल्गुन शुक्ल शनिवार (१ मार्च)

५ बजे सन्ध्या	स्वागत उद्घाटन और सभापति का भाषण
८ बजे रात्रि	भोजपुरी कवि-सम्मेलन।

मि० १० फाल्गुन शुक्ल रविवार (२ मार्च)

७ बजे प्रातः	प्रतिनिधि सभा
८ बजे प्रातः	भोजपुरी सम्मेलन
३ बजे दिन	साहित्य सम्मेलन.
८ बजे रात	कवि सम्मेलन

नोट—किस ट्रेन से सीवान आ रहे हैं, इसकी सूचना शीघ्र देने की कृपा करें।

विहाव प्रेस सिवान (सारन) ५५-४७-५०० पु० १ में ४

निमंत्रण पत्र से स्पष्ट है कि फाल्गुन की अमावस्या(अमावस्या को १५ नहीं ३० लिखना चाहिए) अर्थात् २१ फरवरी १६४७ तक उक्त सम्मेलन के साथ संस्कृत सम्मेलन तथा संगीत सम्मेलन करने का निश्चय नहीं हुआ था, नहीं तो निमंत्रण-पत्र में उसका अवश्य उल्लेख होता। शायद संस्कृत-सम्मेलन कराने की चर्चा का बीज-वपन १५ फरवरी को श्री पं० वासुदेव द्विवेदी (सार्वभौम संस्कृत प्रचारक टेढ़ीनीम, वाराणसी) के सीवान में पहुँच जाने के कारण हुआ, जैसा कि उनके निम्नांकित पत्र से विदित होता है—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीः   १७-२-४७
                                              सीवान

श्रीयुत मंत्रि महोदय,

पूर्व सूचनानुसार तथा आपके पत्रानुसार गत १५ फरवरी शनिवार को मैं सिवान चला आया। यहाँ आने पर ज्ञात हुआ कि तिथियों में परिवर्त्तन हो गया है और लोगों से मुलाकात हुई, बातें हुईं। साथ ही संस्कृत पाठशाला में संस्कृत पंडितों की सभा हुई। इस प्रकार समय का सदुपयोग किया गया। आज मैं पुनः दूसरी जगह जा रहा हूँ। पुनः आगामी तिथियों पर सम्मिलित हूँगा मालूम हुआ कि आप यहाँ आए थे।

भवदीय
वासुदेव द्विवेदी

कुलदीपनरायण सिंह जी
ग्राम—लिलकर
पो० - सिकंदर पुर, बलिया

कई पत्रों और डायरी से विदित होता है कि मैंने अगस्त सन् १९४६ के प्रथम सप्ताह तथा उसके१ मास बाद सितंबर के प्रथम सप्ताहमें सारन जिले की यात्रा की थी। सीवान, छपरा, गोपालगंज आदि स्थानों पर विद्वानों तथा कार्यकर्त्ताओं से मिलकर उन्हें लिखितयोजना दी थी, एवं साहित्यकारों की सूची तैयार कराई थी, यथा—

(१)   जयहिन्द

छपरा
१२-८-४६

श्रद्धेय कुलदीप बाबू

सादर वन्दे,

× × हमारी तबीयत कुछ खराब हो गयी थी, इसीसे पत्रोत्तर में समय पर नहीं भेज सका। × × आपने सारण जिले के साहित्यकों की सूची माँगा था। × × आपकी जो पुस्तकालय योजना है, उसको और पुस्तकालय की नियमावली की एक-एक प्रति पुस्तकालय में भेजने की कृपा करेंगे × ×

आपका—रामनरेश

(२)   श्रीः

छपरा
१७-९-४६

पूज्यवर,

सादर वन्दे,

आप का ११-९-४६ का लिखा हुआ पत्र मुझे परसों ता० १५-९-४६ को प्राप्त हुआ। आपने लिखा है कि आप छपरा आये थे, पर अभाग्यवश हम आप के दर्शन न कर सके। × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

× × २५-८-४६ को यहाँ के नगर-भवन में छपरा ज़िला पुतस्कालय संघ के सभासदों की बैठक थी। शिवपूजनसहाय जी और कवि कन्हैया जी भी आए हुये थे। सारण ज़िला साहित्य-सम्मेलन के मंत्री जी भी थे। वहीं हमने सम्मेलन के मंत्री जी से साहित्य सेवियों की सूची पता के साथ माँगी। उन्होंने हम से एक आदमी का पता बतला दिया और कहा कि आप उन्हीं के पास लिखकर पूछें तो मैंने उनके पास खत लिखा, पर मेरे पत्र का आजतक उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। फिर परसों जिला पुस्तकालय संघ की व्यवस्थापिका-सभा की बैठक थी। × × हम लोगों के बीच सम्मेलन के मंत्री जी और कन्हैया जी दोनों आदमी थे। × × कन्हैया जी ने कुछ कवि और लेखकों का पता लिख कर दिया है, जिसे मैं आपके पास भेज रहा हूँ। × × भोजपुरी मंडल के अधिवेशन की सूचना हमें जरूर देंगे। मैं जरूर आऊँगा।

आप का—रामनरेश

राजेन्द्र कालेज होस्टल नं० २, चतुर्थ वर्ष कला

काशीबाजार, छपरा

साहित्यसेवियों की सूची

१- श्री राजवल्लभ सहाय जी मांझी (आजकल काशी) २- श्री ब्रजनंदन 'आज़ाद' पटना ३- श्री ब्रजशंकर वर्मा, पटना, ४- श्री संतकुमार वर्मा वकील सिवान, छपरा (कवि) ५- श्री योगेन्द्र श्रीवास्तव, वकील, गोपालगंज, छपरा (कवि), ६- श्री त्रिगुणानन्द शुक्ल राष्ट्रवाणी, पटना (लेखक), ७- श्री हरिशंकर उपाध्याय विशारद, पचवेनिया, थाना दरौली, छपरा (लेखक), ८- श्री शिवचंद्र शर्मा 'अद्भन' C/o पुस्तक भंडार, पटना (लेखक), ९- श्री नगीना सिंह 'विमल' (कवि) बी० एम० एच० ई० स्कूल गोपालगंज, छपरा, १०- श्री अच्युतानन्द सिंह (लेखक), साहित्य प्रेस, छपरा, ११- श्री हरेन्द्र देव नारायण (कवि) और १२- श्री रघुवीर प्रसाद, ड०महमूद के नज़दीक, दहियावां, छपरा, १३- जयमंगल दास (लेखक) और १४- परशुराम प्रसाद (लेखक) दौलतगंज एम० ई० स्कूल, छपरा, १५- श्री विजय बहादुर शर्मा C/o कन्हैया लाल तिनकोनिया, छपरा, १६- श्री कन्हैया लाल जी (कवि) तिनकोनिया, छपरा।

इस सूची में सीवान वाले सम्मेलन के स्वागत मंत्री संतकुमार वर्मा का नाम भी चौथे स्थान पर है। ऐसी स्थिति में यह कब संभव है कि वर्मा जी को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरी भोजपुरी सम्बन्धी योजना का पता न था, जब कि सूचि के अनुसार योजना भेजी गई थी और संवाद पत्रों में तत्संम्बन्धी विज्ञप्ति प्रकाशित की थी प्रमाण में तीन पत्र उद्धृत है—

श्री हरिः

१६–६–४६

(१) माननीय मंत्री जी,

आपका पत्र मिला। पढ़ कर प्रसन्नता हुई। अधिवेशन का समाचार मैंने किसी पत्र में पढ़ा था। उसी समय इच्छा हुई कि मै पत्र द्वारा इस सम्बन्ध में विशेष अभिज्ञता प्राप्त करूँ, पर कार्यान्तर में व्यस्त हो जाने से पत्र न भेज सका। × × आपके मंत्रित्व में सम्मेलन का कार्य सफलता पूर्वक संपन्न हो, यही ईश्वर से प्रार्थना है × × मैं दशहरे के वाद प्रतीक्षा में रहूँगा।

भवदीय

वासुदेव द्विवेदी

श्रीमान् मन्त्री महोदय जी

हिन्दी साहित्य-परिषद्, सिकन्दपुर, वलिया

(२)

छपरा १६–१०–४६

प्रिय महाशय जी,

सप्रेमवन्दे,

कृपा कार्ड मिला। मंडल के आयोजन का समाचार जान प्रसन्नता हुई। उस की सफलता में सन्देह नहीं।

भवदीय

मनोरंजन (प्राचार्य राजेन्द्र कालेज)

तिनकोनिया, छपरा

(३)

२६--११--४६

मान्यवर महोदय,

सादर वन्दे। आपका २२–१०–४६ का कृपा कार्ड यथा समय प्राप्त हुआ। शहर में सांप्रदायिक संघर्ष शुरु हो जाने के कारण सब कुछ अनिश्चित सा हो गया। × × परिस्थिति का ख्याल कर आप मुझे क्षमा प्रदान करेंगे।

भोजपुरी मंडल के साथ मेरा हार्दिक सहयोग है। मैं उसकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेवा का सुयोग प्राप्तकर अपने को सौभाग्यशाली समझूँगा। जनपदीय आन्दोलन के समर्थक के नाते मैं उत्साह पूर्वक मंडल के उद्देश्यों की पूर्त्ति में योग प्रदान कर सकता हूँ ऐसा मेरा विश्वास है। इस संवंध में आपके निदेश की उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा करना मेरा विशेष धर्म है। सादर वन्दे।

भवदीय--

कन्हैया

पुन :--यदि भोजपुरी-मंडल की नियमावली मुद्रित हुई हो तो उसकी एक प्रति भेजने का कष्ट करेंगे।

पता--श्री कुलदीप नारायण राय, वेसिक सेन्टर
कबीर चौरा, वनारस

मेरे पास प्रथम भोजपुरी सम्मेलन से सम्वन्धित साहित्यकारों, विद्वानों और राजनीतिक पुरुषों के सैकड़ों पत्र, प्रचारित विज्ञप्तियाँ (एक विज्ञप्ति ऐसी भी है जो भोजपुरी प्रदेश और उसके वाहर के उच्चस्तरीय ६० विद्वानों, साहित्यकारों और जनपदीय कार्यकर्त्ताओं के समर्थन के वाद उनके नाम के साथ प्रचारित की गई है, यह विज्ञप्ति सीवान-सम्मेलन का निश्चय होने से पहले की है। इसमें सर्वश्री गणेश चौवे और महेन्द्र शास्त्री के भी नाम हैं। भोजपुरी क्षेत्र के विद्वानों की वह नामावली भी मेरे पास है, जो शान्ति-निकेतन के हिन्दी-भवन में आचार्य हजारी प्रसाद जी द्वारा लिखी गई थी। सीवान सम्मेलन के प्रस्तावों की जो मूल पांडुलिपि श्री परमेश्वरी लाल जी के हाथ से तैयार की गई थी, वह भी है। उसमें प्रस्तावकों एवं समर्थकों के नाम भी हैं। पहला प्रस्ताव 'भोजपुरी-प्रान्त-साहित्य सम्मेलन की स्थापना के संवंध में है जिसके प्रस्तावक स्वयं गुप्त जी तथा समर्थक सर्वश्री राजवल्लभ सहाय, वा० नारायण प्रसाद सिंह एवं कुँअर दुर्गाशंकर सिंह हैं। एक प्रस्ताव के द्वारा विशेष कार्य के लिए एक उपसमिति संगठित की गई है जिसमें वरिष्ठ श्री शिवपूजन सहाय हैं। इसमें महांत श्री दिग्विजय नाथ, वावा राघवदास और सरदार हरिहर सिंह जैसे राजनीतिकों के नाम भी हैं एवं एक दूसरे प्रस्ताव द्वारा भोजपुरी प्रान्त को भाषा के आधार पर एक राज्य का रूप देने और उसके लिए शान्तिमय साधनों से आन्दोलन करने का निश्चय किया गया है। दो प्रस्ताव सभापति द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं, जिनमें एक कार्यकारिणी की नामावली तथा दूसरा संरक्षकों की नामावली है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्यकारिणी की नामावली में प्रधान-मंत्री श्री परमेश्वरी लाल गुप्त के बाद सहायक मंत्री के स्थान पर मेरा ही नाम है एवं इसके बाद ही अन्य नाम हैं। उक्त नामावली छपी थी और वह मेरे पास थी, जो अब नहीं रह गई है। ये कागज-पत्र समयानुसार चतुर्मुख में प्रकाशित किए जासकते हैं। सम्मेलन का समाचार जो 'आज' दिनांक ४-३-१९४७ पृ० ५ पर छपा है। उसमें भी इन प्रस्तावों की चर्चा है। ये सभी प्रचारित विज्ञप्ति के अनुसार ही हैं।

एक व्यय-पत्रक भी मिला है, जिसमें मुझसे रेल भाड़ा में हुए १७० रुपये व्यय का विवरण है। सिकन्दरपुर में सम्मेलन बुलाने के लिए जो अनुमानित व्यय-पत्रक तैयार किया गया था, वह तथा अन्य तत्संबंधी कागज-पत्र भी हैं। डायरी से भी बहुत सी बातों का पताचलता है। उसमें श्री गदाधर प्रसाद श्रीवास्तव और श्री संतकुमार वर्मा से समय-समय पर मिलने का उल्लेख भी है। उसे कोई माने या न माने यह दूसरी बात है।

समाचार पत्रों में प्रेषित विज्ञप्तियाँ बहुत से पत्रों में प्रकाशित हुईं पर उन्हें ढूंढ निकालना कठिन काम है। श्री पं० गणेश चौबे 'आज' में डा० परमेश्वरी लाल गुप्त द्वारा प्रकाशित लेख को अंतिम रूप से निर्णय का साधन या प्रमाण मानते हुए उसके प्रकाशन पर बल देते हैं अस्तु उक्त लेख का प्रारंभिक अंश उद्धृत किया जा रहा है लेख बड़ा है पर पूरा लेख भी समयानुसार कभी प्रकाशित किया जा सकता है। जिन बंधुओं ने मुझे 'अँजोर' माटी के गमक, ललकार आदि में तथा सभाओं में गालियाँ देते हुए 'हम-हम' की होड़ लगाई है, उनके नाम मुझे पूरे लेख में कहीं न मिले। भोजपुरी साहित्य के सर्जक और शोधकर्त्ता डा० ग्रियर्सन, डा० उदयनारायण तिवारी, श्री दुर्गाशंकर सिंह 'नाथ' आदि के दो-चार नाम अवश्य उनकी कृति की सूचना के साथ आए हैं और भोजपुरी प्रान्त के निर्माण संबंधी प्रस्ताव पर बहस में भागलेने वाले श्री नारायण बाबू तथा श्री इन्द्रासन सिंह का भी उल्लेख हुआ है। लेख का प्रारंभ इस प्रकार हुआ है—

"इसी पहली और दूसरी मार्च को सीवान (छपरा) में भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन हुआ। मेरे छः वर्ष की कल्पना ने साकार रूप धारण किया। कल्पना में हाथ था सुखराम सिंह का, उसे साकार बनाने का यत्न किया श्री कुलदीप नारायण सिंह ने।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"गतवर्ष अक्टूबर की बात है, मुझे अचानक पत्रों में सिकन्दरपुर (बलिया) निवासी श्री कुलदीप नारायण सिंह की एक विज्ञप्ति पढ़ने को मिली, जिसमें उन्होंने भोजपुरी-सम्मेलन आयोजित करने की चर्चा की थी। वे उसके लिए प्रयत्न कर रहे हैं, यह जानकर मैं उन्हें एक पत्र लिखने वाला था कि श्री बनारसीदास चतुर्वेदी का एक पत्र मुझे मिला, जिसमें उनका परिचय दिया गया था और मुझे उनके साथ सहयोग करने को कहा गया था। पत्र के अनुसार मैंने श्री कुलदीपनारायण जी को पत्र लिखा। उसका उत्तर मिला। फिर वे स्वयं मिले। भोजपुरी के लिए उनकी लगन देखकर मैं दंग रह गया। वे बलिया में सम्मेलन करना चाहते थे, पर उनके सामने उनकी अपनी कठिनाइयाँ थीं।"

"इसी बीच ज्ञात हुआ कि सीवान (छपरा) में सारन जिला हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का सातवाँ अधिवेशन हो रहा है। विचार हुआ कि क्यों न इसी के साथ भोजपुरी-सम्मेलन का आयोजन कर दिया जाय। फल स्वरूप कुलदीप नारायण जी इसी उद्देश्य से लोगों से मिले।"

"युग की विचार-धारा समान रूप से लोगों के मस्तिष्क में प्रवाहित होती रहती है। इसी कथन के अनुसार न जाने किन कारणों से स्वागत कारिणी समिति स्वयं भी भोजपुरी-सम्मेलन करने की बात सोच रही थी और उसने करने का निश्चत भी कर लिया था। अतः कुलदीप जी के प्रस्ताव का उन्होंने सहर्ष स्वागत किया और मेरी कल्पना साकार हुई और पहली और दूसरी मार्च को भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।" (आज १७ मार्च १९४७ पृ० ४ कालम १—२)

श्री गुप्त जी का यह कहना कि "उनके (मेरे) सामने उनकी (मेरी) अपनी कठिनाइयाँ थीं" का अभिप्राय यह है कि उन दिनों मैं कई मास से बलिया से दूर वाराणसी का निवासी हो रहा था और उसके बाद मेरी नियुक्ति गोरयाकोठी (सीवान) के हाईस्कूल में हो गई। इस प्रकार मैं बलिया से दूर पड़ गया था और मेरे लिए सीवान में सम्मेलन कराना बलिया की अपेक्षा सुविधाजनक था एवं इसी हेतु सीवान सम्मेलन बलिया वालों की ईर्ष्या का कारण बना। यद्यपि उसके अध्यक्ष बलिया वासी ही थे।

उक्त लेख में कथित—"इसी कथन के अनुसार न जाने किन कारणों से स्वागतकारिणी समिति स्वयं भी भोजपुरी-सम्मेलन करने की बात सोच रही थी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और उसे करने का निश्चय भी कर लिया था में "किन कारणों" पर विचार कर लेना आवश्यक है। वह कारण स्पष्ट है—भोजपुरी-सम्मेलन कराने के संबंध में मेरे द्वारा प्रचार-कार्य सीवान साहित्य सम्मेलन का निश्चय किए जाने के महीनों पूर्व से चल रहा था, जिससे सारन जिले के प्रायः सभी साहित्य-सेवी एवं कार्यकर्त्ता जानते थे।

मैं व्यक्तिगत रूप से प्रायः लोगों से मिल चुका था। मेरे द्वारा प्रचारित योजना स्वागत-कारिणी के सदस्यों के पास थी और उनसे मेरा संपर्क एवं पत्राचार चालू था, जैसा कि पहले बताया जा चुका है एवं पत्र उद्धृत किए जा चुके हैं श्री पं० महेन्द्र शास्त्री के पत्र-संख्या ३ से स्पष्ट है कि ११ दिसंबर ४६ तक सीवान की स्वागत-समिति ने भोजपुरी-सम्मेलन कराने के संबंध में कुछ भी निश्चय न किया था और संस्कृत सम्मेलन का निश्चय तो २१ फरवरी के बाद ही हुआ। यह भी हो सकता है कि मेरे प्रस्ताव के बाद ही भोजपुरी-सम्मेलन की बात स्वागत समिति के सम्मुख प्रस्तुत हो कर उसकी कार्यवाही-बही में दर्ज कीगई हो। मैं २२ जनवरी बुधवार को स्वागत समिति के अधिकारियों से मिला था और यह सब उसके बाद ही हुआ होगा। यह भी हो सकता है कि मेरी विज्ञप्ति के अनुसार १६ नवंबर को ही सीवान साहित्य-परिषद् और स्वागत-समिति में इस विषय की चर्चा चली हो, किन्तु यदि वह स्वागत समिति का स्वतंत्र उद्देश्य होता तो उसके द्वारा भोजपुरी-सम्मेलन की एक रूपरेखा तैयार की गई होती, उसका प्रचार-प्रसार और विज्ञापन किया गया होता, परन्तु जब ये सारी बातें मुझ पर निर्भर करती हैं तो फिर उस भोजपुरी-सम्मेलन का संयोजक किसे कहा जायेगा ? कागज पत्र देखने से यह साफ जाहिर होता है कि भोजपुरी प्रांत साहित्य-सम्मेलन का संयोजक मैं ही था और मेरे कहने से सीवान की स्वागत समिति ने उस योजना को अपने कार्यक्रम की सूची में सम्मिलित मात्र कर लिया था। इससे स्वागत समिति का यश बढ़ा और मुझ को एक मंच से सम्मेलन कराने में सुविधा मिल गई एवं आतिथ्य सत्कार का मेरा भार हल्का हो गया। यही बात बहुत से पत्रों से झलकती है। यदि स्वागत-समिति की सूची में भोजपुरी प्रांत-साहित्य-सम्मेलन की योजना सम्मिलित न की गई होती तो स्वागत-समिति द्वारा प्रतिनिधियों का आतिथ्य कैसे किया जाता ?

आश्चर्य की बात है कि 'सप्तम सारन जिला हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन (सीवान) के स्वागत मंत्री श्री संतकुमार वर्मा ने 'अँजोर (कला १४ कि० ३-४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और 'माटी के गमक' (अक्टूबर, दिसं० १९७३) में जो वक्तव्य दिया है वह उन्हीं के हस्ताक्षर से प्रकाशित उसी सम्मेलन के निमंत्रण पत्र और उसके कार्यक्रम से मेल नहीं खाता (उनका निम्नांकित कथन सम्मेलन से मात्र एक सप्ताह पूर्व प्रकाशित निमंत्रण-पत्र से मिलाया जा सकता है। वे कहते हैं—

"ओही (१: नवम्बर १९४६ की) वइठक में एगो महत्त्व पूर्ण वात ई तय भइल कि हिन्दी-सम्मेलन का साथे भोजपुरी-सम्मेलन, संगीत-सम्मेलन संस्कृत-सम्मेलन आ हिन्दी-भोजपुरी कवि-सम्मेलन अलग-अलग होखो। सदस्य लोग बड़ा उत्साह से एगो स्वागत समिति निर्माण कइल। × × हिन्दी सम्मेलन के सभापतित्व कइनी श्री राजवल्लभ सहाय, भोजपुरी सम्मेलन के प्रो० बलदेव उपाध्याय, संगीत सम्मेलन के आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री, संस्कृत सम्मेलन के दर्शन केशरी श्री गोपाल शास्त्री, हिन्दी कवि सम्मेलन के महाकवि दिनकर जी आ भोजपुरी कवि सम्मेलन के सभापतित्व कइनी श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह 'नाथ'। एही तरह से सबके उद्घाटनकर्त्ता भी अलग-अलग महान मनीषी लोग रहे।"

किन्तु निमंत्रण पत्र में प्रथम दो सम्मेलन और कवि सम्मेलन तथा उनके सभापतियों का ही उल्लेख है। कवि सम्मेलन के सभापति भी उसमें 'श्री जानकी वल्लभ शास्त्री' बताये गए हैं। शेष सम्मेलनों का न उल्लेख है, न उनका कार्यक्रम इसी से स्पष्ट है कि शेष सम्मेलनों को आयोजित करने का निश्चय आवश्यकतानुसार २१ फरवरी के बाद ही हुआ एवं उद्घाटन करने वालों का निश्चय भी।

अभी केवल साढ़े-सत्ताइस वर्ष ही हुए। प्रथम भोजपुरी-सम्मेलन में भाग लेने वाले लोग जीवित हैं। इतिहास पर पर्दा डालना और दुराग्रह उचित नहीं। विद्वान की बड़ाई सत्य के उद्घाटन में है, कुतर्क और 'हौं-हौं' करनेमें नहीं। अस्तु विद्वानों तथा विचारकों से मेरा नम्र निवेदन है कि वे प्रस्तुत विषय पर निष्पक्षता के साथ विचार कर नीर-क्षीर विवेक करें। मेरा स्पष्टीकरण सबके समक्ष है।

इस विषय पर पर्याप्त जानकारी के लिए 'अँजोर कला १४ किरिन ३-४ में प्रकाशित मेरे लेख तथा अगले अंक में प्रकाशित पत्र और डायरी-स्तंभ पढ़ना चाहिये जिसमें कुछ पत्र उद्धृत होंगे। यदि अँजोर में मेरा दूसरा उत्तर पत्र भी छप गया होता तो इसके संबंध में काफी सामग्री संकलित हो गई होती, किन्तु अँजोर के संपादक जी पर अनुचित दवाव डालकर उन्हें सत्यान्वेषण से रोका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया। जैसा कि माटी के गमक और ललकार के लेखों से स्पष्ट है यथा—

'एक ओर जहाँ एकता के जरूरी बा, उहाँ पटना से निकले वाला 'अँजोर' आ अँजोर के संपादक के कारण सब बनल काम बिगड़ल चाहत बा। × × झड़प के खड़ा क के आपसी एकता में भंग करे के अँजोर आपन पूरा पाठ अदा कइलस।' (ललकार जनवरी—मार्च १९७३ पृष्ठ १)

फिर भी सत्यान्वेषण की दिशा में जिस निर्भीकता के साथ पांडेय नर्मदेश्वर सहाय ने अपने धर्म का पालन किया, वह विशेष रूप से प्रशंसनीय एवं महत्त्व पूर्ण है। वे इसके लिए याद किए जायेंगे।

विश्राम के विरहे के सुमधुर गायक जिस मुखराम सिंह ने गुप्त जी को भोजपुरी की ओर आकर्षित किया था, वे सीवान के भोजपुरी-सम्मेलन में आए थे और आजमगढ़ जनपद के प्रतिनिधि रूप में कार्य-समिति के सदस्य भी चुने गए थे। उनका एक पत्र यहाँ उद्धृत कर देना अप्रासंगिक न होगा—

आजमगढ़
२१-१-४७

आदरणीय राय साहब,

सादर वन्दे।

आपका पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अपनी कल्पनाओं को आप लोगों ने कार्य रूप में परिणत कर ही दिया। आशा है आप लोगों के सहयोग से मैं भी कुछ भोजपुरी की सेवा कर सकूँगा। मैं आपके सम्मेलन में अवश्य सम्मिलित होऊँगा तथा आप लोगों के आदेशों पर चलने को भी भरपूर चेष्टा करूँगा। यदि हो सके तो यह सूचित करने का कष्ट कीजिएगा कि सम्मेलन में कौन-कौन से लोग आ रहे हैं। आशा है, आप स्वस्थ तथा प्रसन्न होंगे।

आपका
मुखराम सिंह

श्रीयुत कुलदीप नारायण राय जी
ग्राम-लिलकर, पोस्ट-सिकन्दरपुर, जिला-बलिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचार्य पं० बनारसी दास चतुर्वेदी की

८३वीं जन्म-जयंती के अवसर पर अभूतपूर्व

कवि-गोष्ठी

दिनांक २४-१२-७४ को आचार्य बनारसी दास चतुर्वेदी की ८३वीं जन्म-जयंती के पावन अवसर पर, लब्ध प्रतिष्ठ, तरुण कवि श्री किशोरी शरण स्वास्थ्य शिक्षा एवं सूचनाधिकारी, बलिया के निवास-स्थान पर अभूत पूर्व ऐतिहासिक कवि-गोष्ठी का अत्यन्त सफल आयोजन, जनपद के स्वनामधन्य साहित्य सेवी यशस्वी शोधकर्ता, श्री कुलदीप नारायण जी 'झड़प' एवं प्रसिद्ध स्वातन्त्र्य सेनानी श्री रामनगीना राय की प्रेरणा से हुआ, जिसमें जनपद के लगभग सभी प्रसिद्ध, वयोवृद्ध, प्रौढ़ एवं तरुण कवियों ने भाग लिया।

विशेष रूप से आमंत्रित पर्यवेक्षकों की पंक्ति में बिहार के भूतपूर्व विधायक पाण्डेय सूर्य नारायण शर्मा, प्रो० कुँअर बहादुर श्रीवास्तव, उपाचार्य, मु० म० टाउन महाविद्यालय, पं० विजय शंकर पाण्डेय, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग तथा श्री० राम दुलार सिंह, प्रवक्ता, मु०म०टाउन इण्टर कालेज आदि विद्वानों की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

शरद-रजनी के तुहिन-शीतल वातावरण में, भारतीय सभ्यता की सज-धज से सुसज्जित, अगरु-सुगंधित कक्ष में, ठीक ६॥ बजे, जनपद के वयोवृद्ध कवि श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' की अध्यक्षता में, गोष्ठी का शुभारंभ श्री किशोरी शरण जी ने उपस्थित कवि मण्डल और विशिष्ट आमंत्रित सज्जन वृंद के स्वागत् अभिवादन से किया।

आरम्भ में श्री 'झड़प' जी ने आचार्य चतुर्वेदी के सरल, कर्मठ एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए, उनकी साहित्यिक सेवाओं और कृतित्व की विशद समीक्षा प्रस्तुत करते हुये कहा कि चतुर्वेदी जी उन गिने-चुने समर्थ साहित्यकारों में से हैं जिन्होंने न केवल हिन्दी को विविध विधाओं द्वारा अपनी सेवाओं से पुष्ट किया, वरन्, अपनी प्रेरणा और निर्देश द्वारा अनेक साहित्यकारों को जन्म दिया। आपका 'स्व' अत्यन्त विशाल, उदात्त और महान् है, जो किसी भी साहित्य-साधक के लिए अत्यन्त आवश्यक गुण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविवर श्री 'सुन्दर' जी ने झड़प जी के विचारों का अनुमोदन करते हुए आचार्य चतुर्वेदी के दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की।

तदनन्तर, कविवर श्री शम्भुनाथ उपाध्याय के सरस्वती-वन्दना से कवि-गोष्ठी का समारम्भ हुआ। नवोदित कवि श्री भृगुस्वरूप श्रीवास्तव के 'उन्मन मन' ने अपनी प्रौढ मुक्तकों और रचना से वातावरण को काव्यमय बनाया।

श्री ध्रुवदत्त पाण्डेय 'ध्रुव' के अत्यन्त सुमधुर लालित्यपूर्ण मंदाक्रांता छन्दों में प्रस्तुत किए गये गीत की श्रोताओं ने मुक्त-कण्ठ से सराहना की। किन्तु "मानव" खंड काव्य के गायक कवि श्री सतीश 'सहयोगी' विप्लवकारी 'विप्लव' की ध्वनि से वातावरण गूँज उठा जिसको शान्ति प्रदान किया कविवर शब्दानन्द राय 'शब्द' के आध्यात्मिक सुमधुर शब्दों ने। पर इस युग के अशांत वातावरण में शांति कहाँ तक टिक सकती है। किशोरीशरण जी ने अपनी कविता 'युग का अभिशाप'—

तो अब अखबारों में छपने से क्या होगा?
सुन्दर सुसज्जित शब्दों में भाषणों से क्या होगा?
जब तक मानव-मानव को पहचानेंगे नहीं,
अधिनियमों के बनने से क्या होगा?

द्वारा पुनः विप्लव की टीस ताजी कर दी।

आकाशवाणी के गीतकार श्री भट्ट जी के कोमल-मधुर भोजपुरी गीत 'जिनिगिया के दुख नाहीं कहले कहाला' ने तो वातावरण में मिश्री ही घोल दिया, जिसे करुण-रस-मूर्ति श्री राधामोहन 'धीरज' ने भंग करना उचित न समझकर, मात्र आठ पंक्तियों की अपनी करुणिम रचना से अपना गला छुड़ाया।

तत्पश्चात् जनपद के प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री लालजी सहाय 'लोचन' जी ने अपने सिद्ध, सफल और चुटीली कुण्डलियों की झड़ी लगादी जिसे सुनकर श्रोता गण हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये और वातावरण मुक्तहास के कहकहों से आन्दोलित हो उठा।

रसिक श्रोताओं और कविजन के पारस्परिक हास्य विनोद और गरमा-गरम चाय की चुस्कियों तथा ताम्बूल के गिलौरियों के दौर के साथ, गोष्ठी अपने शबाब पर तब पहुँची जब ७६ वर्षीय कवि, भोजपुरी-रत्न, डाक्टर श्री रामविचार पांडेय का नाम संचालक महोदय ने एक लम्बी भूमिका के साथ पुकारा।

भोजपुरी-रत्न डा० पाण्डेय ने कविता-पाठ के पूर्व, भाषा-विज्ञान तथा भाषाओं के विकास-सम्बन्धी अपने तार्किक तथ्यपूर्ण विचार व्यक्त करते हुए भोजपुरी को बंगला, मराठी और उड़िया आदि भाषाओं के समतुल्य एक स्वतंत्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्थ प्रान्तीय भाषा बताया और कहा कि भारत की वास्तविक राष्ट्र-भाषा तो भारती है, न कि हिन्दी। हिन्दी-उर्दू का विवाद तो आंग्ल-गौरांग प्रभु की उपज है।

भाषा-विज्ञान की अपनी विषद समीक्षा के अनन्तर पाण्डेय जी ने अपनी 'हिरामन सुगना' के नख-शिख वर्णन से श्रोताओं को सराबोर कर दिया और कुछ देर के लिए वातावरण कबीर के निर्गुण वादी स्वर से आच्छादित हो गया।

डा० पाण्डेय के इस सरस वातावरण को वैचारिक गंभीरता प्रदान की प्रसिद्ध गीतकार, कविवर श्री जगदीश ओझा 'सुन्दर' ने अपनी खड़ी बोली 'आज वही गीत रचे, आज वही गाये, फूँक-फूँक लाशों में प्राण जो जगाये।' और भोजपुरी के गीतों द्वारा जिनमें था राष्ट्र की वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों का मर्मस्पर्शी चित्रण, जिसे सुन कर श्रोता थोड़ी देर के लिये मर्माहत से हो उठे।

'सुन्दर' जी ने अपना एक संस्मरण सुनाते हुए जो अत्यन्त मार्मिक बात कही, वह थी—'हिन्दी के बँगले में भोजपुरी के जँगले की बात।'

इस प्रकार उन्होंने सूत्ररूप में हिन्दी और भोजपुरी के परस्पर सबन्ध की बड़ी रोचकता के साथ युक्ति-युक्त व्याख्या कर दी।

अन्त में, इस अभूतपूर्व सफल ऐतिहासिक गोष्ठी के अध्यक्ष, अनेक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि की रचनाओं के सृष्टा, बाल-साहित्य के उन्नायक, जनपद के वयोवृद्ध, अन्यथा युवक, साहित्यकार श्री रामसिंहासन सहाय 'मधुर' ने अपने महत्त्वपूर्ण संस्मरणों और प्रेरणाप्रद परामर्शों के साथ, दीर्घकाल के मौन के पश्चात्, उन्मुक्त कंठ से अपनी नवीनतम रचना 'गरल-सुधा' के अनेक अध्यायों का सस्वर पाठ किया और आचार्य बनारसीदास जी चतुर्वेदी के स्वस्थ दीर्घायु की मंगल कामना के साथ अपने आशीर्वचन से गोष्ठी का समापन किया।

गोष्ठी का सफल संचालन जनपद के प्रसिद्ध व्यंग्यकार साहित्यिक श्री लालजी सहाय 'लोचन' ने किया। अन्त में, मधुर प्रीतिपान के साथ कवि एवं श्रोतागण समान रूप से गोष्ठी की उत्कृष्ठता की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए निज-निज गृहों को विदा हुये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस कवि गोष्ठी का इतना प्रभाव पड़ा कि इसके समापन पश्चात् शीघ्र उसी मंच पर मुहल्ले की लड़कियों ने कवि गोष्ठी का आकर्षक ढंग से अनुकरण किया जिसकी अध्यक्षता की, श्रीमती विजयलक्ष्मी एम० ए० शोधछात्रा ने तथा भाग लिया, कु० वन्दना कक्षा—३, कु० विदुषाला कक्षा—६, कु० कलिनी शुक्ला बी० ए०, कु० मधु शुक्ला बी० एस-सी० अन्तिम वर्ष, कु० सीता तिवारी इण्टर द्वितीय वर्ष तथा समापन हुआ वृद्ध माताओं द्वारा सोहर गाकर।

शब्दानन्द राय 'शब्द'
प्रवक्ता, श्री मुरली मनोहर टाउन इण्टर कालेज,
बलिया

रिपोर्ताज—

शिवप्रसाद विद्यामंदिर बक्सर और उजियार में चतुर्वेदी जी की ८३वीं वर्ष गांठ—

आज २४ दिसंबर का पावन दिन है। क्या अध्यापक, क्या विद्यार्थी सभी के मुख मंडल पर प्रफुल्लता विराज रही है। पाँचवीं घंटी लग चुकी है। इसी घंटी की समाप्ति पर हिन्दी साहित्य के महारथी संपादकाचार्य पं० बनारसी दास चतुर्वेदी की ८३वीं वर्ष-गाँठ अध्यापकों, छात्रों और नागरिकों की समवेत सभा में मनाई जायेगी। आचार्य जी का आदेश कक्षाओं में घुमाया जा रहा है।

आमंत्रित नगर-निवासी अभी से आने लगे। सभा मंडल में उनके बैठने की व्यवस्था की जा रही है। कई अध्यापक आगंतुक सज्जनोंको सभा-मंडप तक ले जाने और बैठाने में व्यस्त हैं। आचार्य जी स्वयं सारी व्यवस्था का निरीक्षण कर रहे हैं और साथ ही साथ आने वालों की आव-भगत भी। चपरासी-गण अपने-अपने काम में दौड़-धूप कर रहे हैं, सभी व्यस्त, कोई कुर्सियाँ लगाने, कोई पानी लाने और कोई फर्श बिछाने में संलग्न है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लीजिए, छठीं घंटी बजी। कक्षाओं से अध्यापक गण निकल आए। उनके पीछे-पीछे छात्रों का प्रवाह सभामंडप की ओर बढ़ चला। सभा-सागर में जैसे ज्वार आ गया हो। सौ-सौ की जमात बैठ गई, पर कितनी शालीनता और शान्ति के साथ, न कहीं शोरगुल, न हड़हड़-भड़भड़!

उत्सुकता और प्रसन्नता के वातावरण में आचार्य जी ने उठकर आगन्तुक सज्जनों का स्वागत और कार्यवाही का समारम्भ किया तथा दो छात्रों ने सुमधुर समवेत स्वर में ईश-वंदना की। तत्पश्चात् पं० जगदीश शर्मा ने आचार्य पं० बनारसी दास चतुर्वेदी के दीर्घ-जीवन की संस्कृत छन्दों में कामना की और उसकी हिन्दी में व्याख्या की। उन्होंने उनके अतिमानवी गुणों पर विशद प्रकाश डाला। फिर पं० नारायणदत्त द्विवेदी ने कविता-पाठ पूर्वक चतुर्वेदी जी के दीर्घायु होने की प्रभु से प्रार्थना की। इसके बाद क्रमशः पं० राजेन्द्र शर्मा; कविवर श्री विश्वनाथ प्रसाद 'वीर', श्रीनारायण राय, श्री शेषनाथ राय श्री गोपाल प्रसाद आदि ने चतुर्वेदीजी के महान् कार्यों एवं दिव्यगुणों की चर्चा के साथ उनके शतायु होने की कामना की। सभाकी कार्यवाही लगभग ढाई घंटे चली, जिसके बाद सब लोग प्रसन्नमुद्रा में बातचीत करते हुये अपने-अपने घर गये।

बक्सर की सभा का समापन होते ही घड़ी पर जो दृष्टि गई, वह ५ बजा रही थी। अरे, यहीं पाँच बज गए! अभी दो किलोमीटर चलना है। उजियार का आयोजन ६ बजे से ही तो है?

साइकिल का पहरुआ टोकन देख-देख कर साइकिलें निकाल रहा है। साइकिल लेने वालों की भीड़ लग गई और अवसर के अनुसार दो अन्य चपरासी भी टोकन देखकर साइकिल निकालने में जुट गए। उनके इस सहयोग से जल्दी ही सबको अपनी-अपनी साइकिलें मिल गईं और भीड़ छँटते देर न लगी। जाड़े का मौसम जो है, कोई ठहरना थोड़े चाहेगा! लो पुनीत गंगा तट पर आगए। वही उजियार गाँव है, बक्सर के दूसरे पार पुल से जुड़ा गंगा मैया, का आर-पार ही तो है! दोनों में अंतर कुछ नहीं, बस एक गंगा जी का दायाँ और दूसरा बायाँ तट। पर बक्सर बिहार के भोजपुर जनपद में है और उजियार उत्तर प्रदेश-स्थित बलिया जनपद में। कहते हैं—श्री रामचंद्र जी की बक्सर (विश्वामित्र आश्रम) की यात्रा में इसी स्थान पर उषा काल का उजियार (उजाला) हुआ था, तब से इसे 'उजियार' कहते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अजी, आ तो गए ! बलिया–वाराणसी सड़क के पूरब सटा हुआ, उजियार गाँव का पच्छिमी छोर, रामरज से पुते पीले-पीले पक्के मकान की एक लंबी शृंखला, कितना रमणीक है, यह स्थल ! तीन ओर खुला स्थान, गाँव का प्रवेश द्वार, हरे-भरे पेड़पौधों और लघु-उद्यान से चतुर्दिक सुरम्य। यही जनपदीय आन्दोलन के अग्रदूत, हिन्दी–भोजपुरी के सुलेखक और आदर्श अध्यापक अनिलकुमार राय 'आंजनेय'का घर है। उसके पच्छिमीभाग में यह उनकी चौपाल है। कितनी सफाई है यहाँ और कितने भले हैं ये लोग ! सज्जनता की मूर्ति विनम्रता के अवतार। सचमुच अपने गुणों से भी यह गाँव उजियार है। यहाँ आकर मन प्रसन्न होगया।

वही तो आंजनेय जी खड़े हैं, कुछ व्यस्त से। जिसके यहाँ कोई आयोजन होता है, उसे व्यवस्था में व्यस्त होना ही पड़ता है। लो, आंजनेयजी की नजर इधर भी घूम गई। देखते ही मुस्करा उठे। कितना प्रसाद है, इस सौम्य मूर्त्ति में ! सारी व्यस्तता का परित्याग कर 'आइए—आइए' कहते आगे बढ़ आये।

बहुत से लोग बैठे हैं, कुछ चले आ रहे हैं। लड़के भी है, बूढे भी हैं और नौजवान भी। शाम के सवा–छ बज चुके हैं अर्थात् सभा का समय हो चुका है। कार्यारंभ के लिए सब लोग आतुर हो रहे है, किन्तु सभापति जी की प्रतीक्षा है। हाँ, तो वे भी आगए। हल्का सा कोलाहल हुआ—'आगए–आगए'।

आंजनेय जी ने उनकी अगवानी की और मंच पर लाकर बिठा दिया। कहीं से आवाज आई—'अब विलंब केहि कारन कीजै।' किसी दूसरे ने कहा—'अब कार्रवाई प्रारंभ हो।'

सभापति जी के प्रस्ताव पूर्वक आसन ग्रहण करने पर आंजनेय जी ने आज के इस आयोजन का उद्देश्य बताया। उन्होंने महापुरुषों की वर्षगांठ का महत्त्व बताते हुए चतुर्वेदी जी के दिव्य व्यक्तित्व और कर्म-कौशल की झाँकी उपस्थित की। उन्होंने कहा कि इस युग में वे अपने ढंग के अकेले हैं। उनका सानी कोई और नहीं। वे उत्प्रेरक साहित्यकार है। उनके तीन काम बड़े महत्त्व-पूर्ण हैं— प्रवासी भारतीयों का उद्धार, शहीदों का सम्यक् श्राद्ध और जनपदीय आंदोलन का प्रचार-प्रसार। ऐसे साधना शील महापुरुष की वर्षगांठ मनाकर उनके गुणों को हृदयंगम करना-कराना हमारा कर्त्तव्य होना चाहिए। इस प्रकार सामाजिक रूप में कृतज्ञता ज्ञापन भी हो जाता है। उन्होंने उनकी हिन्दी सेवाओं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की भी चर्चा करते हुए उनके शतायु होने की कामना की।

ये कौन हैं? क्या यही सोहांव इण्टर कालेज के उपाचार्य श्री शिवकुमार राय हैं। इन्होंने चतुर्वेदी जी के जिन महान् गुणों का दर्शन कराया है उसमें अतिशयोक्ति नहीं वास्तविकता है। इनकी कथन शैली बड़ी रोचक है। तभी तो इनके विद्यार्थी इनकी अध्यापन-कला से प्रसन्न रहते हैं। वास्तव में योग्य हैं।

ये हैं श्री महेन्द्रनाथ राय, 'आंजनेय' जी के चाचा और ये श्री सिद्धि राय और ये शिवनारायण राय (मास्टर साहब), इधर श्री मुनेश्वर राय जी हैं सारा गाँव हो तो उमड़ पड़ा है। बिरहिया गनेस गोंड भी आजमे हैं। छात्रों की जमघट भी खूब है। कितनी प्रफुल्लता और आह्लाद है इनमें! सभा के समापन के बाद गाने-बजाने का कार्यक्रम भी है। पहले गनेस का बिरहा होगा और लड़कों का समूहगान भी। और तब संगीत सम्मेलन। गायक मंडली जुटने लगी है गर्म चाय भी आगई। ये बच्चे कितने उल्लास में हैं! बड़ी शालीनता से चाय का पुरवा हाथ-हाथ में पहुँचाने लगे। रवीन्द्रनाथ पुरवा ठीक कर रहे हैं, वीरेन्द्र उनमें चाय उँड़ेल रहे हैं धीरेन्द्र और हेमू हाथों-हाथ उन्हें बैठे-लोगों तक पहुंचा रहे हैं। वाह! चाय की 'गरम-गरम' चुस्की ने ठंढकको भगा दिया। धन्य हैं, उजियार गाँव के जन-मानस को आह्लादित करने वाले 'आंजनेय जी! कानों को अमृत रसपान कराया और मुँह को मधुर चायपान भी दिया। धन्यवाद! दुहरा धन्यवाद!!

—दर्शनानन्द

अपूरणीय क्षति

यह वर्ष साहित्यिक क्षेत्र में मनहूस कहा जा सकता है। दिनकर और सुधांशु के अस्ताचल पर जाते ही सेठ गोविन्द दास का भी स्वर्गवास हो गया। राजनीतिक क्षेत्र में श्री सुचेता कृपलानी और रामसेवक यादव हम लोगों में नहीं रहे। श्री ऊ-थांत का निधन भी इस वर्ष की एक अत्यन्त शोक जनक घटना है।

भगवान् इन मृतात्माओं को शांति और उनके सम्बन्धी-जन को शोक सहने की शक्ति दें।

—सम्पादक

खेद-प्रकाश

हमें इस बात का खेद है कि प्रस्तुत आश्विन अंक कागज की कठिनाई के कारण विलम्ब से प्रकाशित हुआ, जिसके लिये पाठक बंधुओं को अप्रत्याशित प्रतीक्षा करनी पड़ी।

—सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादकीय –

कलकत्ता-दर्शन

भोजपुरी-प्रदेश में एक लोकोक्ति प्रचलित है— 'कलपर कलकत्ता' किन्तु जिसने कलकत्ते को नहीं देखा, वह लोकोक्ति के मर्म को ठीक-ठीक नहीं समझ सकता। कलकत्ता और उसके उपक्षेत्र में कल-कारखानों की भरमार तो है ही, यहाँ का संपूर्ण जन-जीवन ही यांत्रिक है, जिसकी ऊष्मा में मानव हृदय की सरसता भाप बनकर उड़ गई है। संपूर्ण नगर एक विशाल यंत्र है, जिसके छोटे से पुर्जे से लेकर भारी-भरकम भाग तक, सभी अंग-प्रत्यंग सदा बड़ी तेजी से घूम रहे हैं। लोग पैसा कमाने के साधन मात्र हैं। यहाँ की अट्टलिकायें यदि तमसप्रिय लक्ष्मीवाहनों की आरामगाहें हैं, तो सड़कें रजत-रज की मरीचिका में भागते हुए वितृष्ण जनसमूह का प्रवाह। किसी को एक क्षण का अवकाश नहीं। जीवन-मरण का प्रश्न बड़ा विकट है। मरण ही उसका अवकाश है, यह बात कलकत्ता निवासियों को देखकर सुगमता से समझ में आ जाती है।

हवड़ा की अपनी अलग नगर-पालिका और जिला भी है, पर हवड़ा और कलकत्तानगर में प्रायः इतना ही अन्तर है कि दोनों पुलों द्वारा जुड़े हुए एक ही प्रवाह के दो किनारे हैं। धूमाच्छादित आकाश और उद्योग-धंधे की स्थिति में अभिन्नता है। यहाँ तक कि बहुत सी सड़कों पर कूड़ा-कचरा और कीचड़ का बाहुल्य भी परस्पर अनुरूप है। कलकत्ते में पाँकपड़ा, कचरापड़ा, मछुआ बाजार आदि स्थान तो हैं ही; हवड़ा नाम भी स्थिति के अनुसार है, जो शायद भोजपुरी 'हावड' है, जिसका अर्थ होता है अधिक लोगों और पशुओं के आवा-गमन से मथित कीचड़ से भरा हुआ गंदास्थान। यह नाम आज भी सार्थक है। इस नगर में भोजपुरी भाषा-भाषी लोगों की संख्या अधिक है, पर भोजपुरी प्रदेश की सरस-स्निग्ध भावधारा कीचड़ में फँसी नदी जैसी और उन्मुक्त विचार पिंजरे में पड़े पक्षी जैसे पंख फड़फड़ाने में असमर्थ दिखाई पड़े।

जो लोग कलकत्ते के वातावरण में ठीक नहीं बैठपाते, वे दिनभर चक्कर काटते और रातभर उनका सिर चक्कर खाता है। यातायात के साधन तो इतने हैं कि ट्रकों, बसों, टैक्सियों ट्रामगाड़ियों और रिक्सों के प्रवाह से पार पाना कठिन हो जाता है, पर भीड़ इतनी कि बसों और ट्रामगाड़ियों में खड़ा होने को भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगह नहीं मिलती, धक्के में कचूमर निकल जाता हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान पर बस से जाना बहुत कष्टकर और टैक्सी से बहुत महँगा है। फुटपाथ पर तरकारी बाजार, मछलीहाट और कपड़े आदि की दुकानें लगाये जाने से चलने वालों के लिए दुर्गति और धक्कम-धक्का रहता है। यदि कोई टैक्सी या बस सड़क की कीचड़ से होकर निकल जाय तो टोली की टोली गंदे कीचड़ से होली खेल जाती है। जब मैंने एक कलकतिहा सज्जन से इसकी चर्चा की तो वे इस प्रकार कहने लगे—'एक पापी कलकतिहा के मरने पर जब यमदेव ने उसे नरक में ले जाने का आदेश दिया तो वह गिड़गिड़ा कर बोला—भगवन् ! क्या नरक से निकाल कर भी नरक में डाला जाता है ? यम ने पूछा—सो कैसे ? 'उसने उत्तर दिया—'मैं कलकतिहा हूँ।'

कलकत्ता एक कारबारी क्षेत्र है। यहाँ के प्रायः हिन्दी-विद्यालयों की स्थापना शिक्षा प्रसार के उद्देश्य को ध्यान में रखकर नहीं, धनोपार्जन के उद्देश्य को ध्यान में रखकर की गई है। अधिकांश अध्यापक विद्यालय से निकले नहीं कि ट्यूशन पढ़ाने दौड़ पड़े। वे प्रातः ५ बजे घर से निकल पड़ते और दस बजे रात थके माँदे घर लौटते हैं भोजन किया और बिस्तर पर जाकर लेट रहे। उन्हें न किसी उत्कृष्ट ग्रंथ का अध्ययन कर ज्ञान-वर्द्धन का अवसर मिलता है और न सामाजिक-सेवा के लिए ही उनके पास समय है। उनकी सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना समुचित रूप में उद्बुद्ध नहीं हो पाती। जिन विद्यालयों में सुगठित-समाज, सुघड़-संस्कृति तथा सबल-राष्ट्र का निर्माण होना चाहिए, वहाँ संकुचित भावना से उत्पन्न झगड़े पनपते हैं। एक उच्च माध्यमिक विद्यालय में मैं गया। मेरे हाथ में 'चतुर्मुख' का आचार्य पं० पद्मसिंह शर्मा स्मृति अंक' और 'डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्र' नामक पुस्तकें भी थीं, किन्तु घोर आश्चर्य ! वहाँ पर विद्यमान किसी अध्यापक की समझ में यह बात नहीं आई कि इन प्रकाशनों का उद्देश्य क्या है ? उन्होंने मुझे सुझाव दिया कि 'चतुर्मुख' को 'सारिका' के अनुरूप बनाया जाय तो उसकी खपत हो सकती है ?

समाज-निर्माण की दृष्टि से अध्यापक का बड़ा महत्त्व है, वह उसका साँचा है। यह समाज के सम्मुख एक समस्या है; जिसका समाधान उसपद के अनुसार अध्यापकों का निर्वाचन करके ही किया जा सकता है। अध्यापकों का सम्मान बढ़ाया जाना चाहिए। उन्हें इतना वेतन दिया जाय कि वे चक्कर में न पड़कर अध्ययन शील और समाज सेवी बनें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कलकत्ते का एक दूसरा पहलू भी। अर्थ लिप्सा, होड़ और कोलाहल के वातावरण में मरूद्यान भी हैं। वेलूर और दक्षिणेश्वरमें आध्यात्मिक शांति मिलती है। कलकत्ते ने स्वामी विवेकानन्द तथा कवीन्द्र रवीन्द्र को दिया है। शिक्षा-संस्थाओं का बाहुल्य है। यहाँ तीन-तीन विश्वविद्यालय हैं। कलकत्ता-विश्वविद्यालय भारत के शिक्षा देने वाले विश्वविद्यालयों में सबसे पुराना है। यहाँ संग्रहालय, जंतुशाला, वनस्पति उद्यान, वैकुण्ठनाथ जी का मंदिर, विक्टोरिया-भवन आदि दर्शनीय स्थान हैं। धर्मतल्ला का खुला स्वच्छ स्थान नामानुकूल रमणीक है। इस क्षेत्र में प्रातः हवाखोरी करने वालों की कमी नहीं रहती। यहीं हिन्दी के दो हितचिंतको श्री सीताराम सेक्सरिया (पद्म भूषण) और श्री भागीरथ कनोड़िया से भेंट हुई। आचार्य पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ने अपने एक पत्र में इन दोनों महानुभावों की चर्चा करते हुए लिखा है कि—"शान्ति-निकेतन का हिन्दीभवन इन्हीं दोनों सज्जनों के प्रयत्न स्वरूप वना है। सेक्सरिया जी डायरी लिखने में सिद्ध हस्त हैं।"

यहाँ से मेरे साथी श्री रामजी राय, शिक्षक, जो कलकत्ता नगर-निगम की शिक्षा-समिति के सदस्य हैं, मुझे श्री राम गोपाल गड़ोदिया के घर ले गए। वहाँ के वातावरण में प्रवेश करते ही भारतीय संस्कृति का मूर्तिमान रूप में दर्शन हुआ। धप की सुगंधि से सुवासित वायु मंडलमें श्री रामचरित मानस और दुर्गा सप्तशती पाठ की मधुर ध्वनि ध्वनित होती हुई साम-गान का स्मरण करा रही थी। गड़ोदिया जी का परिवार सुशिक्षा, आस्था और शिष्टाचार का जीता जागता नमूना है। उनकी बैठक में श्री रामदरबार का एक आकर्षक चित्र और उत्कृष्ट ग्रंथों का संग्रह है। उनका विद्याव्यसनी-स्वभाव, भगवद्भक्ति, सांस्कृतिक निष्ठा और उदार-भावना देख कर मानसिक तुष्टि हुई एवं अनायास यह बोध हुआ—'देवी स्वयं सुकृतिना भवनेषु लक्ष्मी' अर्थात हे देवी तुम सुकृतियों के घर में लक्ष्मी रूप से विराजती हो।

कलकत्ता और उसके उपक्षेत्र में हिन्दी-भाषियों की संख्या विशेष है। ज्ञात हुआ कि कलकत्ते में दस हजार हिन्दी के माध्यम से शिक्षा देने वाले विद्यालय हैं। किन्तु हिन्दी की अच्छी पत्र-पत्रिकाओं का अभाव है। श्री रामजी राय और उनके साथी वहाँ उत्तर-प्रदेशीय समाज संगठन के लिए प्रयत्नशील हैं। इससे भी ऊपर उठकर पूर्वांचलीय हिन्दी भाषा-भाषियों का एक व्यापक संगठन बनाया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाना चाहिए। पूर्वांचल में निवास करने वाले हिन्दी भाषियों की दो सूचियाँ बनाई जायँ एक मूल स्थान अर्थात हिन्दी भाषी क्षेत्र के जिलों के अनुसार और दूसरी पूर्वांचल में प्रवास स्थान के जिले के अनुसार हो। जिलों का भी अन्त-र्विभाग कर लेना उचित होगा। सूची में आयु, शिक्षा, पद-प्रतिष्ठा, व्यवसाय, कार्य आदि का उल्लेख होने के साथ-साथ पूरा पता भी होना चाहिए।

भोजपुरी--समाज, बलिया-प्रवासी-संघ और हिन्दी-सभा, हवड़ा के अधिकारियों ने अपनी--अपनी संस्थाओं के माध्यम से चतुर्मुख के प्रबन्ध संपादक हमारे बन्धु श्री रामनगीना राय जी के साथ हमें जिस प्रकार स्वागत--समारोह पूर्वक सम्मान दिया. उसके लिए हम अपने उन बन्धुओं के अत्यंत आभारी हैं। व्यक्तिगत रूप से भी जिन बन्धुओं ने हमारा आतिथ्य किया और समय देकर हमारा सहयोग किया, हम उनके ऋणी हैं। इस संदर्भ में हम सर्वश्री रामजी राय, रामदत्त राय,शिवकुमार ओझा (मंत्री, बलिया प्रवासी संघ), राजकिशोर सिंह (अध्यक्ष भोजपुरी समाज.) अशोक कुमार सिंह, शिवकुमार सिंह, (मंत्री हवड़ा हिन्दी सभा), चंद्रहास राय, राधामोहन उपाध्याय, तेजबहादुर राय, राजेन्द्र राय, भोलानाथ तिवारी, व्रजविहारी राय, रमेशचन्द्र राय, आचार्य वैजनाथ राय, शिवकुमार राय, कमला प्रसाद राय; ऋषिदेव दुबे आदि बंधुओं के प्रति आभार प्रकट करते हैं।

श्री राम नगीना राय जी ने बीच में धनबाद की भी यात्रा की और वहाँ डी० ए० वी० कालेज के व्यवस्थापक श्री राम बहाल सिंह, श्री अंजनी कुमार सिंह आदि से भेंट की। इस यात्रा में बासुदेवपुर कोइलरी के सर्वश्री रामचीज सिंह पहलवान, सीताराम सिंह, रामायण सिंह, लल्लन सिंह, बब्बन सिंह तथा अनूठा सिंह ने जिस प्रकार स्वागत सत्कार किया, उसके लिए 'चतुर्मुख' परिवार आभारी है। उक्त बंधुओं को धन्यवाद !

★ संपादकाचार्य पं० बनारसी दास चतुर्वेदी की वर्षगाँठ ★

श्रद्धेय पं० बनारसी दास चतुर्वेदी उन महानुभावों में हैं, जो अपनी चिन्ता छोड़ सतत दूसरों की हित-चिन्ता में रत रहे। ऐसे साहित्य महारथी का जन्म २४ दिसम्बर सन् १८९२ को फीरोजाबाद (आगरा) में हुआ। अस्तु २४ दिसम्बर १९७४ ई० से वे अपनी आयु के ८३ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। इस अवसर पर अनेक स्थानों पर उनकी वर्षगांठ मनाई जायेगी। अन्तर जनपदीय परिषद् के तत्त्वावधान में भी बक्सर, बलिया; उजियार, सिकन्दर पुर, लिलकर आदि स्थानों में उनकी वर्षगाँठ मनाई जाती है। अतः उक्त ८३ वीं वर्षगाँठ के अवसर पर हम श्रद्धेय चतुर्वेदी जी के स्वस्थ परमायु की कामना करते हुए, आशा करते हैं कि जनपदीय कार्यकर्त्ता और हिन्दी-सेवी उनसे दीर्घकाल तक-प्रदर्शन [और प्रेरणा पाते रहेंगे। ओ३म्, शांतिः शांतिः शांतिः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चतुर्मुख विकास—बोर्ड कलकत्ता–हवड़ा शाखा

श्री पशुपति राय शर्मा, आदर्श हिन्दी हाई स्कूल, ४ राममय रोड, कलकत्ता
„ शिवकुमार राय, १२, प्राननाथ सूरलेन, कलकत्ता
„ भोलातिवारी, १००/४ काशीपुर रोड कलकत्ता–२
„ रमेशकुमार राय, काशीपुर, २२-१-१६ के० सी० रोड, कलकत्ता–२
„ किसनकुमार राजगढ़िया, १५२ बी० के० पाल एवेन्यू कलकत्ता–२
„ डा० लालमुनि राय, प्रधानाध्यापिका, आदर्श हिन्दी–बालिका–विद्यालय काशीपुर, कलकत्ता-२
„ रामजी राय, १४ बी, काशीपुर रोड, कलकत्ता–२
„ शिवाधर ओझा, प्रधानाध्यापक, रिसड़ा, कलकत्ता विद्यापीठ
„ चन्द्रिका राय, ६६, प्रताप दितिया रोड, कलकत्ता
„ आचार्य बैजनाथ राय, सेन्ट्रल गव० क्वार्टर्स, एफ १/५४, नारिकेलडाँगा, कलकत्ता–५४
„ राजकिशोर सिंह, सम्पादक–सन्मार्ग, कलकत्ता
„ वसन्तकुमार राय, कचरापाड़ा, चौबीस परगना
„ रामनरायण राय „
„ मुरारीलाल गरौदिया, ६ डी, शार्टस्ट्रीट, कलकत्ता–१६
„ कमलाप्रसाद राय, जनता प्रेस, ४२ पथरिया घाट स्ट्रीट, कलकत्ता
„ रमाकन्त उपाध्याय, संम्पादक–सन्मार्ग, कलकत्ता
„ शिवशंकर सिंह, ४८ वन विहारी बोस रोड, हवड़ा
„ रामदत्त राय, ५० रामकृष्ण पुर लेन, हवड़ा
„ डा० शिवमंगल राय, प्र० अ० विक्रम विद्यालय, हवड़ा
„ राधामोहन उपाध्याय, अम्बिका उ० मा० विद्यालय, हवड़ा
„ रामाशीष राय, रामकृष्णपथ, हवड़ा
„ रामावतारराय, हवड़ा
„ राजेश्वर राय, पंजाब लेन, हवड़ा
„ श्यामा सिंह, पंजाब लेन, हवड़ा
„ व्रजविहारी राय, प्रधानाध्यापक, जनता उ० मा० विद्यालय, हवड़ा

प्रकाशक—श्री कुलदीपनारायण राय 'झड़प' लिलकर, बलिया
मुद्रक—तारा प्रिंटिंग प्रेस बलिया, पंजीयन संख्या—१६७८/६३

न्यौछावर शुल्क रु० १२-००

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.